माहनामा

(हिन्दी-माहनामा)

फ़ैज़ाने मदीना

FAIZAN E MADINA

नबम्बर सिने 2021 ईसवी | Trial Edition-8

फ़रमाने अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه :

इल्म के बग़ैर अन्धा और अन्जान दोनों बराबर हैं।

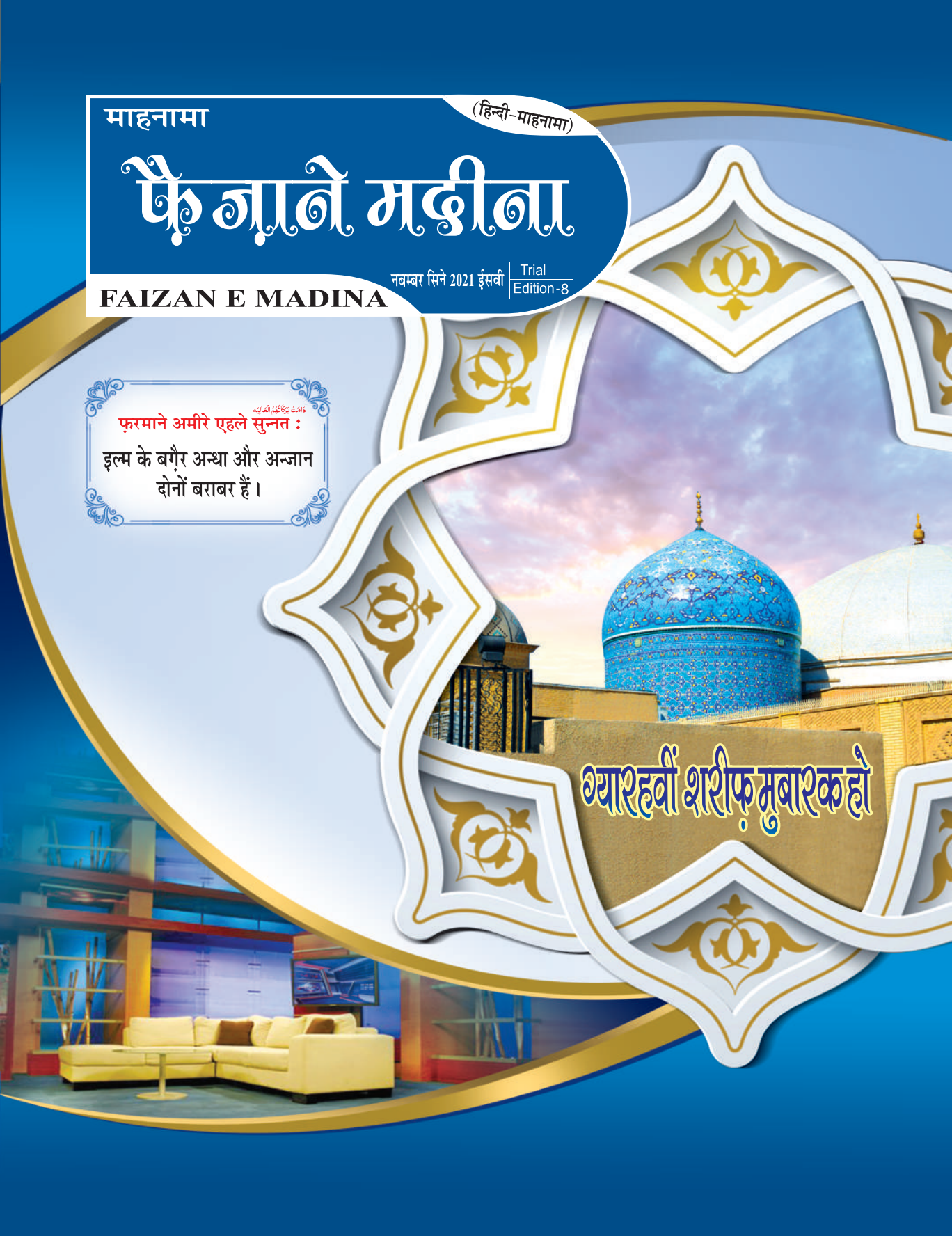

ग्यारहवीं शरीफ़ मुबारक हो

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

Monthly Magazine

FAIZAN E MADINA (HINDI)

नवम्बर सिने 2021 ईसवी | ट्रायल एडिशन-8

बफ़ैज़ाने नज़र: सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह, इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सैयदना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

बफ़ैज़ाने करम: आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर
(अज़ : अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

मुनाजात / मन्क़बत 3

कुरआनो हदीस — निज़ामे काएनात चलाने वाले 4

दुआ़ में क्या मांगें ? 7 | दीदारे रसूल और इस की बरकतें (क़िस्त : 03) 9

फ़ैज़ाने अमीरे एहले सुनत — फ़ातिहा और नियाज़ में फ़र्क़ मअ़ दीगर सवालात 11

दारुल इफ़्ता एहले सुनत — क़र्ज़ पर नफ़्अ़ लेना कैसा ? मअ़ दीगर सवालात 13

मज़ामीन

मर्हूमीन को तक्लीफ़ न दें 15 | शहे सदरे सदारत पे लाखों सलाम 17

बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 20 | अज्र के अम्बार 21

ताजिरों के लिए

अह़कामे तिजारत 23 | क़ुरआन में मज़कूर पेशे (क़िस्त : 02) 25

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत — ह़ज़रते सैयदना क़तादा बिन नोमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ 26

ग़ौसे पाक और एह़या ए दीन 28 | अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए 30

मुतफ़र्रिक़

अरबईन 32 | क़सीदए हुजरए नबविया 34

क़सीदए ग़ौसिया के फ़वाइदो बरकात 36 | अ़ल्लामा बदरुल क़ादरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ की रेह़लत व ताज़ियत 39

सेह़त व तन्दुरुस्ती — नज़र की कमज़ोरी 42

क़ारेईन के सफ़ह़ात — नए लिखारी 44

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

चुग़ली / सफ़ाई का ख़याल रखिए 47 | इस त़रह़ याद कीजिए 48

गाऊं की सैर (क़िस्त : 01) 50 | क्या आप जानते हैं ? 51

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

फ़ैज़ाने औलिया 52 | ह़ज़रते उम्मे बिश्र बिन्ते क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا 53

इस्लाम ने औ़रत को क्या दिया ? 54 | इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 55



तलाशे मआ़श

तलाशे मआ़श के लिए "सूरए इख़्लास" को बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ एक हज़ार एक बार, अव्वल आख़िर सौ सौ मरतबा दुरूद शरीफ़, उ़रूजे माह (सुद-यानी चांद की पेहली से चौदहवीं तारीख़ तक के ज़माने) में पढ़ना निहायत मुअस्सिर है।

(काम के अवराद, स. 4)



हड्डी जोड़ने के लिए

तीन दिन तक सूरए तौबा की आयत नं. 129 अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक एक बार पढ़ कर बार बार दम कीजिए। اِنْ شَآءَاللّٰه طرفل टूटी या फटी हुई हड्डी जुड़ जाएगी। (घरेलू इलाज, स. 84)



गुमशुदा के वापस आने या उस की ख़बर मिलने के लिए

एक बड़े कागज़ के चारों कोनों पर يَاحَقُّ लिख कर आधी रात को या किसी भी वक़्त दोनों हाथों पर रख कर खुले आस्मान तले खड़े हो कर दुआ कीजिए। اِنْ شَآءَاللّٰه طرفل या तो गुमशुदा फ़र्द जल्द वापस आ जाएगा या उस की ख़बर मिल जाएगी। (मुद्दत : ता हुसूले मुराद)

(मेंडक सुवार बिच्छू, स. 21)



ऐसे बुख़ार का रूहानी इलाज जो दवाओं से न जाता हो

अ़मल के दौरान मरीज़ सूती (यानी COTTON के) कपड़े पेहने रहे (केटी या दूसरे मसनूई़-कृत्रिम (Artificial) धागे के बने हुवे कपड़े न हों) अब कोई दुरुस्त कुरआन पढ़ने वाला बा वुज़ू हर बार बिस्मिल्लाह शरीफ़ के साथ ब आवाज़े बुलन्द 21 बार सूरतुल क़द्र इस त़रह़ पढ़े कि मरीज़ सुने, मरीज़ पर दम भी करे और पानी की बोतल पर भी दम करे। मरीज़ वक़्तन फ़ वक़्तन उस में से पानी पीता रहे। येह अ़मल तीन दिन तक मुसल्सल कीजिए اِنْ شَآءَاللّٰه طرفل बुख़ार चला जाएगा।

(बीमार आ़बिद, स. 25)

अ़र्ज़ : माहनामा में किसी त़रह़ की कोई भूल नज़र आए तो इस नम्बर पर राबत़ा फ़रमाएं – 9898732611

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिए नूर होगा। (فردوس الاخبار، 1/422، حدیث:3149)



मनक़बत

पीरों के आप पीर हैं, या ग़ौस अल मदद
एहले सफ़ा के मीर हैं, या ग़ौस अल मदद

रंजो अलम कसीर हैं, या ग़ौस अल मदद
हम आ़जिज़ो असीर हैं, या ग़ौस अल मदद

हम कैसे जी रहे हैं येह तुम से क्या कहें
हम हैं अलम के तीर हैं, या ग़ौस अल मदद

किस दिल से हो बयान बे दादे ज़ालिमां
ज़ालिम बड़े शरीर हैं, या ग़ौस अल मदद

एहले सफ़ा ने पाई है तुम से रहे सफ़ा
सब तुम से मुस्तनीर हैं, या ग़ौस अल मदद

सदक़ा रसूले पाक का झोली में डाल दो
हम क़ादरी फ़क़ीर हैं, या ग़ौस अल मदद

दिल की सुनाए अख़्तर दिल की ज़बान में
केहते येह बेहते नीर हैं, या ग़ौस अल मदद

अज़ : ताजुश्शरीआ़ मुफ़्ती अख़्तर रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه
सफ़ीना ए बख़्शिश, सफ़हा 74

मुनाजात

हमारे दिल से ज़माने के ग़म मिटा या रब
हो मीठे मीठे मदीने का ग़म अ़ता या रब

ग़मे हयात अभी राहतों में ढल जाएं
तेरी अ़ता का इशारा जो हो गया या रब

पए हुसैनो हसन फ़ातिमा अ़ली हैदर
हमारे बिगड़े हुवे काम दे बना या रब

हमारी बिगड़ी हुई आ़दतें निकल जाएं
मिले गुनाहों के अमराज़ से शिफ़ा या रब

गुनाहगार तलबगारे अ़फ़्वो रेहमत है
अ़ज़ाब सेहने का किस में है हौसला या रब

मैं पुल सिरात बिला ख़ौफ़ पार कर लूंगा
तेरे करम का सहारा जो मिल गया या रब

कहीं का आह ! गुनाहों ने अब नहीं छोड़ा
अ़ज़ाबे नार से अ़त्तार को बचा या रब

अज़ : शैख़े तरीक़त अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه
वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम) सफ़हा 76

मुश्किल अलफ़ाज़ के मआ़नी

एहले सफ़ा : नेक लोग। **मीर :** अमीर का मुख़फ़्फ़फ़ (मुख़्तसर), सरदार। **बे दादे ज़ालिमां :** ज़ालिमों के ज़ुल्मो सितम। **रहे सफ़ा :** नेकी की राह। **मुस्तनीर :** रौशनी तलब करने वाले। **नीर :** आंसू।



निज़ामे काएनात चलाने वाले

मुफ़्ती मुहम्मद क़ासिम अ़त्तारी

इरशादे बारी तआ़ला है :

﴿وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ(۱) وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ(۲) وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ(۳) فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ(۴) فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ(۵)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : सख़्ती से जान खींचने वालों की क़सम और नर्मी से बन्द खोलने वालों की और आसानी से तैरने वालों की, फिर आगे बढ़ने वालों की, फिर काएनात का निज़ाम चलाने वालों की (ऐ काफ़िरो ! तुम पर क़ियामत ज़रूर आएगी) । (پ30، النّٰزعٰت:1تا5)

तफ़्सीर : इन आयात में पांच क़िस्म की जमाअ़तों को बयान किया गया है । जमहूर उ़लमा ओ मुफ़स्सिरीन का क़ौल येह है कि येह सब फ़रिश्तों की जुदा जुदा जमाअ़तें हैं या कुछ फ़रिश्तों की जमाअ़तें हैं और कुछ तमाम फ़रिश्तों के औसाफ़ हैं : ﴿وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ﴾ से मुराद सख़्ती से रूह़ निकालने वाले फ़रिश्ते, ﴿وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ﴾ से मुराद नर्मी से मोमिनों की रूह़ निकालने वाले फ़रिश्ते, ﴿وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ﴾ से मुराद मोमिनों की रूहें ले कर आस्मान में तैरने वाले फ़रिश्ते, ﴿فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ﴾ से मुराद हुक्मे इलाही की तामील में आगे बढ़ने वाले फ़रिश्ते और ﴿فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ﴾ से मुराद काएनात का निज़ाम चलाने वाले फ़रिश्ते ।

ख़ुलासए आयात येह है कि उन फ़रिश्तों की क़सम ! जो काफ़िरों के जिस्मों से उन की रूह़ सख़्ती से खींच कर निकालते हैं और उन फ़रिश्तों की क़सम ! जो मोमिनों के जिस्मों से उन की रूहें नर्मी से क़ब्ज़ करते हैं और उन फ़रिश्तों की क़सम ! जो मोमिनीन की रूहें ले कर ज़मीन और आस्मान के दरमियान आसानी से तैरते हैं, फिर उन फ़रिश्तों की क़सम ! जो अपने मुक़र्रर कर्दा काम पर जल्द पहुंचते हैं, फिर उन फ़रिश्तों की क़सम ! जो दुन्या के कामों का निज़ाम चलाते हैं । इन तमाम क़समों के साथ मेह़ज़ूफ़ जवाबे क़सम येह है कि ऐ कुफ़्फ़ारे मक्का ! तुम ज़रूर दोबारा ज़िन्दा किए जाओगे और ज़रूर तुम से तुम्हारे आमाल का हिसाब लिया जाएगा । (بغوی، النّٰزعٰت، تحت الآیۃ:5، 4/411)

हर काम वसीले के ज़रीए होना अल्लाह तआ़ला का क़ानून है : अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत तो येह है कि हर छोटा बड़ा काम किसी वसीले के बग़ैर ख़ुद उसी के हुक्म से हो जाए, क्यूंकि उस की शान है : ﴿اِنَّمَاۤ اَمْرُهٗۤ اِذَاۤ اَرَادَ شَیْــٴًـا اَنْ یَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ۝﴾ **तर्जमा :** उस का काम तो येही है कि जब किसी चीज़ का इरादा फ़रमाता है तो उस से फ़रमाता है : "हो जा" तो वोह चीज़ हो जाती है । (پ23، یٰسٓ:82) उस की शान है ﴿اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۙ﴾ **तर्जमा :** बेशक **अल्लाह** हर शै पर क़ादिर है । (پ1، البقرۃ:20) उस की शान है ﴿فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ ۝﴾ **तर्जमा :** (हमेशा) जो चाहे करने वाला है । (پ30، البروج:16) उस की शान है : ﴿لَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ فِی الْمُلْكِ وَ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ﴾ **तर्जमा :** बादशाही में उस का कोई शरीक नहीं और येह (भी) नहीं कि कमज़ोरी की वज्ह से उस का कोई मददगार

हो । (پ15، بنی اسرائیل:111) इस तमाम अ़ज़्मतो कुदरत के बा वुजूद उस का क़ानून येह है कि काम वसीले से हो, इसी लिए दुन्या का हर काम, निज़ामे काएनात चलाने पर मुक़र्रर फ़रिश्तों के सिपुर्द है।

आयत से मालूम हुवा कि बाज़ सिफ़ात **अल्लाह** तआ़ला और मख़्लूक़ के दरमियान लफ़्ज़ी तौ़र पर मुश्तरक हैं, जैसे "अ़ली, समीअ़, बसीर"। उन्हीं में से तदबीरे काएनात भी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी काएनात के कामों की ह़क़ीक़तन तदबीर फ़रमाने वाला है और फ़रिश्ते भी मुदब्बिराते अम्र यानी कामों की तदबीर करने वाले हैं, चुनान्चे, फ़रिश्तों के तदबीरे उमूर के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने मजीद में ब कसरत आयात हैं।

चन्द आयात मुलाह़ज़ा फ़रमाएं :

कुछ फ़रिश्ते अल्लाह का अ़र्श उठाए हुवे हैं, फ़रमाया : ﴿وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ﴿۱۷﴾﴾ **तर्जमा :** और उस दिन आठ फ़रिश्ते तुम्हारे रब का अ़र्श अपने ऊपर उठाएंगे। (پ29، الحاقۃ:17) **कुछ फ़रिश्तों के ज़रीए वह़ी उतरती है :** ﴿يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ﴿۲﴾﴾ **तर्जमा :** अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उस पर फ़रिश्तों को अपने हुक्म से रूह़ यानी वह़ी के साथ नाज़िल फ़रमाता है कि तुम डर सुनाओ कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं तो मुझ से डरो। (پ14، النحل:2) **कुछ फ़रिश्ते नामए आमाल लिखते हैं, फ़रमाया :** ﴿وَ اِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿۱۰﴾ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ﴿۱۱﴾ يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۱۲﴾﴾ **तर्जमा :** और बेशक तुम पर ज़रूर कुछ निगेहबान मुक़र्रर हैं। मुअ़ज़्ज़ज़ लिखने वाले। वोह जानते हैं जो कुछ तुम करते हो। (پ30، الانفطار:10تا12) **कुछ फ़रिश्ते निगेहबानी करते हैं,** फ़रमाया : ﴿وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً﴾ **तर्जमा :** और वोह (अल्लाह) तुम पर निगेहबान (फ़रिश्ते) भेजता है। (پ7، الانعام:61) और फ़रमाया : ﴿لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ﴾ तर्जमा : आदमी के लिए इस के आगे और इस के पीछे बदल बदल कर बारी बारी आने वाले फ़रिश्ते हैं जो **अल्लाह** के हुक्म से उस की निगेहबानी करते हैं। (پ13، الرعد:11) **कुछ फ़रिश्ते रूहें क़ब्ज़ करते हैं,** फ़रमाया : ﴿حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿۶۱﴾﴾ तर्जमा : यहां तक कि जब तुम में किसी को मौत आती है तो हमारे फ़रिश्ते उस की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं और वोह कोई कोताही नहीं करते। (پ7، الانعام:61) और फ़रमाया : ﴿قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾﴾ **तर्जमा :** तुम फ़रमाओ : तुम्हें मौत का फ़रिश्ता वफ़ात देता है जो तुम पर मुक़र्रर है फिर तुम अपने रब की त़रफ़ वापस किए जाओगे। (پ21، السجدۃ:11) **फ़रिश्ते एहले ईमान की मदद के लिए भी उतरते हैं :** ﴿يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا﴾ **तर्जमा :** ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** का एह़सान अपने ऊपर याद करो जब तुम पर कुछ लश्कर आए तो हम ने उन पर आंधी और वोह लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए। (پ21، الاحزاب:9) **और फ़रिश्ते काफ़िरों पर अ़ज़ाबे इलाही भी उतारते हैं,** चुनान्चे फ़रमाया : ﴿وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ ﴿۷۷﴾﴾ **तर्जमा :** और जब लूत़ के पास हमारे फ़रिश्ते आए तो उन की वज्ह से लूत़ ग़मगीन हुवे और उन का दिल तंग हुवा और फ़रमाने लगे येह बड़ा सख़्त दिन है। (پ12، ھود:77)

चन्द अहम बातें :

1 येह चन्द आयात ज़िक्र की गई हैं, इस त़रह़ की कसीर आयात और सेंकड़ों अह़ादीस मौजूद हैं, जिन में फ़रिश्तों के निज़ामे काएनात चलाने का तज़किरा है। येह **अल्लाह** तआ़ला की अ़ज़ीम कुदरत की अ़लामात हैं। कुरआने मजीद से मालूम हुवा है कि बन्दगाने ख़ुदा के इख़्तियारात का दाइरा बहुत वसीअ़ है और ख़ुदा के इजाज़त याफ़्ता बन्दों के लिए अगर काएनात में वसीअ़ तसर्रुफ़ात का अ़क़ीदा रखा जाए, तो येह बिल्कुल दुरुस्त और कुरआनो ह़दीस के मुत़ाबिक़ है।

2 काएनात में तसर्रुफ़ का इख़्तियार **अल्लाह** तआ़ला ने सिर्फ़ फ़रिश्तों ही को नहीं दिया, बल्कि इन्सानों में भी मक़्बूल बन्दों को अ़त़ा किया है जैसे अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को बहुत त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई, चुनान्चे, ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام

के तसर्रुफ़ात के बारे में कुरआने मजीद में है : ﴿وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّیْنِ كَهَیْـَٔةِ الطَّیْرِ بِاِذْنِیْ فَتَنْفُخُ فِیْهَا فَتَكُوْنُ طَیْرًۢا بِاِذْنِیْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِیْ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِیْ﴾

तर्जमा : जब तू मेरे हुक्म से मिट्टी से परिन्दे जैसी सूरत बना कर उस में फूंक मारता था तो वोह मेरे हुक्म से परिन्दा बन जाती और तू मेरे हुक्म से पैदाइशी नाबीना और सफ़ेद दाग़ के मरीज़ को शिफ़ा देता था और जब तू मेरे हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा कर के निकालता। (پ7، المآئدۃ:110) अम्बिया عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के उन तसर्रुफ़ात को मोजिज़ा कहा जाता है।

3 काएनात में तसर्रुफ़ात का इख़्तियार अल्लाह तआ़ला ने औलिया को भी अ़ता फ़रमाया है, चुनान्चे, कुरआने मजीद में है :

﴿قَالَ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَؤُا اَیُّكُمْ یَاْتِیْنِیْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ یَّاْتُوْنِیْ مُسْلِمِیْنَ ۝ قَالَ عِفْرِیْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّیْ عَلَیْهِ لَقَوِیٌّ اَمِیْنٌ ۝ قَالَ الَّذِیْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِیْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ یَّرْتَدَّ اِلَیْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّیْ ۫ لِیَبْلُوَنِیْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ﴾

तर्जमा : सुलैमान ने फ़रमाया : ऐ दरबारियो ! तुम में कौन है जो उन के मेरे पास फ़रमां बरदार हो कर आने से पेहले उस का तख़्त मेरे पास ले आए। एक बड़ा ख़बीस जिन्न बोला कि मैं वोह तख़्त आप की ख़िदमत में आप के इस मक़ाम से खड़े होने से पेहले हाज़िर कर दूंगा और मैं बेशक इस पर कुव्वत रखने वाला, अमानतदार हूं। उस ने अ़र्ज़ की जिस के पास किताब का इल्म था कि मैं इसे आप की बारगाह में आप के पलक झपकने से पेहले ले आऊंगा (चुनान्चे) फिर जब सुलैमान ने उस तख़्त को अपने पास रखा हुवा देखा तो फ़रमाया : येह मेरे रब के फ़ज़्ल से है ताकि वोह मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या नाशुक्री ? (پ19، النمل:38تا40)

दुआ : अल्लाह तआ़ला हमें कुरआनो ह़दीस के मुताबिक़ अ़क़ीदा रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

दुआ ए अ़त्तार पर मदनी रसाइल के मुताल़ए की धूम

शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम 1442 हि. और मुह़र्रमुल ह़राम 1443 हि. में दर्जे ज़ैल मदनी रसाइल पढने-सुनने की तरग़ीब दिलाई और पढ़ने / सुनने वालों को अपनी पुर ख़ुलूस दुआओं से भी नवाज़ा : 1 या अल्लाह करीम ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "6 मुर्दों के वाक़िआ़त" पढ़ या सुन ले उसे रिज़्क़े ह़लाल खाने और बच्चों को भी ह़लाल खिलाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और उस पर जहन्नम की आग ह़राम कर दे। आमीन 2 या अल्लाह पाक ! जो कोई 35 सफ़ह़ात का रिसाला "फ़ैज़ाने एहले बैत" पढ़ या सुन ले उसे और उस की आने वाली नस्लों को एहले बैते किराम की सच्ची ग़ुलामी नसीब फ़रमा और उस की बे ह़िसाब मग़फ़िरत कर। आमीन 3 या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "इमामे ह़ुसैन के वाक़िआ़त" पढ़ या सुन ले उसे ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन की मुबारक सीरत पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता कर और जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा। आमीन 4 या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "जूए में जीता हुवा माल" पढ़ या सुन ले उसे और उस की आने वाली नस्लों को "जूए" से मेह़फ़ूज़ फ़रमा कर रिज़्क़े ह़लाल पर क़नाअ़त इनायत फ़रमा और अपने सिवा किसी का मोह़ताज न कर। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रिसाला	पढ़ने-सुनने वाले इस्लामी भाई	इस्लामी बहनें	कुल तादाद
6 मुर्दों के वाक़िआ़त	21 लाख 95 हज़ार 794	7 लाख 61 हज़ार 765	29 लाख 57 हज़ार 559
फ़ैज़ाने एहले बैत	22 लाख 84 हज़ार 658	8 लाख 6 सौ 51	30 लाख 85 हज़ार 309
इमामे ह़ुसैन के वाक़िआ़त	22 लाख 45 हज़ार 177	8 लाख 25 हज़ार 292	30 लाख 70 हज़ार 469
जूए में जीता हुवा माल	22 लाख 10 हज़ार 47	8 लाख 90 हज़ार 765	31 लाख 8 सौ 12

दुआ में क्या मांगें ?



मौलाना मुहम्मद नासिर जमाल अत्तारी मदनी

अल्लाह पाक से रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ मांगते :

اَللّٰهُمَّ اَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِي الْاُمُوْرِ كُلِّهَا وَاَجِرْنَا مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْاٰخِرَةِ

यानी ऐ **अल्लाह** ! हमारे तमाम उमूर में हमारे अन्जाम को अच्छा कर दे और हमें दुन्या की रुस्वाई और आख़ेरत के अ़ज़ाब से पनाह में रखना ।[1]

अल्लाह पाक से भलाई मांगने को "दुआ" केहते हैं । **अल्लाह** पाक ने कुरआने करीम में दुआ करने का हुक्म भी दिया है और दुआ क़बूल करने की ख़ुश ख़बरी भी सुनाई है ।[2] नीज़ येह भी इरशादे रब्बानी है : ऐ इब्ने आदम ! अगर तू मुझ से मांगेगा तो मैं तुझे दूंगा और तू मुझ से नहीं मांगेगा तो मैं तुझ पर ग़ज़ब फ़रमाऊंगा ।[3]

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ की अहमियत यूं बयान फ़रमाई है : اَلدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ यानी दुआ इबादत का मग़्ज़ है ।[4] एक मौक़ेअ़ पर येह भी इरशाद फ़रमाया : اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ وَعِمَادُ الدِّيْنِ وَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ यानी दुआ मोमिन का हथियार, दीन का सुतून और आस्मान व ज़मीन का नूर है ।[5]

दुआ में क्या मांगा जाए ?

इस सिलसिले में **अल्लाह** पाक के आख़री नबी हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** से उस का फ़ज़्ल मांगो कि **अल्लाह** को "मांगना" पसन्द है ।[6]

रेहमते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने "फ़ज़्ले इलाही" पर मुश्तमिल बहुत सी जामेअ़ दुआएं हमें सिखाई हैं, इन्ही में से एक दुआ आ़फ़ियत मांगने की तरग़ीब पर मुश्तमिल मज़्कूरा हदीस में ज़िक्र की गई है ।

शुरूअ़ में हदीसे पाक में तमाम कामों में हुस्ने इख़्तेताम तलब करने के साथ दुन्या की रुस्वाई और अ़ज़ाबे आख़ेरत से पनाह की दुआ मांगी गई है । तमाम कामों में हुस्ने इख़्तेताम से मुराद येह है कि हमारे हर अ़मल का नतीजा अच्छा हो और दुन्या की रुस्वाई से मुराद मुसीबत, ग़ुरूर, धोके और दुश्मन के तसल्लुत से पनाह है ।[7]

इन तीन दुआओं की तफ़्सील मुलाहज़ा कीजिए :

1 तमाम जाइज़ कामों में हुस्ने इख़्तेताम :

येह बात ज़ेहन में रखिए कि अच्छे काम का नतीजा हसीन जब कि बुरे काम का नतीजा भयानक निकलता है लेहाज़ा बुरा कर के अच्छे की उम्मीद रखना अ़क़्ल मन्दी नहीं । बसा अवक़ात येह भी होता है कि इन्सान काम तो अच्छा शुरूअ़ कर देता है मगर नतीजा ख़राब निकलता है और जब वोह इस ख़राबी की ज़ाहिरी वुजूहात खोजने जाता है तो इस काम में बद निय्यती, मुस्तक़िल मिज़ाजी की कमी, ला परवाही, सुस्ती व काहिली की वज्ह से होने वाली कोताहियां बतौ़रे सुबूत के सामने आती हैं लेकिन जब बन्दा अपने अच्छे काम के लिए अपने रब से यूं हम कलाम होता है तो रेहमते इलाही

से उस की उम्मीदें बन्ध जाती हैं, अल्लाह पाक भी अपने बन्दे पर करम नवाज़ी फ़रमाता है और बतौरे इन्आम उस की कोशिश का अच्छा रिज़ल्ट अ़ता फ़रमा देता है। ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर वोह बज़ाहिर नाकाम भी हो जाए तो रेह़मते इलाही उस के लिए सहारा फ़राहम करती है, उस के टूटे दिल को ह़ौसला मुहय्या करती है उसे नए अ़ज़्म के साथ दोबारा अपने मक़्सद को पाने के लिए उभारती है इस तमाम मरह़ले में रब से तअ़ल्लुक़ बाक़ी रखना और ज़बान पर नाशुक्री के कलेमात न लाना और दुआ़ करते रेहना भी ज़रूरी है। रब्बे करीम ने ह़दीसे क़ुदसी में दुआ़ मांगने वालों को ह़ौसला देते हुवे इरशाद फ़रमाया : اَنَا مَعَہٗ، اِذَا دَعَانِ यानी बन्दा जब मुझ से दुआ़ करे तो मैं उस के साथ हूं।[8]

2 दुन्या की रुस्वाई से पनाह :

हर कोई इ़ज़्ज़त की ज़िन्दगी जीना चाहता है और ज़िल्लत व रुस्वाई से बचने की कोशिश करता है, अपने त़ौर पर वोह एह़तियात़ करता है मगर येह सब इन्सानी तदाबीर हैं जिन से बेहतर नताइज ह़ासिल करने के लिए रब्बे करीम की करम नवाज़ी शामिले ह़ाल होना ज़रूरी है और रेह़मते इलाही को अपनी त़रफ़ मुतवज्जेह करने का एक ज़रीआ़ दुआ़ है लेहाज़ा ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस ह़दीस में हम को ज़िल्लत व रुस्वाई से बचने की दुआ़ मांगने की तालीम दी है।

3 अ़ज़ाबे आख़ेरत से पनाह :

अ़ज़ाबे आख़ेरत से पनाह मांगना कितना अहम है ? इसे समझने के लिए अह़ादीसे मुबारका में बयान कर्दा अ़ज़ाबात मुलाह़ज़ा कीजिए : 1 रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन्सानों की आग जिसे वोह जलाते हैं जहन्नम की आग के सत्तर अज्ज़ा (यानी ह़िस्सों) में से एक जुज़ है। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! (अ़ज़ाब के लिए तो) येह दुन्यावी आग ही बहुत थी। नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जहन्नम की आग में दुन्यावी आग की मिस्ल उनहत्तर (69) फ़ीसद इज़ाफ़ा किया गया है और हर फ़ीसद की गर्मी इस के बराबर है।[9] 2 जहन्नमियों के सरों पर खौलता हुवा पानी डाला जाएगा तो वोह खोपड़ी को चीरता हुवा पेट तक पहुंच जाएगा और पेट के अन्दर का सब कुछ काट कर क़दमों से निकल आएगा, यही सहर (यानी गल जाना) है। और बार बार यूंही किया जाएगा।[10] 3 एक बहुत बड़ी चट्टान जहन्नम के किनारे से फेंकी जाए तो वोह उस में सत्तर बरस तक गिरती चली जाएगी फिर भी उस की तेह तक न पहुंच सकेगी। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : जहन्नम का ज़िक्र कसरत से करो क्यूंकि उस की गर्मी शदीद है, उस की गेहराई बहुत ज़्यादा है और उस के गुर्ज़ (यानी हथोड़े) लोहे के हैं।[11] 4 जहन्नम में बुख़्ती ऊंटों की गर्दनों की मिस्ल सांप हैं उन में से कोई भी सांप एक मरतबा जहन्नमी को डसेगा तो वोह उस की गर्मी चालीस साल तक मेह़सूस करेगा, यूंही जहन्नम में ख़च्चर की गर्दन के बराबर बिच्छू हैं उन में से कोई भी बिच्छू जहन्नमी को डंक मारेगा तो वोह उस की गर्मी चालीस साल तक मेह़सूस करेगा।[12] 5 जहन्नमियों पर रोना मुसल्लत़ किया जाएगा तो वोह इतना रोएंगे कि उन के आंसू ख़त्म हो जाएंगे, फिर वोह ख़ून के आंसू रोएंगे ह़त्ताकि उन के चेहरों में लम्बे गढ़े बन जाएंगे, अगर उन में कश्तियों को छोड़ा जाए तो ज़रूर चलने लगें।[13] 6 जहन्नमियों में जिसे सब से हल्का अ़ज़ाब होगा उस के आग के जूते और तस्मे होंगे, जिस से उस का दिमाग़ यूं खौलता होगा जैसा कि हंडिया खोलती है, वोह समझेगा मुझे ही सब से सख़्त अ़ज़ाब हो रहा है ह़ालांकि उसे सब से हल्का अ़ज़ाब हो रहा होगा।[14]

लेहाज़ा दुन्या में उन तमाम कामों से बचिए जो आख़ेरत के अ़ज़ाब का सबब बनें और येह दुआ़ मांगने का भी मामूल बनाइए।

---

(1) مسند احمد، 6/196، حدیث: 17645 (2) پ2، البقرۃ: 186، پ24، المؤمن: 60 (3) الدعا للطبرانی، ص29، حدیث: 24 (4) ترمذی، 5/243، حدیث: 3382 (5) مستدرک حاکم، 2/162، حدیث: 1855 (6) ترمذی، 5/333، حدیث: 3582 (7) التیسیر شرح جامع الصغیر، 1/207 (8) مسلم، ص1442، حدیث: 2675 (9) بخاری، 2/396، حدیث: 3265 (10) ترمذی، 4/262، حدیث: 2591 (11) ترمذی، 4/260، حدیث: 2584 (12) مسند احمد، 6/216، حدیث: 17729 (13) ابن ماجہ، 4/531، حدیث: 4324 (14) مسلم، ص111، حدیث: 517۔



दीदारे रसूल صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

(क़िस्त : 03)

और इस की बरकतें

मौलाना मुह़म्मद अ़दनान चिश्ती अ़त्तारी मदनी

हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दीदार की भी क्या बात है । बे शुमार औलिया व सुलह़ा वोह हैं कि जिन्हों ने ख़्वाब में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरफ़ पाया, अगर उन तमाम वाक़िआ़त को जम्अ़ किया जाए तो कई जिल्दों पर मुश्तमिल किताब तैयार हो सकती है । यूं तो बे शुमार अफ़राद अन गिनत ख़्वाब देखते ही रेहते हैं लेकिन क़ुरबान जाइए मुस्त़फ़ा जाने रेह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर कि उन का ख़्वाब में तशरीफ़ लाना भी कैसा बा कमाल है कि अ़क़्ल दंग रेह जाए । किसी को ख़्वाब में रुख़्सार (गाल) पर बोसा दें तो ह़क़ीक़त में न सिर्फ़ गाल को मेहका दें बल्कि पूरे के पूरे घर को अपनी मुबारक ख़ुश्बू से इ़त्रदान बना दें जैसा कि ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सईद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर रुख़्सार पर बोसा दिया जिस से उन की आंख खुल गई, उन की एहलिया भी जाग उठीं, उस वक़्त सारा घर मुश्क की ख़ुश्बू से महेक रहा था और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बोसे की बरकत से उन का रुख़्सार भी आठ दिन तक ख़ुश्बू से महेकता रहा ।[1]

नाबीना को बीनाई अ़त़ा फ़रमा दी : उन का ख़्वाब में जल्वा अफ़रोज़ होना भी कैसा मुश्किल कुशाई करता है कि बसा अवक़ात नाबीना को बीनाई अ़त़ा फ़रमा देते हैं जैसा कि जलीलुल क़द्र इमाम व मुह़द्दिस ह़ज़रते याक़ूब बिन सुफ़्यान फ़सवी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने त़लबे ह़दीस के लिए कई शेहरों का सफ़र किया । एक बार मेरी मुलाक़ात एक शैख़ से हुई, मैं उन के पास रेहना चाहता था ताकि ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेफ़ादा कर सकूं । मेरे पास नफ़्क़ा क़लील (यानी ख़र्चा कम) था नीज़ मैं मुसाफ़िर भी था, इस लिए हमेशा रात में तेह़रीरी काम किया करता और दिन में शैख़ को सुना देता । मैं एक रात ह़स्बे मामूल लिख रहा था ह़ालांकि रात काफ़ी गुज़र चुकी थी अचानक मेरी आंखों में पानी उतर आया और मेरी बीनाई जाती रही । मुझे मेरा चराग़ और घर कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था । मैं अपनी बीनाई और ह़ुसूले इ़ल्म की नेमत से मेह़रूमी पर ज़ारो क़ित़ार रोने लगा । आख़िरे कार रोते रोते मैं ने एक जानिब टेक लगाई तो मेरी आंख लग गई । मैं ने ख़्वाब में अपने प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरफ़ पाया । रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ याक़ूब बिन सुफ़्यान ! क्यूं रो रहे हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी बीनाई चली गई, मुझे इस बात पर अफ़्सोस है कि ग़रीबुल वत़न हूं, आप की अह़ादीस लिखने की नेमत से मेह़रूम हो गया हूं । नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "क़रीब आओ", मैं क़रीब हो गया । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी आंखों पर अपना दस्ते रेह़मत यूं फेरा जैसे कुछ दम फ़रमा रहे हों । ह़ज़रते याक़ूब बिन सुफ़्यान फ़स्वी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : फिर मैं बेदार हुवा तो मेरी आंखें रौशन हो चुकी थीं और मुझे सब कुछ नज़र आ रहा था । पस मैं ने फ़ौरन अपना नुस्ख़ा उठाया और चराग़ की रौशनी में अह़ादीस लिखना शुरूअ़ कर दीं ।[2]

आप की मेहमान नवाज़ी मरह़बा : किसी भूके के ख़्वाब में तशरीफ़ लाएं तो आ़लमे रूया में ही ऐसी नाने तर (यानी ताज़ा रोटी) अ़त़ा फ़रमाईं कि जो खा ली सो खा ली और जो बच गई वोह हाथ में मौजूद पाई जैसा कि जलीलुल क़द्र आ़रिफ़ व इमाम, शैख़े शाम, अबू अ़ब्दुल्लाह अह़मद बिन यह़या इब्नुल जला رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (वफ़ात : 306 हिजरी) फ़रमाते हैं : मैं मदीनए मुनव्वरा زادھا اللہُ شرفاً وّ تعظیماً में ह़ाज़िर हुवा तो मुझ पर फ़ाक़े गुज़रे । मैं अपने प्यारे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार पर ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : اَنَا ضَیْفُکَ यानी मैं आप का मेहमान हूं । फिर मुझ पर नींद का ग़ल्बा हुवा, मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा, आप ने मुझे एक रोटी इनायत फ़रमाई । मैं ख़्वाब में ही खाने लगा,

अभी आधी ही खाई थी कि आंख खुल गई और बाक़ी आधी रोटी अभी मेरे हाथ में मौजूद थी।[3]

मदीने की दावत : ह़ज़रते सैयदना बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिन दिनों मुल्के शाम में रहा करते थे आप को एक दिन ख़्वाब में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई तो आक़ा ए करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَا هٰذِهِ الْجَفْوَةُ يَا بِلَال "ऐ बिलाल ! येह क्या जफ़ा है ? तुम हम से मुलाक़ात करने नहीं आते ?" ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेदार हो गए । आप ने फ़ौरन रख़्ते सफ़र बांधा और **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़री के लिए रवाना हो गए।[4]

ह़ज़रते इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन मूसा मालिकी (वफ़ात : 683 हिजरी) ने अपनी ईमान अफ़रोज़ किताब مِصْبَاحُ الظَّلَامِ فِی الْمُسْتَغِیْثِیْنَ بِخَیْرِ الْاَنَامِ فِی الْیَقْظَةِ وَالْمَنَام में और ह़ज़रते इमाम यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने شَوَاهِدُ الْحَق فِی الْاِسْتِغَاثَةِ بِسَیِّدِ الْخَلْق में ऐसे कई वाक़िआ़त ज़िक्र फ़रमाए हैं ।

मूए मुबारक ख़ुद अ़ता फ़रमाए : ह़ज़रते शाह अ़ब्दुर्रह़ीम देहल्वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मुझे बुख़ार हो गया, बीमारी ने ऐसा तूल पकड़ा कि मैं ज़िन्दगी से ना उम्मीद हो गया । एक दिन मुझे ऊंघ आ गई । उस ग़ुनूदगी में एक बुज़ुर्ग ज़ाहिर हुवे और फ़रमाया : बेटा ! नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हारी इ़यादत के लिए तशरीफ़ लाने वाले हैं शायद उसी त़रफ़ से तशरीफ़ लाएं जिस त़रफ़ तुम्हारे पाउं हैं, लेहाज़ा चारपाई का रुख़ बदल लो । इतने में मुझे कुछ इफ़ाक़ा हुवा, बात करने की हिम्मत तो न थी मगर मैं ने ह़ाज़िरीन को इशारे से समझाया और उन्हों ने मेरी चारपाई फेर दी, उसी वक़्त नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए, लबहाए मुबारक की जुम्बीश से जो अल्फ़ाज़ तरतीब पाए वोह यूं थे : "كَيْفَ حَالُكَ يَا بُنَيَّ" बेटा ! तुम्हारा क्या ह़ाल है ? इस इरशादे गिरामी की ह़लावत (मिठास) मुझ पर ऐसी ग़ालिब आई कि मुझे वज्द आ गया, मेरी आंखों से आंसू रवां हो गए । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इस त़रह़ गोद में ले लिया कि आप की रीश (दाढ़ी) मुबारक मेरे सर पर थी, आप की क़मीस मुबारक मेरे आंसूओं से तर हो गई, कुछ देर बाद मेरी येह ह़ालत सुकून में तब्दील हो गई, मेरे दिल में ख़याल आया कि एक अ़र्से से मुझे मूए मुबारक (मुबारक बाल) की आरज़ू है कि कहीं से मिल जाए, कितना करम होगा अगर आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे येह दौलत इ़नायत फ़रमा दें, बस येह ख़याल आना था कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस ख़याल से वाक़िफ़ हो गए, रीश (दाढ़ी) मुबारक पर हाथ फेरा और दो मूए मुबारक मेरे हाथ में पकड़ा दिए, मेरे दिल में बात आई कि येह दोनों बाल बेदारी में मेरे पास रहेंगे या नहीं ? आप इस ख़याल से भी वाक़िफ़ हो गए, फ़रमाया येह दोनों बाल उस आ़लम में भी बाक़ी रहेंगे फिर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे सेह़ते कुल्ली और त़वील ज़िन्दगी की बिशारत दी, मुझे उसी वक़्त आराम आ गया, मैं ने चराग़ मंगवाया और देखा तो मेरे हाथ में दोनों मूए मुबारक न थे, मैं ने ग़मगीन हो कर फिर आक़ा ए दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जनाब में तवज्जोह की । मुझ पर ग़ुनूदगी त़ारी हुई और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से फ़रमाने लगे : मेरे बेटे ! मैं ने वोह दोनों बाल एह़तियात़ के त़ौर पर तुम्हारे तकिये के नीचे मेह़फ़ूज़ कर दिए हैं, मैं ने बेदार होते ही उन्हें ले लिया और एक पाकीज़ा जगह में निहायत ताज़ीमो तकरीम के साथ मेह़फ़ूज़ कर लिए, इस के बाद बुख़ार तो जाता रहा मगर कमज़ोरी ग़ालिब आ गई, ह़ाज़िरीन ने समझा शायद मौत का वक़्त आ गया और वोह रोने लगे, कुछ अ़र्से बाद मुझे क़ुव्वत ह़ासिल हो गई और मैं तन्दुरुस्त हो गया।[5]

ह़कीमुल उम्मत की हौसला अफ़्ज़ाई : ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अपने आक़ा ओ मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से बे पनाह अ़क़ीदत व मह़ब्बत थी । उन पर ख़्वाब में जो इ़नायत हुई वोह देखिए : मन्क़ूल है कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब अपनी किताब "अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर एक नज़र" तालीफ़ फ़रमा चुके तो रात को दीदारे मुस्त़फ़ा से मुशर्रफ़ हुवे । नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लबहा ए मुबारका से रेह़मत के फूल कुछ यूं झड़ने लगे : तुम ने मेरे सह़ाबी (यानी ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया) की इ़ज़्ज़त बचाने की कोशिश की है, **अल्लाह** तुम्हारी इ़ज़्ज़त बचाएगा।[6]

अल्लाह करीम हर आ़शिके रसूल को ज़ियारते सैयदे काएनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तोह़फ़े से नवाज़े ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1)القول البدیع، ص281 (2)سیر اعلام النبلاء، 10/552، تہذیب الکمال، 32/332 (3)مصباح الظلام، ص 61 (4)اسد الغابۃ، 1/307 ملخصًا (5)انفاس العارفین، ص74 (6)حالاتِ زندگی حکیم الاُمّت، حیاتِ سالک، ص127 ملخصًا۔



मदनी मुज़ाकरे

के सवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त अमीरे एहले सुन्नत, बानी ए दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इबादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किए जाने वाले सवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, इन में से 8 सवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किए जा रहे हैं :

1 नाराज़ी की ह़ालत में वालिदैन का इन्तेक़ाल हो जाए तो...?

सवाल : अगर औलाद ने अपने वालिदैन में से किसी एक के साथ रूठने वाला अन्दाज़ इख़्तियार किया और इस दौरान उन का इन्तेक़ाल हो गया तो अब औलाद को क्या करना चाहिए ?

जवाब : ऐसी सूरत में औलाद वोही काम करे जिस का शरीअ़त ने हुक्म दिया है । उन की तजहीज़ो तक्फ़ीन का इन्तेज़ाम, ख़ूब दुआ ए मग़्फ़िरत व ईसाले सवाब करे और अगर इस अ़मल से वालिदैन की दिल आज़ारी हुई हो तो इस अ़मल से तौबा भी करे ।

(मदनी मुज़ाकरा, 12 मुह़र्रमुल ह़राम 1440 हिजरी)

2 अल अमां ! कहर है ऐ ग़ौस वोह तीखा तेरा

सवाल : जब ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने येह फ़रमाया कि "मेरा येह क़दम सारे औलिया की गर्दनों पर है" तो क्या किसी ने इन्कार भी किया था ?

जवाब : जी हां ! जिन्हों ने इन्कार किया था उन की विलायत सल्ब कर (यानी छीन) ली गई थी । और ऐसे भी वाक़िआ़त हैं कि जिन्हों ने रुजूअ़ कर लिया था उन्हें विलायत वापस मिल गई थी । ((تفریح الخاطر(مترجم)، ص97، 99ماخوذاً

(मदनी मुज़ाकरा, 4 रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी)

अल अमां क़ह़र है ऐ ग़ौस वोह तीखा तेरा
मर के भी चैन से सोता नहीं मारा तेरा
बाज़े अश्हब की ग़ुलामी से येह आंखें फिरनी
देख उड़ जाएगा ईमान का त़ोत़ा तेरा
तुझ से दर दर से सग और सग से है मुझ को निस्बत
मेरी गर्दन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
ह़श्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा

(ह़दाइके बख़्शिश, स. 21, 28, 29)

3 रोज़ाना कितना दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए ?

सवाल : दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बहुत ज़्यादा तरग़ीब दिलाई जाती है तो येह इरशाद फ़रमाइए कि रोज़ाना कितनी तादाद में दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए ?

जवाब : दुरूद शरीफ़ जितना ज़्यादा पढ़ा जाए उतना ही फ़ाएदा है, लेहाज़ा ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ने का मामूल बनाना चाहिए । रोज़ाना कम से कम 313 बार दुरूद शरीफ़ तो पढ़ ही लेना चाहिए ।

(मदनी मुज़ाकरा, 19 मुह़र्रमुल ह़राम 1440 हिजरी)

4 फ़ातिह़ा और नियाज़ में फ़र्क़ !!

सवाल : फ़ातिह़ा और नियाज़ में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब : नियाज़ और फ़ातिह़ा दोनों का एक ही माना है, लेकिन बुज़ुर्गाने दीन के ईसाले सवाब के लिए जो खाना वग़ैरा तैयार किया जाता है उसे एह़तिरामन "नियाज़" कहा जाता है । और आ़म शख़्स के ईसाले सवाब के लिए जो खाना तैयार किया जाए उसे "फ़ातिह़ा" का खाना केहते हैं । दर अस्ल नियाज़ केहने में अदब

ज़्यादा है, इस लिए बुज़ुर्गाने दीन के एह़तिराम में नियाज़ बोला जाता है। जैसा छोटे आदमी को कहा जाता है : बैठो! जब कि बड़े आदमी से अ़र्ज़ की जाती है कि तशरीफ़ रखिए ! "फ़ातिहा" या "नियाज़" अल्लाह पाक की रिज़ा ह़ासिल करने के लिए की जाती है। "ग़ौसे पाक की नियाज़" केहने में भी कोई ह़रज नहीं।

(फ़तावा रज़विया, 9/ 578 माख़ूज़न)

(मदनी मुज़ाकरा, 4 रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी)

5 क्या ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुफ़्ती भी थे ?

सवाल : क्या ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुफ़्ती भी थे ?

जवाब : ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुज्तहिदे मुत़लक़ यानी ह़क़ीक़ी मुफ़्ती थे।[1] मुज्तहिद ही अस्ल मुफ़्ती होता है और अब जो मुफ़्ती हैं येह "मुफ़्तियाने नाक़िल" केहलाते हैं यानी मुज्तहिदीन ने जो कुछ बयान फ़रमाया उस में से मस्अला निकाल कर ही फ़तवा देते हैं।

(इल्मो ह़िक्मत के 125 मदनी फूल, स. 41-42 मुलख़्ख़सन)

(मदनी मुज़ाकरा, 5 रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी)

6 मल्फ़ूज़ाते ग़ौसे आज़म पर मुश्तमिल किताब

सवाल : क्या इस दौर में भी हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मल्फ़ूज़ात की किताबें मिलती हैं ? अगर मिलती हैं तो उन पर एतिबार किया जा सकता है ?

जवाब : एतिबार न करने की वज्ह क्या है ? हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब "फ़ुतूहुल ग़ैब" बहुत मश्हूर है। इस किताब का कई ज़बानों में तर्जमा किया गया है और शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मोह़द्दिसे देहलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस किताब की शर्ह़ भी फ़रमाई है जो उर्दू तर्जमे के साथ मिलती है। याद रहे ! तर्जमा किसी आ़शिक़े ग़ौसुल आज़म ही का लेना चाहिए।

(मदनी मुज़ाकरा, 5 रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी)

7 पीर साह़ब की तस्वीर फ़्रेम में लगाना कैसा ?

सवाल : क्या पीर साह़ब की तस्वीर फ़्रेम में लगा सकते हैं ?

जवाब : तौबा ! तौबा ! येह नाजाइज़ है। इस त़रह़ रेह़मत के फ़रिश्ते घर में नहीं आएंगे।[2] बाज़ लोग ग़ौसे पाक शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़रफ़ मन्सूब तसावीर लगाते हैं जो यक़ीनन जाली (नकली) हैं, क्यूंकि उस दौर में केमेरा (Camera) नहीं था, फिर तस्वीर में दाढ़ी भी छोटी दिखाई जाती है। बिल फ़र्ज़ अगर वोह तस्वीर مَعَاذَاللهِ सच्ची भी हो तब भी लगाई नहीं जा सकती। मौजूदा पीर साह़ब जो नेक आदमी, जामेए़ शराइत़ और आ़लिमे दीन हों उन की तस्वीर लगाने वाला भी गुनाहगार है। अगर पीर साह़ब ही अपनी तस्वीर लगाने को OK करते हैं तो अब पीर साह़ब को नेक नहीं कहा जाएगा, वोह किसी और खाते में चले जाएंगे।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी)

8 15 साल तक सारी रात एक क़दम पर खड़े हो कर तिलावत

सवाल : ग़ौसे पाक ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की सीरत में है कि आप 15 साल तक इ़शा की नमाज़ के बाद दीवार की खूंटी (कील) का सहारा ले कर एक क़दम पर खड़े हो कर क़ुरआने करीम पढ़ना शुरूअ़ करते और सह़र के वक़्त तक क़ुरआने करीम ख़त्म फ़रमा लेते [3] इस में क्या ह़िक्मत थी ?

जवाब : आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ऐसा अपने नफ़्स को मारने के लिए और शैत़ान को येह बता देने के लिए किया कि तू जितना रोकेगा हम उतना आगे बढ़ेंगे, तू जितनी कम इ़बादत करवाने की कोशिश करेगा अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए हम उतनी ज़्यादा इ़बादत करेंगे। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जो कुछ किया उस पर हमारी आंखें बन्द हैं, अगर ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه पर भी आंखें बन्द नहीं होंगी तो फिर किस पर बन्द होंगी !!

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल आख़िर 1441 हिजरी)

---

(1) आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه हमेशा से ह़म्बली थे और बाद को जब ऐनुश्शरीअ़तुल कुब्रा तक पहुंच कर मन्सबे "इजतिहादे मुत़लक़" ह़ासिल हुवा, मज़हबे ह़म्बल को कमज़ोर होता हुवा देख कर इस के मुत़ाबिक़ फ़तवा दिया कि "हुज़ूर" (ग़ौसे पाक) मुह़ियुद्दीन (हैं) और (फ़िक़्हे ह़नफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, ह़म्बली) दीने मतीन के येह चारों सुतून हैं, लोगों की त़रफ़ से जिस सुतून में ज़ोफ़ आता देखा उस की तक़्विय़त फ़रमाई।

(फ़तावा रज़विया, 26/433)

(2) फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो उस में रेह़मत के फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते।

(بخاری، 2/385، حدیث:3225)(3)اخبار الاخیار، ص11۔





दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत

मुफ़्ती मुहम्मद क़ासिम अ़त्तारी

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है, तेहरीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से मुल्क व बैरूने मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते (पूछते रेहते) हैं, जिन में से 3 मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किए जा रहे हैं।

1 दीवारों पर लफ़्ज़ ''मुहम्मद'' लिखना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि घरों और मसाजिद वग़ैरा इमारात की दीवारों पर ''या मुहम्मद'' लिखा होता है, क्या येह शरअ़न दुरुस्त है ? और अगर पेहले से किसी पेइन्ट से लिखा हो या तख़्ती वग़ैरा लगी हो, तो अब उस का क्या किया जाए ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ''या मुहम्मद'' के अल्फ़ाज़ के साथ पुकारना, शरअ़न दुरुस्त नहीं क्यूंकि कुरआने पाक में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस त़रह़ पुकारने से मन्अ़ किया गया है, जैसे हम एक दूसरे को उस का नाम ले कर पुकारते हैं।

लेहाज़ा **''या मुहम्मद''** केहने की बजाए या रसूलल्लाह, या ह़बीबल्लाह, या नबीय्यल्लाह वग़ैरा अल्फ़ाज़ के साथ निदा की जाए और लिखते वक़्त भी इसी एह़तियात़ को मल्हूज़ रखा जाए और अगर घर या मस्जिद वग़ैरा की दीवार पर **''या मुहम्मद''** लिखा हो तो उसे मिटा कर या अगर कोई तख़्ती लगी हो, तो उसे उतार कर ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم'' की तख़्ती लगाई जाए। और उसे लगाने में येह एह़तियात़ भी की जाए कि उसे ऐसी जगह पर ही लगाया जाए, जहां किसी क़िस्म की बे अदबी का एह़तिमाल न हो और बारिश वग़ैरा का पानी उस तख़्ती से लग कर ज़मीन पर न गिरे और जहां येह एह़तिमाल मौजूद हो, जैसे मकान की बाहर वाली दीवार, कि जहां इस मुक़द्दस तेह़रीर पर बारिश का पानी लग कर ज़मीन पर गिरेगा, तो ऐसी जगह लगाने से इज्तेनाब (परहेज़) किया जाए।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 क़र्ज़ पर नफ़्अ़ लेना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि मैं एक कंपनी में काम करता हूं। वहां एक शख़्स कंपनी को गोश्त सप्लाई करता है। उस से मेरी दुआ़ व सलाम हुई, तो उस ने मुझ से कहा कि मैं पूरा महीना कंपनी को गोश्त सप्लाई करता हूं, जिस का बिल कंपनी साथ साथ देती रेहती है, लेकिन पेमेन्ट महीने बाद मिलती है, जिस वज्ह से वोह मुझ से इस त़रह़ का एग्रीमेन्ट करना चाहता है कि कंपनी से वोह बिल ले कर मुझे दे दिया करेगा और जितनी रक़म बनती होगी मैं उस को अपनी त़रफ़ से दे दिया करूंगा और फिर महीने बाद जब कंपनी की त़रफ़ से उस को पेमेन्ट

मिलेगी, तो जितनी रक़म मुझ से ली होगी, वोह भी मुझे वापस करेगा और साथ जितना गोश्त सप्लाई किया होगा, फ़ी किलो के हिसाब से दस रुपिये मज़ीद मुझे देगा। शरई राहनुमाई फ़रमा दें कि येह त़रीक़ा दुरुस्त है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में बयान कर्दा त़रीक़ा ख़ालिस सूद (ब्याज-व्याज) है, लेहाज़ा आप येह त़रीक़ा नहीं अपना सकते, क्यूंकि आप जो रक़म उस शख़्स को देंगे, इस की शरई हैसियत क़र्ज़ वाली है, यानी आप उस शख़्स को क़र्ज़ के त़ौर पर रक़म देंगे और क़र्ज़ का उसूल येह होता है कि जितनी रक़म क़र्ज़ दी हो, उतनी ही वापस ली जाती है। इस से ज़्यादा लेना त़ै किया जाए, तो येह सूद होता है, जिस का लेना देना ना जाइज़ व ह़राम है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 ज़िन्दगी में ही किसी नेक काम की वसिय्यत करना

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि कुछ लोग अपनी ज़िन्दगी में किसी नेक काम से मुतअ़ल्लिक़ वसिय्यत कर जाते हैं कि उन के मरने के बाद उन का माल फ़ुलां नेक काम मसलन : मस्जिद-मद्रसे, दीनी त़ालिबे इ़ल्म या किसी ग़रीब यतीम की मदद में ख़र्च कर दिया जाए, पूछना येह है कि क्या इस्लाम हमें इस चीज़ की इजाज़त देता है कि हम अपनी ज़िन्दगी में ही अपने माल के बारे में कोई वसिय्यत कर जाएं कि हमारे फ़ौत होने के बाद हमारा येह माल किसी नेक काम में या सदक़ए जारिया के त़ौर पर ख़र्च कर दिया जाए ? अगर इस्लाम इस की इजाज़त देता है तो इस की मिक़्दार क्या है ? यानी किस ह़द तक हम अपने माल से वसिय्यत कर सकते हैं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

इस्लाम अपने मानने वालों की दुन्या ओ आख़ेरत दोनों जहां की मस्लेह़तों का ख़याल रखता है। उन की दुन्या भी संवारता है और आख़ेरत की दाइमी ज़िन्दगी बेहतर बनाने के त़रीक़े भी सिखाता है। इसी लिए क़ुरआनो ह़दीस में बार हा इस चीज़ पर उभारा गया कि अपनी आने वाली दाइमी ज़िन्दगी के लिए जम्अ़ करो। एक जगह यूं समझाया कि इन्सान के सिर्फ़ तीन ही माल हैं : एक जो खा कर ख़त्म कर दिया, दूसरा जो पहन कर पुराना कर दिया और तीसरा जो सदक़ा कर के आख़ेरत के लिए ज़ख़ीरा कर लिया। वसिय्यत की इजाज़त दे कर शरीअ़त ने आदमी की बहुत सी जाइज़ ख़्वाहिशात और उख़रवी ह़ाजात की तक्मील का ज़रीआ़ बनाया है, क्यूंकि वसिय्यत में बाज़ अवक़ात इन्सान किसी दोस्त, रिश्तेदार के फ़ाइदे का कोई काम करता है, जो फ़ी नफ़्सिही जाइज़ व मुबाह़ है और वसिय्यत में ख़ुसूसन नेकी के कामों की ताकीद की जाती है : जैसे मस्जिद, मद्रसे, दीन या ग़रीब-यतीम की ख़िदमत वग़ैरा।

वसिय्यत करने का हुक्म येह है कि अगर उस के वसिय्यत करने से कि वसिय्यत का माल निकाल कर बाक़ी वरसा में तक़्सीम करेंगे, तो वरसा तंगदस्त हो जाएंगे, तो बेहतर है कि वसिय्यत न करे वरना उस के लिए वसिय्यत करना मुस्तह़ब, अ़ज़ीम अज्रो सवाब का काम है और शरअ़न इस की मिक़्दार येह है कि बन्दा अपने माल में से एक तिहाई ह़िस्से की वसिय्यत कर सकता है। एक तिहाई से ज़्यादा की वसिय्यत मोतबर (भरोसे के लाइक़) नहीं होती। इसी त़रह़ जो शख़्स पेहले से ही विरासत का ह़क़दार बन रहा हो, उस के लिए की गई वसिय्यत भी मोतबर नहीं होती, अलबत्ता अगर किसी शख़्स ने एक तिहाई से ज़्यादा की या किसी वारिस के लिए वसिय्यत की और उस के फ़ौत होने के बाद तमाम वुरसा तिहाई से ज़्यादा या वारिस के लिए की गई वसिय्यत नाफ़िज़ करने की इजाज़त दे दें और वोह सब इजाज़त देने के अहल भी हों, तो येह वसिय्यत भी क़ाबिले अ़मल होंगी।

नोट : किसी शख़्स ने वसिय्यत की हो या करनी हो, उस की मुकम्मल मालूमात फ़राहम (*Provide*) कर के ख़ास अपने मस्अले से मुतअ़ल्लिक़ रेहनुमाई ह़ासिल कर सकता है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم



मर्हूमीन को तक्लीफ़ न दें

मौलाना मुहम्मद इमरान अत्तारी

हज़रते सदक़ा बिन सुलैमान जाफ़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरी जवानी के दिन थे, नेकियों से दूरी और गुनाहों से नज़दीकी थी, इसी दौरान मेरे वालिद साहब का इन्तेक़ाल हो गया, (जिस के सबब) मेरे दिल की हालत बदल गई, मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की और नेकियों में मसरूफ़ हो गया, (कुछ अर्से बाद) फिर मुझ से ग़लतियां और लग़्ज़िशें होने लगीं, मैं ने अपने मर्हूम वालिद को ख़्वाब में देखा तो उन्हों ने फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! मैं तुझ से बहुत ख़ुश था क्यूंकि तेरे आमाल मुझ पर पेश किए जाते रहे और वोह नेक लोगों के आमाल जैसे होते थे, मगर इस मरतबा जब तेरे आमाल मुझ पर पेश किए गए तो मुझे बहुत शरमिन्दगी हुई । मुझे मेरे आस पास के मुर्दों में रुस्वा न किया कर ! इस ख़्वाब के बाद हज़रते सदक़ा बिन सुलैमान जाफ़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की ज़िन्दगी में इन्क़िलाब आ गया और उन्हों ने गुनाहों से तौबा कर के हमेशा के लिए नेकी के रास्ते को अपना लिया ।[1]

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हमें अपनी ज़िन्दगी ऐसे गुज़ारनी चाहिए कि बिला इजाज़ते शरई न ज़िन्दा लोगों को हम से किसी क़िस्म की तक्लीफ़ पहुंचे और न ही मुर्दों को, कितनी ना लाइक़ी की बात होगी कि हमारे आमाल की वज्ह से हमारे मुर्दे तक्लीफ़ व परेशानी में आएं, मज़कूरा वाक़िआ जहां हमें इस बात का पता दे रहा है कि औलाद की नेकियां वालिदैन को क़ब्र में ख़ुश करती हैं वहीं हमें येह भी बता रहा है कि औलाद के गुनाहों की वज्ह से मर्हूम वालिदैन क़ब्र में तक्लीफ़ व परेशानी का शिकार होते हैं, बल्कि अहादीसे त़य्यिबा में तो वालिदैन के साथ साथ दीगर मर्हूमीन रिश्तेदारों का भी तज़केरा मिलता है कि हम ज़िन्दों के बुरे आमाल उन की भी रंजीदगी का सबब बनते हैं । चुनान्चे दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिए :

(1) पीर और जुमेरात के दिन आमाल **अल्लाह** पाक की बारगाह में पेश किए जाते हैं और जुम्आ के दिन अम्बिया ए किराम (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) और आबा ओ उम्महात (यानी बापों और माओं) पर पेश किए जाते हैं वोह उन की नेकियों पर ख़ुश होते हैं और उन के चेहरों की सफ़ेदी और चमक में इज़ाफ़ा होता है, (और इन के गुनाहों के सबब ग़मगीन होते हैं) पस तुम **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) से डरते रहो और (गुनाह कर के) अपने मुर्दों को तक्लीफ़ न पहुंचाओ ।[2] (2) तुम अपने बुरे आमाल के ज़रीए अपने मुर्दों को तक्लीफ़ न पहुंचाओ कि उन्हें तुम्हारे फ़ौतशुदा क़रीबी रिश्तेदारों पर पेश किया जाता है ।[3] इसी वज्ह से सह़ाबी ए रसूल हज़रते सैयदना अबू दर्दा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अपने मामूं हज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शहादत के बाद इस त़रह़ दुआ किया करते थे कि "ऐ **अल्लाह** ! मैं ऐसे अ़मल से तेरी पनाह मांगता हूं जिस की वज्ह से (मेरे मामूं) हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को रुस्वा होना पड़े ।" जबकि इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه यूं दुआ किया करते थे : "ऐ **अल्लाह** ! मैं हर ऐसे काम को करने से तेरी पनाह मांगता हूं जिस की वज्ह से हज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه

नोट : येह मज़मून निगराने शूरा की गुफ़्तगू वग़ैरा की मदद से तैयार कर के उन्हें चेक करवाने के बाद पेश किया गया है ।

के पास मुझे रुस्वा होना पड़े ।"[4] ह़ज़रते सैयदना सईद बिन जुबैर رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सैयदना उ़स्मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन औस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को उन की ज़ौजा के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त करते हुवे फ़रमाया : ऐ उ़स्मान ! इस के साथ भलाई किया करो क्यूंकि इस के साथ तुम्हारा जो भी बरताव होगा वोह (तुम्हारे सुसर) ह़ज़रते सैयदना अ़म्र बिन औस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को पहुंचेगा । मैं ने पूछा : क्या ज़िन्दों की ख़बरें मुर्दों को पहुंचती हैं ? फ़रमाया : हां, हर रिश्ते वाले के पास उस के रिश्तेदारों की ख़बरें पहुंचती हैं अगर अच्छी हों तो वोह उस से बहुत ख़ुश होते हैं और अगर बुरी हों तो वोह मायूस व ग़मगीन हो जाते हैं ।[5]

जब इब्राहीम बिन सालेह़ बिन अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास हाश्मी फ़िलिस्तीन के हुक्मरान थे तो उस वक़्त उन्हें तबए़ ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सैयदना अ़ब्बाद अल ख़व्वास رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाया : मुझे येह बात पहुंची है कि ज़िन्दों के आमाल उन के फ़ौतशुदा रिश्तेदारों पर पेश किए जाते हैं, लेहाज़ा तुम ग़ौर कर लो कि अल्लाह के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में तुम्हारे किस त़रह़ के आमाल पेश किए जाते हैं । येह सुन कर इब्राहीम बिन सालेह़ इतना रोए कि उन की दाढ़ी आंसूओं से तर हो गई ।[6] मज़ीद भी ज़िन्दों के कुछ काम किताबों में ज़िक्र किए गए हैं कि जिन की वज्ह से मुर्दों को तक्लीफ़ व परेशानी होती है, मसलन अल्लाह पाक के आख़री नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी को क़ब्र पर टेक लगाए हुवे देखा तो इरशाद फ़रमाया : لَاتُؤْذِ صَاحِبَ هٰذَا الْقَبْر यानी इस क़ब्र वाले को ईज़ा न दे ।[7] आला ह़ज़रत इमामे एहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस ईज़ा का तजरिबा भी ताबेईने उ़ज़्ज़ाम और दूसरे उ़लमा ए किराम ने जो साह़िबे बसीरत थे कर लिया है (और फिर उसी मक़ाम पर इमामे एहले सुन्नत ने क़ब्र पर सर रख कर सोने या उन पर पाउं रखने वग़ैरा के ह़वाले से चन्द वाक़िआ़त भी नक़्ल फ़रमाए हैं कि जिन से साबित होता है कि इन कामों की वज्ह से मुर्दे को तक्लीफ़ होती है)[8] आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने तो मैयत के कन्धी करने से मन्अ़ फ़रमाया कि उसे तक्लीफ़ होगी ।[9] ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आज़मी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ लिखते हैं : येह मुत्तफ़िक़ा मस्अला है कि जिन जिन चीज़ों से ज़िन्दों को तक्लीफ़ और ईज़ा पहुंचती है उन उन चीज़ों से मुर्दों को भी तक्लीफ़ और ईज़ा पहुंचती है लेहाज़ा क़ब्रों पर पेशाब, पाख़ाना करना या कोई गन्दी चीज़ डालना या क़ब्रों को तोड़ फोड़ कर मिस्मार कर देना या क़ब्रों को रोंदना या क़ब्रों पर मकान बनाना या क़ब्रों पर बैठना या लेटना चूंकि इन बातों से मुर्दों को तक्लीफ़ और ईज़ा पहुंचती है इस लिए येह सब काम ममनूअ़ व ना जाइज़ हैं । मुसलमानों पर लाज़िम है कि मुसलमानों के क़ब्रस्तानों का एह़तिराम करें और हर उन बातों से परहेज़ रखें जिन से क़ब्रों की तौहीन और क़ब्रों को ईज़ा पहुंचती है ।[10] यूंही मैयत को सर्दख़ाने में न रखा जाए कि इस से उसे तक्लीफ़ होती है ।[11] मेडीकल के त़लबा का सीखने के लिए इन्सानी लाशों पर तजरिबात करना ना जाइज़ व ह़राम और गुनाह है क्यूंकि येह मैयत को तक्लीफ़ देना है ।[12] मेरी तमाम आ़शिक़ाने रसूल से फ़रियाद है ! कि अपनी ज़िन्दगी का अन्दाज़ ऐसा रखिए कि आप के किसी भी क़ौल व फ़ेल की वज्ह से न ज़िन्दा लोग तक्लीफ़ व परेशानी का शिकार हों और न ही मुर्दों को तक्लीफ़, परेशानी और पशेमानी का सामना करना पड़े, उ़लमा फ़रमाते हैं : मुसलमान ज़िन्दा व मुर्दा की इ़ज़्ज़त बराबर है, उन्हें तक्लीफ़ देना ह़राम ।[13]

ख़ुदाया न तक्लीफ़ का मैं बाइ़स बनूं
तेरी जन्नतों का मैं वारिस बनूं

अल्लाह पाक हमें अ़मल की सआ़दत नसीब फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) عیون الحکایات، ص401 (2) نوادر الاصول، 1/671، حدیث:925، التیسیر بشرح الجامع الصغیر، 1/450 (3) موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، 3/14، حدیث:2 (4) الزھد لابن المبارک، ص42، حدیث:165، احیاء العلوم، 5/252 (5) الزھد لابن مبارک، ص151، حدیث:447 (6) حلیۃ الاولیاء، 10/19، رقم: 14345 (7) مسند احمد، 39/476 (8) فتاوی رضویہ، 9/435 (9) فتاوی رضویہ، 9/164 (10) جہنم کے خطرات، ص148 (11) ماہنامہ فیضان مدینہ، ربیع الآخر 1440ھ جنوری/دسمبر 2018ء، ص12 (12) ماہنامہ فیضان مدینہ، جمادی الاُخریٰ 1442ھ/فروری 2021ء، ص12 (13) فتاوی رضویہ، 9/453۔



शहे सद्दे सदारत पे लाखों सलाम

मौलाना काशिफ़ शेहज़ाद अ़त्तारी मदनी

सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक अ़ज़ीमुश्शान फ़ज़ीलत येह है कि चार मरतबा आप का शक़्क़े सद्र हुवा।[1] यानी ह़ज़रते सय्यिदना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने मुबारक सीने को चाक कर के मुक़द्दस दिल बाहर निकाला, सोने के त़श्त में आबे ज़मज़म से ग़ुस्ल दिया और नूरो ह़िक्मत से भर कर उस की जगह वापस रख दिया।[2]

पेहली बार शक़्क़े सद्र : ह़ज़रते सैयदना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है : रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बच्चों के साथ मौजूद थे कि जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام आए, आप को पकड़ कर लिटाया, सीना चीर कर उस में से दिल निकाला और दिल में से जमा हुवा ख़ून (ख़ून का लोथड़ा) निकाल कर कहा : هٰذَا حَظُّ الشَّيْطَانِ مِنْكَ आप के अन्दर येह शैत़ान का ह़िस्सा था।[3] इस के बाद जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने मुबारक दिल को सोने के त़श्त में आबे ज़मज़म से धोया और सी कर दोबारा उस की जगह रख दिया। (येह मन्ज़र देख कर) बच्चे दौड़ कर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ाई वालिदा (ह़ज़रते ह़लीमा सादिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) के पास पहुंचे और कहा : मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को क़त्ल कर दिया गया है। येह सुन कर लोग जल्दी जल्दी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास पहुंचे तो देखा कि (मुबारक चेहरे का) रंग बदला हुवा था। ह़ज़रते सैयदना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि मैं मुबारक सीने पर उस सिलाई के निशान देखा करता था।[4]

ग़ज़ाली ए ज़मां अ़ल्लामा सैयद अह़मद सईद काज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه इस रिवायत के तह़त फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से मालूम हुवा कि शक़्क़े सद्र मुबारक के मुतअ़ल्लिक़ रूह़ानी, कश्फ़ी, मनामी (यानी रूह़ानी त़ौर पर या ख़्वाब में होने) वग़ैरा की तमाम तावीलात क़त़्अ़न बात़िल हैं बल्कि येह शक़्क़ और चाक किया जाना ह़िस्सी, ह़क़ीक़ी और अम्रे वाक़ेई है क्यूंकि सीनए अक़्दस में सूई से सीए जाने का निशान चमकता हुवा नज़र आता था।[5]

दूसरी बार शक़्क़े सद्र : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मैं दस साल की उ़म्र में सेह़रा में जा रहा था कि अचानक मैं ने अपने सर के ऊपर दो आदमियों (यानी जिब्राईल व मीकाईल عليهما السّلام) को देखा, एक ने दूसरे से पूछा : क्या येही हैं ? दूसरे ने जवाब दिया : हां। उन दोनों ने मुझे पकड़ कर लिटाया और मेरे पेट को चाक कर दिया, जिब्राईल सोने के एक त़श्त में पानी ला रहे थे जब कि मीकाईल मेरा पेट धो रहे थे। फिर उन में से एक ने दूसरे से कहा : इन का सीना चाक करो। मैं ने देखा कि मेरा सीना चाक हो चुका है लेकिन मुझे दर्द मेह़सूस नहीं हुवा। अब उस फ़रिश्ते ने कहा : इन का दिल चीरो और इस में से कीना और ह़सद निकाल दो। मेरा दिल चीरा गया और उस में से ख़ून के लोथड़े जैसी चीज़ निकाल कर

फैंक दी गई । फिर उस फ़रिश्ते ने कहा : इन के दिल में शफ़्क़त और रह़मत दाख़िल कर दो । दूसरे फ़रिश्ते ने मेरे सीने में चांदी जैसी कोई चीज़ दाख़िल की और अपने पास से कोई पिसी हुई चीज़ निकाल कर उस पर छिड़क दी, फिर मेरे पाउं का अंगूठा हिला कर कहा : आप तशरीफ़ ले जाइए । जब मैं वहां से वापस आया तो मेरे दिल में छोटों पर शफ़्क़त और बड़ों की इ़ज़्ज़त समा चुकी थी ।(6)

भरे इस में असरारो इ़ल्मे दो आ़लम
कुशादा किया ह़क़ ने सीना तुम्हारा (7)

तीसरी बार शक़्क़े सद्र : रेह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्नत मानी कि एक महीने ग़ारे ह़िरा में ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के हमराह एतिकाफ़ करेंगे, इत्तेफ़ाक़ से येह रमज़ान का महीना था । (इस दौरान) एक रात आप (ग़ार से) बाहर निकले तो اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ की आवाज़ सुनी । आप ने गुमान फ़रमाया कि येह किसी जिन्न की आवाज़ है और जल्दी से ह़ज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास तशरीफ़ ले गए । उम्मुल मोमिनीन ने आप को चादर ओढ़ा कर पूछा : ऐ इब्ने अ़ब्दुल्लाह ! क्या बात है ? इरशाद फ़रमाया : मैं ने اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ की आवाज़ सुनी और मेरे ख़याल से येह कोई जिन्न है । उम्मुल मोमिनीन ने अ़र्ज़ की : ऐ इब्ने अ़ब्दुल्लाह ! आप को ख़ुश ख़बरी हो, सलाम तो अच्छी चीज़ है । इस के बाद नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक दफ़्आ़ बाहर तशरीफ़ लाए तो देखा कि जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام धूप में मौजूद हैं, उन का एक बाज़ू मशरिक़ में और दूसरा मग़रिब में है । इस मौक़ेअ़ पर जिब्रीले अमीन ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ गुफ़्तगू की और दोबारा मुलाक़ात का वादा कर के चले गए । आप عَلَيْهِ السَّلَام बताए हुवे दिन पहुंचे तो जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने आने में ताख़ीर कर दी, जब आप ने वापसी का इरादा किया तो अचानक देखा कि जिब्राईल और मीकाईल علیهما السّلام मौजूद हैं और इन दोनों ने आस्मान के किनारे को भर दिया है । मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام आस्मानो ज़मीन के दरमियान रहे जब कि जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने नीचे उतर कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को गुद्दी के बल लिटा दिया, फिर (मुबारक सीने को चाक कर के) मुक़द्दस दिल निकाला और उस में से जो **अल्लाह** पाक ने चाहा वोह बाहर निकाला । इस के बाद नूरानी दिल को सोने के त़श्त में आबे ज़मज़म से धोया, फिर उसे उस की जगह वापस रख कर सी दिया और ज़ख़्म बन्द कर दिया । इस के बाद जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने रेह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पेट के बल लिटा कर मुबारक पुश्त पर मोहर लगाई यहां तक कि इस का असर आप ने अपने दिल में मेह़सूस किया, फिर आप को सूरए अ़लक़ की इब्तिदाई पांच आयात पढ़ाईं । यहां से वापस आते हुवे **अल्लाह** के मेह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस पथ्थर या दरख़्त के पास से गुज़रते वोह आप की ख़िदमत में सलाम पेश करते यहां तक कि जब उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते बीबी ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास पहुंचे तो उन्हों ने भी अ़र्ज़ की : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله (8)

चौथी बार शक़्क़े सद्र : मेराज की रात रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़तीमे काबा में आराम फ़रमा रहे थे कि तीन फ़रिश्ते ह़ाज़िर हुवे और आप को उठा कर ज़मज़म शरीफ़ के कुंवें के पास ले आए । इन तीनों में से जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गले से ले कर मुबारक सीने तक जिस्म को चाक किया और (मुबारक दिल बाहर निकाल कर) आबे ज़मज़म से धोया, फिर सोने का एक थाल लाया गया जिस में ईमान और ह़िक्मत से भरा हुवा सोने का एक बरतन मौजूद था, उस (बरतन में मौजूद इ़ल्मो ह़िक्मत) से मुबारक दिल को भर कर सी दिया और फिर सीने को बराबर कर दिया ।(9)

शक़्क़े सद्र की ह़िक्मतें : **अल्लाह** करीम का फ़रमाने अ़ज़ीम है : ﴿اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : क्या हम ने तुम्हारी ख़ातिर तुम्हारा सीना कुशादा न कर दिया ? (10)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : सीना कुशादा करने से मुराद या सीना चाक करना है या सीना खोलना या वसीअ़ फ़रमाना । अगर पेहले माना (यानी सीना चाक करना) मुराद हों तो ख़याल रहे कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का सीनए मुबारक 3 या 4 बार चाक कर के क़ल्बे मुबारक धोया गया । अव्वल : बीबी ह़लीमा दाई के यहां ताकि दिल में खेल कूद की रग़बत न हो, फिर शुरूए शबाब (यानी जवानी के आग़ाज़ में) में ताकि जवानी की ग़फ़्लत न आने पाए, फिर अ़ता ए नबुव्वत के क़रीब ताकि दिल बारे नबुव्वत को बरदाश्त कर सके, फिर मेराज की रात ताकि आलमे मलकूत के नज़ारे और दीदारे इलाही का तह़म्मुल हो सके, येह ज़ाहिरी शर्ह़े सद्र है ।(11)

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ से यूं आवाज़ आती है कुशादा कर दिया **Allah** *ने सीना मुहम्मद का*(12)

सोने के त़श्त के इस्तेमाल की हिक्मतें : शारेहे बुख़ारी इमाम बदरुद्दीन महमूद बिन अहमद ऐनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने शक़्क़े सद्र के मौक़ेअ़ पर क़ल्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सोने के त़श्त में रखने की चन्द ईमान अफ़रोज़ हिक्मतें बयान फ़रमाई हैं जिन्हें क़द्रे तरमीम और तस्हील व इज़ाफ़े के साथ पेश किया जाता है : 1 सोना तमाम धातों में सब से आला ओ अफ़्ज़ल धात है जब कि क़ल्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तमाम दिलों में सब से अफ़्ज़ल दिल है 2 सोने में कई ऐसी ख़ूबिया हैं जो किसी और धात में नहीं, यूंही क़ल्बे मुबारक को भी बेशुमार ऐसे फ़ज़ाइल हासिल हैं जो किसी और मख़्लूक़ के हिस्से में नहीं आए 3 सोने को न आग खाती है, न मिट्टी बोसीदा करती है और न इसे ज़ंग लगता है। क़ल्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किसी क़िस्म के गुनाह व मासियत का ज़ंग नहीं लगता, मिट्टी और आग नहीं खा सकती 4 सोना तमाम जवाहिरात में सब से वज़्नी है, सोने के त़श्त से वही के वज़्न और बोझ की त़रफ़ इशारा है।(13)

क़ल्बे अक़्दस को धोने की हिक्मत : ग़ज़ाली ए ज़मां अ़ल्लामा सैयद अहमद सईद काज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : क़ल्बे अत़्हर का ज़मज़म से धोया जाना किसी आलाइश (गन्दगी) की वज्ह से न था क्यूंकि हुज़ूर सैयदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सैयदुत्त़य्यिबीन वत्ताहिरीन (यानी साफ़ सुथरे लोगों के सरदार) हैं, ऐसे त़य्यिबो त़ाहिर कि विलादते बा सआ़दत के बाद भी हुज़ूर सैयदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ग़ुस्ल नहीं दिया गया, लेहाज़ा क़ल्बे अक़्दस का ज़मज़म से धोया जाना महज़ इस हिक्मत पर मब्नी था कि ज़मज़म के पानी को वोह शरफ़ बख़्शा जाए जो दुन्या के किसी पानी को हासिल नहीं, बल्कि क़ल्बे अत़्हर के साथ माए ज़मज़म को मस (Touch) फ़रमा कर वोह फ़ज़ीलत अ़त़ा फ़रमाई गई जो कौसरो तस्नीम के पानी को भी हासिल नहीं।(14)

क़ल्बे मुबारक में आंखें और कान : ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने (पेहली बार) मुबारक दिल को शक़ करने के बाद जब आबे ज़मज़म से धोया तो फ़रमाने लगे : قَلْبٌ سَدِيْدٌ فِيْهِ عَيْنَانِ تُبْصِرَانِ وَاُذُنَانِ تَسْمَعَانِ यानी मुबारक दिल हर क़िस्म की कजी (टेढ़े पन) से पाक और बे ऐब है, इस में दो आंखें हैं जो देखती हैं और दो कान हैं जो सुनते हैं।(15)

शक़्क़े सद्र से ह़यातुन्नबी का सुबूत : आ़म त़ौर पर रूह़ के बग़ैर जिस्म में ज़िन्दगी नहीं होती लेकिन अम्बिया ए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुक़द्दस जिस्म, रूह़ क़ब्ज़ किए जाने के बाद भी ज़िन्दा रेहते हैं। इन्सान का दिल रूह़ का ठिकाना है लेहाज़ा जब किसी इन्सान का दिल उस के सीने से बाहर निकाल लिया जाए तो वोह ज़िन्दा नहीं रेहता लेकिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक दिल सीनए अक़्दस से बाहर निकाला गया, उसे चीरा गया और वोह मुन्जमिद (जमा हुवा) ख़ून जो जिस्मानी एतिबार से दिल के लिए बुन्यादी हैसिय्यत रखता है साफ़ कर दिया गया, इस के बा वुजूद भी रेह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब दस्तूर ज़िन्दा है। येह इस बात की रौशन दलील है कि रूहे मुबारक क़ब्ज़ होने के बाद भी **Allah** के मेह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़िन्दा हैं क्यूंकि जिस का दिल बदन से बाहर हो और वोह फिर भी ज़िन्दा रहे, अगर उस की रूह़ क़ब्ज़ हो कर बाहर हो जाए तो वोह कब मुर्दा हो सकता है।(16)

ऐ हमारे प्यारे **Allah** पाक ! क़ल्बे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल हमारे दिलों को ईमान पर साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रफ़्ए ज़िक्रे जलालत पे अर्फ़अ़ दुरूद
शह़्रे सद्रे सदारत पे लाखों सलाम(17)

---

(1) कश्फ़ुल ग़म्मा، 2/53، ज़रक़ानी अ़लल मवाहिब، 7/191 (2) सिरात़ुल जिनान، 10/739

(3) यानी आप की ज़ाते मुक़द्दसा में शैत़ान का कोई ह़िस्सा होता तो येही ख़ून का लोथड़ा हो सकता था, मगर जब येह भी न रहा तो अब मुमकिन ही नहीं कि ज़ाते मुक़द्दसा से शैत़ान का कोई तअ़ल्लुक़ किसी त़रह़ से हो सके।

(نسیم الریاض، 3/38 مفهوماً، مقالاتِ کاظمی، 1/159)

(4) مسلم، ص88، حدیث:413 (5) مقالاتِ کاظمی، 1/209 (6) دلائل النبوۃ لابی نعیم، ص128، رقم: 166 (7) قبالۂ بخشش، ص30 (8) مسند ابو داؤد طیالسی، ص215، حدیث:1539، دلائل النبوۃ لابی نعیم، ص125، رقم:163 (9) بخاری، 4/580، حدیث:7517 (10) پ30، اَلَمْ نَشْرَحْ 1: (11) نورالعرفان زیرِ آیتِ مذکور، نسیم الریاض، 3/70 مفهوماً (12) قبالۂ بخشش، ص53 (13) عمدۃ القاری، 11/600 (14) مقالاتِ کاظمی، 1/85 (15) فتح الباری، 14/407 (16) مقالاتِ کاظمی، 1/159 تسہیلاً (17) حدائقِ بخشش، ص304۔

बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

मौलाना अ़ब्दुल्लाह नईम अ़त्तारी मदनी

बातों से ख़ुश्बू आए

महब्बत की अलामत

महब्बत की अ़लामत येह है कि फ़रमां बरदार रेहते हुवे इस बात से डरते रहो कि मेहबूब तुम्हें दोस्ती से जुदा न करे। (इरशादे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

(अख़्बारुल अख़्यार,स. 23)

दिल न दुखाना

जहां भी जाओ किसी का दिल न दुखाना, जहां भी जाओ मुर्दों की त़रह़ रेहना (यानी किसी की अज़िय्यत का बाइ़स न बनना)

(इरशादे ख़्वाजा बख़्तियार काकी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

(अख़्बारुल अख़्यार, स. 26)

ह़सब नसब पर फ़ख़्र करना

अक्सर लोग अपने नसब पर फ़ख़्र करते हैं, गोया कि क़ियामत का उन्हें कुछ डर नहीं होता और वोह येह नहीं जानते कि आमाले सालेह़ा के बग़ैर कोई चारा नहीं। सालिक को चाहिए कि अपने ह़सब नसब पर फ़ख़्र करने के बजाए यादे इलाही में मश्ग़ूल रहे।

(इरशादे ख़्वाजा शम्सुद्दीन सियालवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه)

(फ़ैज़ाने शम्सुल आ़रिफ़ीन, स. 70)

अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

तक़्लीद की अहम्मिय्यत

चारों इमामों से पेहले और बाद हमेशा तक़्लीद हुवा करती थी और होती है, चारों मज़्हब का इत्तेबाअ़ बिऐ़निही इत्तेबाए़ सह़ाबा है कि येह मज़ाहिब इन्हीं से माख़ूज़ (निकले) हैं और इन की इत्तेबाअ़ से न मुमानअ़त थी न है। (اظہار الحق الجلی، ص75)

उल्फ़त व मुवानसत का सबब

जो अम्र जिस त़रह़ जिस क़ौम में राइज और उन के नज़्दीक उल्फ़तो मुवानसत और उस की ज़ियादती पर दलील हो वोह ऐ़न मक़्सूदे शरअ़ होगा जब तक बिल ख़ुसूस उस में कोई नही वारिद न हो (मनाई न आई हो)।

(फ़तावा रज़विया, 22/306)

अ़त्तार का चमन, कितना प्यारा चमन !

मार धाड़ से नफ़रत

इन्तेक़ामन मार धाड़ करना "इल्यास क़ादरी" की डिक्षनरी में नहीं है।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1442 हिजरी)

त़लबा की अहम्मिय्यत

"त़लबा" मुल्क का अहम "सरमाया" होते हैं और येह मुल्क की तक़्दीर बदल सकते हैं।

(मदनी मुज़ाकरा, 10 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी)

अ़मल से नेकी की दावत

मुबल्लिग़ का हर फ़ेल नेकी की दावत देने वाला होना चाहिए।

(मदनी मुज़ाकरा, 11 रमज़ानुल मुबारक 1442 हिजरी)



(क़िस्त : 11)

अज्र के अम्बार

मौलाना अबुन्नूर राशिद अ़ली अ़त्तारी मदनी

गुज़श्ता से पैवस्ता (पिछले अंक से जारी).....

22 फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है :

اَنَا اَعْظَمُكُمْ اَجْرًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ، لِاَنَّ لِيْ اَجْرِيْ، وَمِثْلَ اَجْرِ مَنِ اتَّبَعَنِيْ

तर्जमा : मैं क़ियामत के दिन अज्र के लेहाज़ से तुम सब से बड़ा हूं, क्यूंकि मेरे लिए मेरा और जो भी मेरी इत्तेबाअ़ करेगा उन सब का अज्र है।[1]

हुज़ूर नबिय्ये रेहमत, ख़ातिमे नबुव्वत जनाबे मुहम्मद मुस्तफ़ा, अहमदे मुज्तबा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अज्रो सवाब, मक़ामो मर्तबे, अ़ज़मतो रिफ़्अ़त का कोई अन्दाज़ा तो किया ही नहीं जा सकता। जिन्हों ने आप की शान और रिफ़्अ़ते मन्ज़िलत पर लिखना चाहा तो क्या लिखा :

इमाम याफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **फ़रमाते हैं :** सारी काएनात में नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ो कमालात का चर्चा है और अगर सारी दुन्या इन औसाफ़ो कमालात को शुमार करने के लिए जम्अ़ हो जाए तो इन के शुमार कर्दा औसाफ़ ऐसे ही हैं जैसे समुन्दर के सामने एक क़त़रा।[2]

आप की शानो अ़ज़मत को जिन्हों ने बयान किया बिल आख़िर येही कहा :

ज़िन्दगियां ख़त्म हुईं और क़लम टूट गए
तेरे औसाफ़ का इक बाब भी पूरा न हुवा

कोई इश्क़ो मस्ती में डूबा लिखता रहा, लिखता रहा, थक कर फिर येही कहा :

लेकिन रज़ा ने ख़त्मे सुख़न इस पे कर दिया
ख़ालिक़ का बन्दा, ख़ल्क़ का आक़ा कहूं तुझे

किसी ने अपनी बेबसी का एतेराफ़ यूं भी किया :

يَا صَاحِبَ الْجَمَالِ وَ يَا سَيِّدَ الْبَشَرِ
مِن وَّجْهِكَ الْمُنِيْرِ لَقَدْ نُوِّرَ الْقَمَر
لَا يُمْكِنُ الثَّنَاءُ كَمَا كَانَ حَقُّهٗ
بعد از خدا بُزرگ توئی قصه مختصر

तर्जमा : ऐ हुस्नो जमाल वाले, ऐ इन्सानों के सरदार आप के रुख़े अन्वर से तो चांद भी मुनव्वर है, आप की सना का ह़क़ अदा करना तो मुमकिन ही नहीं, क़िस्सा मुख़्तसर येह कि ख़ुदा के बाद आप ही सब से मुअ़ज़्ज़ज़ व बुज़ुर्ग हैं।

ऊपर मज़कूर ह़दीसे पाक में ज़िक्र हुवा कि रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब से ज़्यादा अज्र वाले हैं, इस की तौज़ीह़ कुछ यूं है कि सवाब ब माना क़ुर्ब (नज़्दीकी) व मारिफ़ते इलाही जब कि अज्र ब माना बदला और नेकियों की तादाद है।

इस माना की वज़ाह़त बहारे शरीअ़त से होती है, सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जनाबे सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की अफ़्ज़लियत के बारे में अ़क़ीदए इस्लाम बयान करते हुवे लिखा, जिस का ख़ुलासा येह है :

अम्बिया ओ मुर्सलीन के बाद तमाम मख़्लूक़ाते इलाही में से सब से अफ़्ज़ल सिद्दीक़े अक्बर हैं, फिर उ़मर फ़ारूक़े आज़म, फिर उ़स्माने ग़नी और फिर मौला अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم, अफ़्ज़ल के माना येह हैं कि अल्लाह करीम के यहां ज़्यादा इ़ज़्ज़तो मन्ज़िलत वाला हो, इसी को कसरते सवाब से भी ताबीर करते हैं, इसे कसरते अज्र नहीं केहते, क्यूंकि कभी ऐसा भी होता है कि अफ़्ज़ल से ज़्यादा मफ़्ज़ूल को अज्र मिल जाता है, जैसा कि ह़दीसे पाक में सैयदना इमाम मेहदी के साथियों की निस्बत आया कि उन

में एक के लिए पचास का अज्र है, सहाबा ने अ़र्ज़ की : उन में के पचास का या हम में के ? फ़रमाया : बल्कि तुम में के।[3]

तो अज्र (यानी नेकियों की तादाद) उन के लिए ज़्यादा है, मगर अफ़्ज़लियत में वोह ज़्यादा होना तो बहुत दूर की बात सहाबा ए किराम के बराबर भी नहीं हो सकते, कहां इमाम मेहदी कि रफ़ाक़त और कहां हुज़ूर सैयदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सहाबियत ! इस की मिसाल बिला तश्बीह यूं समझिए कि सुल्तान ने किसी मुहिम पर वज़ीर और बाज़ दीगर अफ़्सरों को भेजा, उस की फ़त्ह पर हर अफ़्सर को लाख लाख रूपिये इन्आ़म दिए और वज़ीर से ख़ाली रिज़ामन्दी और ख़ुशी का इज़्हार किया, तो इन्आ़म यानी बदला अगर्चे दूसरे अफ़्सरों को ज़ाइद मिला, मगर कहां वोह और कहां वज़ीरे आज़म का एज़ाज़ ?[4]

बहारे शरी़अत के इस कलाम से वाज़ेह़ होता है कि सवाब और अज्र दोनों अलग अलग चीज़ें हैं।

हमें येह मालूम या पता होना तो बहुत दूर की बात हमें तो इस बात का यक़ीन है और इस पर ईमान है कि रसूले मुकर्रम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सवाब, मारेफ़त, क़ुर्बे इलाही, रिफ़्अ़तो मन्ज़िलत सब कुछ सारी काएनात से ज़्यादा और आला ओ अर्फ़अ़ है।

अब ह़दीसे पाक के अ़मली पेहलू को देखने के लिए इस पर ग़ौर कीजिए कि जो भी रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तेबाअ़ करेगा उसे ख़ुद को तो अज्र मिलेगा ही उस के इस अ़मल का अज्र रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कि बारगाह में भी जाएगा।

ह़क़ीक़त तो येह है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पेहले भी काएनात में जो कोई भी आया, जिसे भी हिदायत मिली, जिस ने भी बारगाहे इलाही से परवानए रिज़ा व ख़ुशनूदी व नजात पाया सब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के सदक़े व वसीले से पाया जब कि अगर हम रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दुन्या में तशरीफ़ आवरी से अब तक के ज़माने का ख़ाका ज़ेहन में लाएं तो हज़ारों या लाखों नहीं बल्कि ला तादाद ह़सनात (यानी नेकियां) हैं जो उम्मत बजा लाई और इन का अज्र यक़ीनन रसूले ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश होता है। इन नेकियों में से अगर हम सिर्फ़ मसाजिद ही की बात करें तो शुमार क़रीब ब मुह़ाल है।

इस वक़्त दुन्या भर में कितनी मसाजिद हैं, इन मसाजिद में पंज वक़्ता होने वाले अज़ानो इक़ामत, बा जमाअ़त नमाज़ें, ख़ुत़बाते जुम्आ़, नवाफ़िल का एहतेमाम, तिलावते क़ुरआने करीम, दुरूदो तस्बीह़, वाज़ो नसीह़त की मजालिस, एतिकाफ़े सुन्नतो नफ़्ल और दीगर कसीर ह़सनात ऐसी हैं जो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तेबाअ़ में मसाजिद में जारी हैं यक़ीनन इन सब नेकियों के आ़मिलीन के साथ साथ इन का अज्र रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश होता है।

अब दुन्या में मौजूद मसाजिद की तादाद का अन्दाज़ा लगाइए चुनान्चे 2019 की एक रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ दुन्या भर में 3.8 मिलियन यानी 38 लाख से ज़्यादा मसाजिद हैं और येह वोह रेकॉर्ड हैं जो मसाजिद हर मुल्क के सरकारी रेकॉर्ड में दर्ज हैं जब कि वोह मसाजिद जो गाऊं देहातों, जज़ीरों, मुसाफ़िर ख़ानों, होटलों, मार्केट्स और दीगर अ़वामी जगहों पर हैं जो बत़ौरे मस्जिद रजिस्टर्ड नहीं हैं उन का तो शुमार ही नहीं।

इन मसाजिद की बरकत से होने वाली सिर्फ़ एक नेकी यानी अज़ान ही का ह़िसाब लगाएं मसलन अगर कोई मुसलमान मर्द अज़ान का एक कलिमा सुन कर जवाब देता है तो ह़दीसे पाक की रौशनी में 2 लाख नेकियों का अज्र मिलता है और पांचों वक़्त की अज़ानो इक़ामत का ह़िसाब लगाएं तो सिर्फ़ एक मुसलमान नमाज़ी मर्द के लिए 3 करोड़ 24 लाख नेकियों की बिशारत है, अब अगर 2019 ईसवी की रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ ही मसाजिद की तादाद को शुमार करें तो इन में हज़ारों मसाजिद ऐसी हैं जिन में हर नमाज़ में कई कई सौ और हज़ार नमाज़ी होते हैं, अगर फ़ी मस्जिद औसत़न सिर्फ़ 50 अफ़राद भी अज़ानो इक़ामत का जवाब देने वाले शुमार करें तो 19 करोड़ अफ़राद बनते हैं जिन के रोज़ाना सिर्फ़ पंज वक़्ता अज़ानो इक़ामत के जवाब के अज्र का ह़िसाब लगाएं तो 6 हज़ार 156 ट्रीलियन नेकियों का अज्र बनता है।

याद रहे कि एक ट्रीलियन में 10 खरब होते हैं और एक खरब 100 अरब का होता है जब कि एक अरब 100 करोड़ का होता है।

येह तो इन्तेहाई मोह़तात़ अन्दाज़े के मुत़ाबिक़ सिर्फ़ अज़ानो इक़ामत के जवाब का ह़िसाब लगाया गया है जब कि दीगर करोड़ों नेकियां ऐसी हैं जिन में फ़राइज़, वाजिबात, नवाफ़िल और सुन्नतें शामिल हैं जिन पर क़ुरआनो ह़दीस में ढेरों ढेर अज्र की बिशारतें हैं, इन सब का अज्र भी रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में पेश होता है।

---

(1) دارمی، 1/141، حدیث:515 (2) مراٰۃ الجنان، 1/21 ملخصًا (3) ترمذی، 5/42، حدیث:3079 (4) بہار شریعت، 1/247۔



अह़कामे तिजारत

मुफ़्ती अबू मुह़म्मद अ़ली असग़र अ़त्तारी मदनी

प्यून (Peon) को टिप (Tip) वग़ैरा देना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि ऑफ़िस में जो तनख़्वाह दार प्यून वग़ैरा होते हैं उन्हें कंपनी का अ़मला उन के बॉस वग़ैरा टिप दे देते हैं जैसे कोई चीज़ मंगवाई तो उ़मूमन बचने वाले पैसे उन को दे देते हैं तो क्या येह देना, रिश्वत में आएगा ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : बाज़ अवक़ात येह होता है कि ग़रीब आदमी होने की वज्ह से उस की मदद कर देते हैं इस में तो कोई ह़रज नहीं लेकिन बाज़ अवक़ात येह जेह़न होता है कि येह मुझे लिफ़्ट नहीं करवाता या येह फ़ुलां के काम ज़्यादा करता है मेरी बात ज़्यादा नहीं सुनता, मैं इस को पैसे देना शुरूअ़ करूं तो येह मुझे ज़्यादा तवज्जोह देगा । इस तौ़र पर देना रिश्वत है यानी इस मौक़ेअ़ पर अपना काम निकलवाने के लिए पैसे देगा तो फिर येह रिश्वत होगा ।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

क़ब्रस्तान से फूल चुरा कर बेचना

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि क़ब्रस्तान से फूल चुरा कर बेचना कैसा ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : क़ब्रस्तान में लोग अपने प्यारों की क़ब्रों पर जो फूल डालते हैं, उस का बुन्यादी मक़्सद येह होता है कि येह पत्तियां जब तक तर रहेंगी तस्बीह़ करती रहेंगी और इस से मुर्दे को फ़ाइदा पहुंचेगा, उस की वेह़शत में कमी आएगी, उसे उन्सियत ह़ासिल होगी, वरना क़ब्रें कोई ज़ेबो ज़ेबाइश की जगह नहीं हैं कि यहां ख़ूब सूरती के लिए फूल डाले जाएं और ख़ूब सूरती के लिए डालने भी नहीं चाहिएं । जनाज़े पर फूल डालने की फ़तावा रज़विया में सराह़त मौजूद है कि ज़ीनत के लिए डालना मकरूह़ है, हां, तर चीज़ अल्लाह का ज़िक्र करती है लेहाज़ा इस से मुर्दे को राह़त पहुंचेगी इस मक़्सद से जनाज़े पर भी डालने में ह़रज नहीं ।

चुनान्चे आला ह़ज़रत علیہ الرحمہ लिखते हैं : "फूलों की चादर ब निय्यते ज़ीनत मकरूह, और अगर इस क़स्द (इरादे) से हो कि वोह ब हुक्मे अह़ादीस ख़फ़ीफ़ुल ह़ल व तुय्यिबुर्राइह़ा व मुस्बिह़े ख़ुदा व मूनिसे मैयत है तो ह़रज नहीं ।" (फ़तावा रज़विया, 9/137)

जहां तक इन फूलों को उठा कर बेचने का सवाल है तो फूल डालने वाले हरगिज़ येह बात पसन्द नहीं करेंगे कि कोई इन फूलों को उठा कर ले जाए, येह मिल्के

ग़ैर है, उठाने वाले की मिल्क नहीं है। न ही उस के लिए मुबाह किए गए हैं। लेहाज़ा किसी और शख़्स का इन्हें उठा कर ले जाना या फ़रोख़्त करना हरगिज़ जाइज़ नहीं।

नोट : मज़ारात पर जो फूल डाले जाते हैं उन का मुआ़मला क़दरे मुख़्तलिफ़ (थोड़ा अलग) है क्यूंकि वहां जो चीज़ें आती हैं उन का उ़र्फ़ (रवाज) जुदा है, आ़म क़ब्रों वाले इस जवाब को वहां मुनत़बक़ (Match) न किया जाए कुछ अह़काम में फ़र्क़ आ सकता है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

जाली (Fake) बिल बनवा कर मेडीकल एलाउन्स लेना

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि बाज़ कंपनियां अपने मुलाज़िमीन को मेडीकल एलाउन्स देती हैं येह इरशाद फ़रमाएं कि मुलाज़िम का जाली (बोगस) मेडीकल बिल बनवा कर कंपनी से एलाउन्स लेना कैसा है ? नीज़ बाज़ अवक़ात दवाएं बच जाती हैं तो उन का क्या हुक्म है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : नाह़क़ त़रीक़े से किसी का माल लेना जाइज़ नहीं। जो मरीज़ नहीं है वोह येह ज़ाहिर करे कि मैं मरीज़ हूं और इस त़रह़ जाली (नकली-झूटा) बिल बनवा कर एलाउन्स ले ले तो येह जाइज़ नहीं बल्कि येह ख़ियानत और धोका है जो कि ह़राम व गुनाह है।

अलबत्ता झूट और धोके के बग़ैर कंपनी के उसूलो क़वानीन के मुत़ाबिक़ सहूलत ह़ासिल करते हुवे दवाई ली और इस्तेमाल के बाद बच गई तो वोह मुलाज़िम ही की मिल्कियत है लेहाज़ा वोह रख सकता है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इलेक्ट्रिक कंपनी का यूनिट की अलग अलग रक़म चार्ज करना

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि इलेक्ट्रिक कंपनी तीन सो यूनिट तक के इस्तेमाल पर 15 रुपिये फ़ी यूनिट के ह़िसाब से पैसे चार्ज करती है और इस से ऊपर जो इस्तेमाल करे उस का 22 रुपिये फ़ी यूनिट के ह़िसाब से चार्ज करते हैं, यूं जैसे जैसे यूनिट बढ़ते हैं वोह क़ीमत बढ़ाते जाते हैं ह़ालांकि बिजली इस्तेमाल करने में तो कोई फ़र्क़ नहीं होता। फिर येह क़ीमत बढ़ाना कैसा है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जहां मिक़्दार की बुन्याद पर कमी बेशी होती है जैसे मोबाइल कंपनियों के मुख़्तलिफ़ पेकेजिज़ मुख़्तलिफ़ क़ीमत के होते हैं और उन में मुख़्तलिफ़ मिक़्दार में मेंटेस वग़ैरा होते हैं, इसी त़रह़ यहां भी है कि अगर तीन सो यूनिट इस्तेमाल होंगे तो येह पेकेज है और अगर पांच सो यूनिट इस्तेमाल होंगे तो येह पेकेज है।

यूं तक़्सीम करने से कोई शरई ख़राबी वाक़ेअ़ नहीं हो रही लेहाज़ा फ़िक़्ही एतेबार से येह दुरुस्त है।

अलबत्ता सारिफ़ (Consumer-गाहक) को येह ह़क़ ह़ासिल है कि वोह इस त़रह़ की क़ीमतों के ग्राफ़ पर मुतअ़ल्लिक़ा फ़ोर्म पर एतेराज़ कर सकता है कि क़ीमतें कम की जाएं या मसावी (Same) की जाएं। जैसा कि किसी को बरोडा से बम्बई जाना है और रेल का टिकट मेहंगा है जाने वाला अपनी रिज़ामन्दी से ख़रीद कर जाएगा येह लेन देन जाइज़ है लेकिन इस का येह ह़क़ है कि किसी फ़ोर्म पर येह आवाज़ उठाए कि टिकट सस्ता किया जाए, इस ह़क़ को ख़त्म नहीं किया जा सकता।

क़ीमतों के मुख़्तलिफ़ होने का येह मुआ़मला सिर्फ़ बिजली के बिल ही में नहीं बल्कि और कई मुआ़मलात में हम येह चीज़ें देखते हैं मसलन एक डॉक्टर किसी अच्छे अ़लाक़े में बैठता है तो उस की फ़ीस कुछ और होती है और वोही डॉक्टर जब किसी मुतवस्सित़ (Middle) अ़लाक़े में बैठता है तो उस की फ़ीस कुछ और होती है।

इसी त़रह़ एक चीज़ किसी बड़े शॉपिंग मॉल से ख़रीदें तो मेहंगी मिलेगी वोही चीज़ किसी आ़म दुकान से ख़रीदें तो सस्ती मिलेगी।

यूं मुख़्तलिफ़ लोगों ने मुख़्तलिफ़ चीज़ों के मुख़्तलिफ़ स्टेन्डर्ड बनाए होते हैं गाहक क़ीमत जानते हुवे चीज़ ख़रीदता है सौदा रिज़ामन्दी से होता है इसे नाजाइज़ अ़क़्द (सौदा) नहीं केह सकते जबकि दीगर वुजूहात से भी कोई शरई ख़राबी न पाई जाती हो।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم



(क़िस्त : 2)

क़ुरआन में मज़कूर पेशे

मौलाना अ़ब्दुर्रहमान अ़त्तारी मदनी

ईंट बनाने के पेशे का ज़िक्र : इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿فَاَوْقِدْ لِیْ یٰهَامٰنُ عَلَى الطِّیْنِ فَاجْعَلْ لِّیْ صَرْحًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ हामान मेरे लिए गारा पका कर एक महल बना ।[1] इस आयत का पस मन्ज़र कुछ यूं है कि ह़ज़रते सैयदना मूसा عَلَیْهِ السَّلَام ने फ़िरऔ़न को **अल्लाह** पाक के एक होने पर ईमान लाने और सिर्फ़ उसी की इबादत करने की दावत दी तो इस पर फ़िरऔ़न ने इन्कार करते हुवे अपने वज़ीर हामान से कहा था कि ऐ हामान ! मेरे लिए आग पर गारे की ईंट तैयार करो और एक इन्तेहाई ऊंचा महल बनाओ, शायद मैं मूसा के ख़ुदा को झांक लूं । दर अस्ल फ़िरऔ़न ने येह गुमान किया था कि (مَعَاذَاللّٰه) **अल्लाह** पाक के लिए मकान है और उस का कोई जिस्म है जिस तक पहुंचना उस के लिए मुमकिन है, इस लिए उस ने हामान को इमारत बनाने का हुक्म दिया, चुनान्चे, हामान ने फ़िरऔ़न के हुक्म पर अ़मल करते हुवे हज़ारहा कारीगर और मज़दूर जम्अ़ किए, ईंटे बनवाईं और तामीराती सामान जम्अ़ कर के इतनी बुलन्द इमारत बनवाई कि (उस वक़्त) दुन्या में उस के बराबर कोई न थी । **केहते हैं कि दुन्या में सब से पेहले ईंट बनाने वाला हामान है, येह सन्अ़त** (Industry-**उद्योग**) **इस से पेहले न थी ।**[2]

ज़ेवर बनाने के काम का ज़िक्र : इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْ حُلِیِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मूसा के बाद उस की क़ौम अपने ज़ेवरों से एक बछड़ा बना बैठी बेजान का धड़ गाय की त़रह़ आवाज़ करता ।[3] इस आयत का पस मन्ज़र कुछ यूं है कि ह़ज़रते सैयदना मूसा عَلَیْهِ السَّلَام जब **अल्लाह** पाक से कलाम करने के लिए कोहे त़ूर पर तशरीफ़ ले गए तो आप के जाने के 30 दिन बाद सामरी ने बनी इसराईल से वोह तमाम ज़ेवरात जम्अ़ कर लिए जो इन्हों ने अपनी ईद के दिन क़िब्ति़यों (यानी फ़िरऔ़न की क़ौम) से इस्तेमाल की ख़ातिर लिए थे । फ़िरऔ़न चूंकि अपनी क़ौम के साथ हलाक हो चुका था, इस लिए येह ज़ेवरात बनी इसराईल के पास थे और लोग सामरी की बात को अहम्मिय्यत देते और इस पर अ़मल भी करते थे और **सामरी चूंकि सोने को ढालने का काम करता था इस लिए उस ने तमाम सोने चांदी को ढाल कर उस से एक बे जान बछड़ा बना लिया** (और बनी इसराईल उसे पूजने लगे)[4]

शीशे के काम का ज़िक्र : इरशादे बारी तआ़ला है : ﴿قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِیْرَا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सुलैमान ने फ़रमाया : येह तो एक चिकना सेह़न है शीशों जड़ा ।[5] इस आयत का पस मन्ज़र कुछ यूं है कि मलिका बिल्क़ीस जब ह़ज़रते सैयदना सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام के पास आईं तो उन से कहा गया कि सेह़न में आ जाएं, उस सेह़न के वस्त़ में ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام तख़्त पर जल्वा अफ़रोज़ थे, **वोह सेह़न शफ़्फ़ाफ़ शीशे का बना हुवा था और उस के नीचे पानी जारी था जिस में मछलियां तैर रही थीं,** मलिका बिल्क़ीस ने जब उस सेह़न को देखा तो वोह समझीं कि येह गेहरा पानी है, इस लिए उन्हों ने अपनी पिन्डलियों से कपड़ा ऊंचा कर लिया ताकि पानी में चल कर ह़ज़रते सैयदना सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام के पास आ सकें । इस पर ह़ज़रते सैयदना सुलैमान عَلَیْهِ السَّلَام ने उन से फ़रमाया था : **येह पानी नहीं बल्कि येह तो शीशों से जड़ा हुवा एक मुलाइम सेह़न है ।**[6]

---

(1) پ20، القصص:38 (2) صراط الجنان، 7/284، 285 ملخصًا (3) پ9، الاعراف:148 (4) صراط الجنان، 3/434، 435 ملخصًا (5) پ19، النمل:44 (6) صراط الجنان، 7/208 ملخصًا۔

ह़ज़रते सैयदना क़तादा बिन नोमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

नबी ए पाक के एक सह़ाबी फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे आ़ली में एक कमान तोह़फ़तन पेश की गई थी, नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह कमान ग़ज़वए उहुद के दिन मुझे अ़त़ा फ़रमा दी, मैं ने नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे खड़े हो कर इस क़दर तीर अन्दाज़ी की, कि उस का सिरा टूट गया लेकिन मैं नबिय्ये मोह़तरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आगे से नहीं हटा और वहीं खड़ा रहा कि कोई तीर लगे तो मुझे लगे । जब भी कोई तीर नबिय्ये रेह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब बढ़ता तो मैं अपना सर आगे कर देता ताकि नबिय्ये सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरे को बचा लूं और उस वक़्त मैं तीर अन्दाज़ी नहीं कर रहा था आख़िरे कार एक तीर मेरी आंख में लगा जिस की वज्ह से मेरी आंख की पुतली निकल कर मेरे रुख़्सार (गाल) पर आ गई, मैं उसे अपनी हथेली पर रख कर तेज़ी से नबिय्ये अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब बढ़ा, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी आंख को मेरी हथेली पर देखा तो चश्माने अक़्दस से आंसू निकल आए[1] फिर इरशाद फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो सब्र करो और तुम्हारे लिए जन्नत है, अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिए आंख को उस की जगह पर रख दूं और अल्लाह पाक से दुआ़ कर दूं कि आंख की रौशनी कुछ कम न हो, मैं ने अ़र्ज़ की : या नबियल्लाह ! बेशक जन्नत बहुत बड़ा अज्र है और अ़त़ा है लेकिन मुझे अपनी ज़ौजा से मह़ब्बत है और येह डर है कि अगर उस ने मुझे इस ह़ालत में देखा तो वोह मुझे नापसन्द करेगी, इस लिए मुझे येह पसन्द है कि आप आंख को दुरुस्त फ़रमा दीजिए और अल्लाह से मेरे लिए जन्नत भी मांग लीजिए । हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं दुआ़ कर दूंगा । फिर नबिय्ये अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आंख को उस की जगह पर रख दिया और अपने प्यारे सह़ाबी के लिए जन्नत की दुआ़ कर दी । एक रिवायत में है कि यूं दुआ़ की : ऐ अल्लाह ! बेशक, इस ने अपने चेहरे के ज़रीए तेरे नबी को सुर्ख़ रू रखा, तू इस आंख को दोनों आंखों में ज़्यादा ह़सीन बना दे और इस की नज़र तेज़ कर दे । इस दुआ़ की बरकत उन सह़ाबी को येह मिली कि उन की वोह आंख दूसरी आंख के मुक़ाबले में ज़्यादा ह़सीन हो गई, और दूसरी के मुक़ाबले में इस आंख की नज़र भी ज़्यादा तेज़ हो गई और अगर दूसरी आंख में आशोबे चश्म की शिकायत होती तो येह वाली आंख आशोबे चश्म से मेह़फ़ूज़ रेहती थी ।[2]

बाज़ रिवायतों में है कि बुढ़ापे में इन की ज़ख़्मी होने वाली आंख दूसरी आंख के मुक़ाबले में ज़्यादा अच्छी, क़वी और तवाना थी ।[3]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मैदाने जंग में जान हथेली पर रख कर नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने ढाल बन कर खड़े होने वाले, जांबाज़ अ़ज़ीम अन्सारी सह़ाबी ह़ज़रते सैयदना अबू उ़मर क़तादा बिन नोमान ज़फ़री बदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ थे ।[4]



फ़ज़ाइलो कमालात : इल्मी मैदान में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आ़लिम फ़ाज़िल अन्सार सह़ाबा ए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की सफ़ में खड़े नज़र आते हैं ।[5] जब कि जंगी मैदान में आप का शुमार तीर अन्दाज़ सह़ाबा में होता है, आप उन 70 सह़ाबा ए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में शामिल हैं जिन्हों ने हिजरते नबविय्या से क़ब्ल मिना की घाटी में मुअ़ज़्ज़ज़ नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस पर बैअ़त की थी,[6] आप ने नबिय्ये मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हम रिकाबी में तमाम ग़ज़वात में शिर्कत करने का एज़ाज़ ह़ासिल किया, फ़त्ह़े मक्का के दिन क़बीलए बनी ज़फ़र का झन्डा आप ने थाम रखा था[7] मुसलमानों के पेहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते सैयदना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने 12 हिजरी में ह़ज की अदाएगी की तो मदीने में अपना नाइब आप को बनाया,[8] बैतुल मुक़द्दस की फ़त्ह़ के मौक़ेअ़ पर जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुल्के शाम की जानिब रवाना हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के आगे आगे रवाना हुवे ।[9]

पूरी रात तिलावत : एक रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूरी रात सूरए इख़्लास पढ़ते हुवे गुज़ार दी, फिर इस बात का ज़िक्र प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने किया तो आप ने इरशाद फ़रमाया : क़सम उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! बेशक येह सूरत तिहाई या निस्फ़ (आधे) क़ुरआन के बराबर है ।[10]

शैत़ान को बाहर निकाल दिया : ह़ज़रते क़तादा बिन नोमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक रात बहुत अन्धेरा छाया हुवा था और शदीद बारिश हो रही थी, मैं ने सोचा कि इस रात को ग़नीमत जान कर इ़शा की नमाज़ नबिय्ये बरह़क़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अदा करूं, नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद नबी ए हादी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे करम मुझ पर पड़ी तो इस्तिफ़सार फ़रमाया : ऐ क़तादा ! क्या तुम्हारे लिए आस्मान पर घटा नहीं छाई हुई ? मैं ने अ़र्ज़ की : मेरे मां-बाप आप पर क़ुरबान ! मैं आप का क़ुर्ब (नज़दीकी) पाना चाहता था, फिर मुझे नबिय्ये सादिक़ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने खजूर की शाख़ अ़त़ा की और फ़रमाया : येह शाख़ ले लो, तुम इस के ज़रीए मेह़फ़ूज़ रहोगे, जब तुम बाहर निकलोगे तो येह तुम्हारे लिए दस (हाथ) आगे की त़रफ़ रौशन हो जाएगी और दस (हाथ) पीछे की जानिब रौशन हो जाएगी, शैत़ान तुम्हारे पीछे तुम्हारे घर वालों के साथ है जब तुम घर पहुंच जाओ तो घर के पीछे की जानिब से दाख़िल होना और उस को इस शाख़ से मारना, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं बाहर निकला तो शाख़ शम्अ़ की मिस्ल रौशन हो गई, मैं उस की रौशनी में चलता हुवा अपने घर पहुंचा तो घर वाले सो रहे थे मैं ने कोने में नज़र की तो वहां शैत़ान चूहे की सूरत में था मैं उस को उसी शाख़ से मुसल्सल मारता रहा यहां तक कि वोह घर से निकल गया ।[11]

अपने बाग़ के खजूरों की इजाज़त : ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का खजूरों का एक बाग़ था जिस की एक चाबी आप के पास रेहती थी जब खजूरें सुर्ख़ हो गईं तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस बाग़ की एक और चाबी बनवाई और अपने मुहाजिर भाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आए और केहने लगे : मेरे पास बाग़ की एक चाबी है और बाग़ की येह एक चाबी तुम्हारे लिए है जब आप बाहर आए तो आप की छोटी बेटी आप के पीछे पीछे चली आई, जब आप ने दरवाज़ा खोला तो वोह बच्ची अन्दर दाख़िल हो गई और खजूरें जम्अ़ करने लगी, आप की नज़र जूं ही बच्ची पर पड़ी तो उसे खजूरें लेने से बिल्कुल मन्अ़ कर दिया गोया कि उस ने एक खजूर भी नहीं ली, लेकिन आप अपने मुहाजिर भाई के पास आए और केहने लगे : मेरी बच्ची इस बाग़ में कभी दाख़िल हो जाती है और खजूरें ले लेती है, क्या तुम हमें इस की इजाज़त देते हो ? मुहाजिर सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने (ख़ुश दिली से) जवाब दिया : इजाज़त है ।[12]

वफ़ात : सिने 23 या 24 हिजरी में ह़ज़रते क़तादा बिन नोमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस जहाने फ़ानी से कूच किया तो आप की उ़म्र 65 बरस थी, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई जब कि (आप को क़ब्र में उतारने के लिए) आप के मां जाए भाई ह़ज़रते सैयदना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आप की क़ब्र में उतरे थे ।[13]

मरविय्यात की तादाद : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से 7 अह़ादीस रिवायत की गई हैं इन में एक ह़दीस को इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने रिवायत किया है ।[14]

---

(1) معجم کبیر، 19/8 (2) زرقانی علی المواہب، 7/69، شرح الشفاء لعلی القاری، 1/654، معجم کبیر، 19/8 ملتقطاً (3) دلائل النبوۃ للبیہقی، 3/253 (4) سیر اعلام النبلاء، 4/10 (5) الوافی بالوفیات، 24/142 (6) مستدرک للحاکم، 4/345 (7) مستدرک للحاکم، 4/345 (8) تاریخ ابن الخیاط، ص65 (9) سیر اعلام النبلاء، 4/11 (10) مسند احمد، 4/32، حدیث: 11115 (11) معجم کبیر، 19/5، تاریخ ابن عساکر، 49/284 (12) مختصر تاریخ دمشق، 21/73 (13) الوافی بالوفیات، 24/142 (14) تہذیب الاسماء واللغات، 2/369۔



ग़ौसे पाक और एह़या ए दीन

मौलाना मुनइ़म अ़त्तारी मदनी

नाम और अलक़ाब की कसरत किसी के कसीरुस्सिफ़ात होने पर दलालत करती है । ह़ुज़ूर सैयदी ग़ौसे आज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी उन शख़्सियात में शामिल हैं जिन की हमह जिहत शख़्सियत को कई अलक़ाबात दिए गए हैं । ग़ौसे समदानी, मेह़बूबे सुब्ह़ानी, क़िन्दीले नूरानी, शेहबाज़े ला मकानी, ग़ौसे आज़म, ग़ौसुल इन्से वल जान, मुह़युल मिल्लते वद्दीन वल ईमान जैसे अ़ज़ीमुश्शान अलक़ाब आप ही की शख़्सियत के लिए बोले जाते हैं । आप के अलक़ाबात में से एक मुह़युद्दीन भी है जिस के माना दीन को ज़िन्दा करने वाला, दीन को जिला बख़्शने वाला, दीन फैलाने वाला । येह लक़ब अपने माना ओ मफ़हूम के एतेबार से बड़ी वुस्अ़त रखता है । ग़ौसे पाक ने दीने इस्लाम की इशाअ़त व तरवीज में जो किरदार अदा किया है वोह अपनी मिसाल आप है आप ने कई त़रीक़ों और जिहतों से एह़या ए दीन में किरदार अदा किया है, आइए ! इन में से बाज़ जिहात से मुतअ़ल्लिक़ जानते हैं :

किरदार के ज़रीए एह़या ए दीन : ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه सिद्क़ व सच्चाई के पैकर, इन्तेहाई सुथरे किरदार के मालिक और ग़रीब परवर शख़्सियत थे । आप ने अपनी उ़म्र के किसी ह़िस्से में भी झूट का सहारा न लिया, बचपन में डाकू लूटने आए तो उन्हें भी सच बताया कि मेरे पास चालीस दीनार हैं । और ग़रीब परवरी ऐसी थी कि एक मरतबा एक ग़रीब बन्दे के पास किराए के पैसे न थे तो मल्लाह़ ने उसे कश्ती में न बिठाया, आप को मालूम हुवा तो उसे तीस दीनार भेज कर फ़रमाया : आइन्दा किसी ग़रीब को दरिया उ़बूर कराने पर इन्कार न करना ।[1]

अफ़्कार के ज़रीए एह़या ए दीन : आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه त़वील अ़र्से तक अपने मलफ़ूज़ात व अफ़्कार के ज़रीए लोगों को गुमराही से बचाते रहे, आप की मजलिस वाज़ो नसीह़त का ख़ज़ीना और गुमराहों के लिए हिदायत का ज़ीना थी । आप की महाफ़िल में ज़िन्दगी के कसीर शोबों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले अफ़राद शरीक होते, उ़लमा ओ फ़ुक़हा सब जम्अ़ होते, आप की मजलिसे वाज़ का येह आ़लम था कि बयक वक़्त चार चार सौ अफ़राद क़लम व दवात ले कर ह़ाज़िर होते और आप के मल्फ़ूज़ात तेह़रीर करते जबकि 40 साल मख़्लूक़े ख़ुदा में वाज़ो नसीह़त के मदनी फूल लुटाए ।[2]

करामात के ज़रीए एह़या ए दीन : आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की करामात ह़द्दे तवातुर तक पहुंची हुई हैं । इस पर उ़लमा का इत्तेफ़ाक़ है कि जितनी करामात आप से ज़ाहिर हुई हैं आप के इ़लावा किसी भी साह़िबे विलायत से ज़ुहूर में नहीं आईं ।[3]

बयानात और वाज़ो नसीह़त के ज़रीए एह़या ए दीन : आप ने वाज़ो तब्लीग़ के ज़रीए दीने इस्लाम के लिए बे शुमार ख़िदमात सर अन्जाम दीं, आप का कोई बयान ऐसा नहीं जिस में लोग इस्लाम क़बूल न करते हों और चोर, डाकू, फ़ासिक़, फ़ाजिर आप के हाथ पर तौबा न करते हों ।[4] आप हफ़्ते में 3 दिन बयान करते, जिस में बे शुमार लोग और उ़लमा ओ सुलह़ा ह़ज़रात तशरीफ़ लाते, आप के वाज़ और नसीह़त को सुनने के लिए आने वालों की तादाद के बारे में मन्क़ूल है कि बिल उ़मूम सत्तर हज़ार से ज़ाइद लोग आप के बयान में शरीक हुवा करते थे, जिन

में इराक़ के उ़लमा ओ फ़ुक़हा, मशाइख़ और सूफ़िया ए किराम भी होते थे ।[5]

तदरीस के ज़रीए एह़या ए दीन : आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तेरह उ़लूम पढ़ा करते थे, आप के मद्रसे में लोग आप से तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह और इल्मुल कलाम वग़ैरा पढ़ते थे, दोपहर से पेहले लोगों को तफ़्सीर, ह़दीस, फ़िक़्ह, कलाम, उसूल और नह्व पढ़ाते थे और ज़ोहर के बाद आप तजवीदो क़िराअत के साथ क़ुरआने करीम पढ़ाया करते थे ।[6]

तसानीफ़ के ज़रीए एह़या ए दीन : आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने दीने इस्लाम की ख़िदमत और उम्मते मुस्लिमा की रेहनुमाई के लिए कई किताबें तस्नीफ़ फ़रमाईं, अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन बग़दादी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने रिसाले तज़्किरए क़ादरिया में ग़ौसे आज़म की 7 किताबों के नाम तेह़रीर फ़रमाने के बाद फ़रमाते हैं कि मोतबर रिवायात से मालूम हुवा कि आप की तस्नीफ़ कर्दा कुतुब की तादाद 69 है ।[7]

फ़तवा नवेसी के ज़रीए एह़या ए दीन : फ़तवा नवेसी में आप को वोह कमाल ह़ासिल था कि उस दौर के बड़े बड़े उ़लमा, फ़ुक़हा और मुफ़्तियाने किराम भी आप के ला जवाब फ़तवों से ह़ैरान रेह जाते थे । इन्तेहाई मुश्किल मसाइल का निहायत आसान और उ़म्दा जवाब देते, आप ने कई सालों तक दर्सो तदरीस और फ़तावा नवेसी में दीन की ख़िदमत सर अन्जाम दी, इस दौरान जब आप के फ़तावा उ़लमा ए इराक़ के पास लाए जाते तो वोह आप के जवाब पर ह़ैरत ज़दा रेह जाते ।

अल्लाह करीम, ग़ौसे आज़म के सदक़े हमें भी दीने इस्लाम की ख़ूब ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صلَّى الله عليه واٰله وسلَّم

---

(1)اخبارالاخیار، ص18(2)اخبار الاخیار، ص9تا12(3)نزہۃ الخاطر الفاتر، ص23
(4)قلائد الجواہر، ص18(5)قلائد الجواہر، ص18ملخصاً(6)بہجۃ الاسرار، ص225 ملخصاً(7)سیرتِ غوث اعظم، ص61ملتقطاً۔

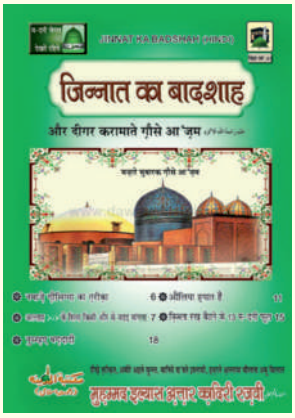

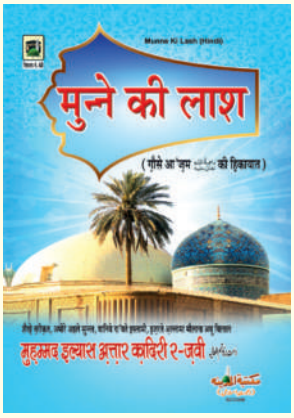

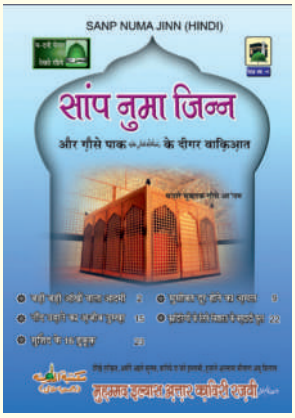

सरकारे ग़ौसे पाक की करामतों पर मुश्तमिल येह तीन रिसाले मक्तबतुल मदीना से ह़दियतन ह़ासिल कीजिए ।



मज़ार आग़ा शहीद ह़ज़रते सैयद बदीउ़द्दीन गीलानी क़ादरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه



मज़ार ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद काज़िम क़लन्दर काकोरवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए

मौलाना अबू माजिद मुह़म्मद शाहिद अ़त्तारी

रबीउ़ल आख़िर इस्लामी साल का चौथा महीना है। इस में जिन सह़ाबा ए किराम, औलिया ए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमा ए इस्लाम का विसाल हुवा, इन में से 11 का मज़ीद तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان :

1 सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते मिस्वर बिन मख़रमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की पैदाइश सिने 2 हिजरी में हुई। आप सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के भान्जे, सिक़ह रावी ए ह़दीस, साह़िबे इ़ल्मो फ़ज़्ल, ख़ैर ख़्वाही ए मुस्लिम से सरशार ताजिर, साइमुद्दह्र, ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़बादते शाक़्क़ा के पैकर थे। ख़िलाफ़ते ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا में आप के वज़ीर व मुशीर थे, मुह़ासरा ए मक्कए अव्वल में रबीउ़ल अव्वल या यकुम रबीउ़ल आख़िर 64 हिजरी को शहीद हुवे। जन्नतुल माला में दफ़्न किए गए।[1]

शुहदा ए मुह़ासरा ए मक्कए मुकर्रमा अव्वल :

यज़ीदी लश्कर ने 25 या 26 मुह़र्रमुल ह़राम 64 हिजरी को ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और आप के रुफ़क़ा का मक्कए मुकर्रमा में मुह़ासरा किया जो कि तक़रीबन 64 दिन जारी रहा, इस में कई सह़ाबा और शहीद हुवे, येह मुह़ासरा 10 रबीउ़ल आख़िर 64 हिजरी को यज़ीद के मरने की ख़बर पर ख़त्म हुवा।[2]

औलिया ए किराम رحمهم الله السَّلام :

2 आग़ा शहीद ह़ज़रते सैयद बदीउ़द्दीन गीलानी क़ादरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ानदाने ग़ौसे आज़म के चश्मो चराग़, वलिय्ये कामिल और इ़ल्मो अ़मल के पैकर थे, आप बग़दाद से बर्रे अ़ज़ीम में तशरीफ़ लाए, तेह़सील शकरगढ़ में 5 रबीउ़ल आख़िर 904 हिजरी को शहीद हुवे, मज़ार सहारी (तेह़सील शकरगढ़, ज़िल्अ़ नारोवाल, पंजाब) मरजए़ ख़ासो आ़म है।[3]

3 शेहज़ादा ए ख़ानदाने ग़ौसिया ह़ज़रते शैख़ सैयद शरफ़ुद्दीन क़ासिम ह़मवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ानदाने ग़ौसे आज़म के चश्मो चराग़, शैख़े वक़्त, जव्वाद व सख़ी और मुरीदीन की तरबियत व फ़लाह़ के लिए कोशिश करने वाले थे, आप का विसाल 6 रबीउ़ल आख़िर 916 हिजरी को हुवा।[4]

4 वलिय्ये कामिल ह़ज़रते सैयद मीरां बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ानदाने जलालिया बुख़ारिया के फ़रज़न्द, साह़िबुल फ़ैज़ और सूरत (सूबा गुजरात) हिन्द के अहलुल्लाह से थे। आप का विसाल 19 रबीउ़ल आख़िर 1221 हिजरी को हुवा, मज़ार शरीफ़ ओलपाड़ सूरत में है।[5]

5 नसीरुल मिल्लत वद्दीन ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद काज़िम क़लन्दर काकोरवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत 1158 हिजरी को देहली में हुई और 21 रबीउ़ल आख़िर 1221 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार मुबारक अन्दरूने तकिया शरीफ़ काकोरी (नज़्द लखनऊ यूपी) हिन्द में है जो ख़ानक़ाहे काज़िमिया के नाम से मश्हूर है। आप आ़लिमे बा अ़मल, शैख़े त़रीक़त, क़ुत़्बुर्रशाद, साह़िबे दीवान शाइ़र, सिलसिला क़लन्दरिया के अ़ज़ीमुल मर्तबत बुज़ुर्ग और बानी ए ख़ानक़ाहे काज़िमिया तकिया शरीफ़ हैं। आप का दीवान नग़मातुल असरार (सानत रस) शाएअ़ शुदा है।[6]



मज़ार ह़ज़रते अल ह़ाज शाह मुह़म्मद तैग़ अ़ली आबादानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه



मज़ार ह़ज़रते मौलाना पीर अ़ब्दुल ग़नी साबरी होशियारपुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

6 पीरे त़रीक़त ह़ज़रत मियां मुराद अ़ली चिश्ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की पैदाइश आड़ा (मौजूदा नाम मोहड़ा माड़ी, नज़्द कोनतरीला, तेह़सील गोजरख़ान, ज़िल्अ़ रावलपिन्डी) में 1261 हिजरी को हुई और पेहली रबीउ़ल आख़िर 1343 हिजरी को वफ़ात पाई, मोहड़ा माड़ी क़ब्रस्तान में दफ़्न किए गए, आप सिलसिलए चिश्तिया निज़ामिया के शैख़े त़रीक़त, ख़्वाजा शम्सुल आ़रिफ़ीन के ख़लीफ़ा और मुसलमानों के ख़ैरख़्वाह थे।[7]

7 शैख़ुल मशाइख़, सरकारे अक़्दस ह़ज़रते अलह़ाज शाह मुह़म्मद तैग़ अ़ली आबादानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत 1300 हिजरी में हुई और पेहली रबीउ़ल आख़िर 1378 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ारे मुबारक सुरकान्ही शरीफ़ (ज़िल्अ़ मुज़फ़्फ़र पुर, बिहार, हिन्द) में मरजए ख़लाइक़ है। आप ने मद्रसा आ़लिया कलकत्ता से तालीम ह़ासिल की, सिलसिला आबादानिया में बैअ़तो ख़िलाफ़त का शरफ़ पाया, सिलसिला फ़रीदिया और मुजीबिया से भी ख़िलाफ़त ह़ासिल हुई। आप पाबन्दे शरअ़ और मुत्तबेएसुन्नत बुज़ुर्ग, बानी ए मद्रसा इल्मिय्या अन्वारुल उ़लूम व ख़ानक़ाहे आबादानिया सुरकान्ही हैं।[8]

उ़लमा ए इस्लाम رحمهم الله السلام :

8 साक़ी ए इल्मो इ़रफ़ान ह़ज़रते मौलाना सुल्त़ान मह़मूद सियालवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत 1245 हिजरी को सुदवाल ज़िल्अ़ चकवाल के एक इल्मी घराने में हुई और 29 रबीउ़ल आख़िर 1317 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार सुदवाल में है। आप उ़लूमे अ़क़्लिया व नक़्लिया के माहिर, बेहतरीन मुदर्रिस, ख़लीफ़ा ए शम्सुल आ़रिफ़ीन पीर सियाल लजपाल, साह़िबे करामत वलिय्युल्लाह थे। अ़र्सए दराज़ तक अपने आबाई मद्रसे में तदरीस फ़रमाई।[9]

9 रेहबरे शरीअ़तो त़रीक़त ह़ज़रते मौलाना पीर अ़ब्दुल ग़नी साबरी होशियार पुरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत 1311 हिजरी को दसोहा, ज़िल्अ़ होशियारपुर (मशरिक़ी पंजाब, हिन्द) में हुई और 8 रबीउ़ल आख़िर 1379 हिजरी लाहौर में विसाल फ़रमाया, बादामी बाग़ रेल्वे स्टेशन से शिमाल की जानिब मज़ार वाक़ेअ़ है। आप आ़लिमे दीन, मुतह़र्रिक मुबल्लिग़, कसीरुस्सफ़र, मुह़िब्बुल उ़लमा और ह़ज़रते शाह सिराजुल ह़क़ गुरदासपुरी चिश्ती के ख़लीफ़ा थे।[10]

10 उस्ताज़ुल उ़लमा, मोह़द्दिसे वक़्त ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अय्यूब ख़ान जमाअ़ती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत ज़ख़ी चार बाग़ (अक्बरपुरा, पेशावर) के एक इल्मी घराने में 1250 हिजरी को हुई और यहीं 7 रबीउ़ल आख़िर 1335 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आप उ़लूमे माक़ूलो मन्क़ूल के जामेअ़, उ़लमा ए ह़रमैन से सनदे मक्की ह़ासिल करने, मस्जिदे नबवी में दर्से ह़दीस की सआ़दत पाने वाले, कई कुतुब के मुसन्निफ़, पेशावर के मशहूर आ़लिमे दीन और ख़लीफ़ा ए अमीरे मिल्लत थे, ज़िन्दगी भर मद्रसा ए तालीमुल क़ुरआन पेशावर में दर्से ह़दीस देते रहे। किताब "تُحْفَةُ الْفُحُول فِی الْاِسْتِغَاثَةِ بِالرَّسُول" आप की यादगार है।[11]

11 आ़लिमे शहीर मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद यार ख़लीक़ फ़ारूक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादत जोड़ा कलां (शाहपुर, ज़िल्अ़ सरगोधा) में 1240 हिजरी को पैदा हुवे और 14 रबीउ़ल आख़िर 1356 हिजरी को लाहौर में विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन इछरा मोड़ लाहौर के क़ब्रस्तान में हुई। आप जैयद आ़लिमे दीन, उस्ताज़ुल उ़लमा, मुफ़्ती ए इस्लाम, शाइ़र व अदीब, मुसन्निफ़े कुतुब और ख़त़ीबे सुनेहरी मस्जिद थे, "सलात मसऊ़दी" आप की किताब है।[12]

---

(1) الاستیعاب، 3/455، تاریخ ابن عساکر، 58/162، 163، 169، الزہد للامام احمد، ص 220 (2) اسد الغابۃ، 3/246، الاستیعاب، 3/456

(3) एन्साइक्लोपीडिया औलिया ए किराम, 1/87 ता 97

(4) اتحاف الاکابر، ص 402 (5) تذکرۃ الانساب، ص 235

(6) तज़्किरा मशाहीरे काकोरी, स. 362 ता 364 (7) فوز المقال، 7/360، 367

(8) موسوعہ اسلامیہ، شخصیات، 21/159 تا 172

(9) तज़्किरा उ़लमा ए एहले सुन्नत ज़िल्अ़ चकवाल, स. 30, 32

(10) तज़्किरा अकाबिरे एहले सुन्नत, स. 252 ता 254

(11) तज़्किरा ख़ुलफ़ा ए अमीरे मिल्लत, स. 35

(12) तज़्किरा उ़लमा ए एहले सुन्नत व जमाअ़त लाहौर, स. 277

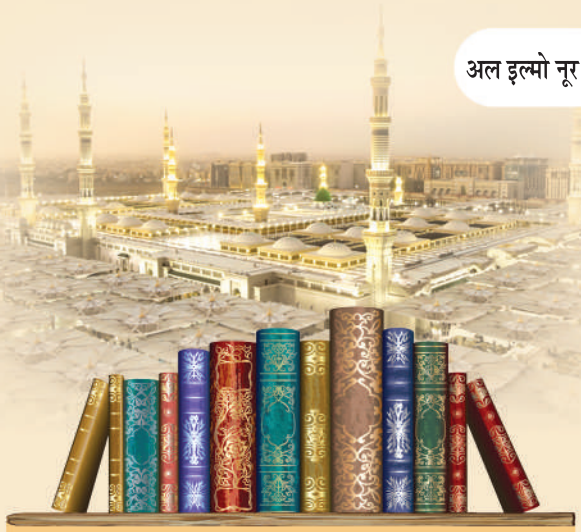

अरबईन

मौलाना इब्ने जीलानी मदनी

पेहली सदी हिजरी से ही अइम्मए किराम ने ह़दीसे मुबारका نَضَّرَ اللّٰهُ اِمْرَاً سَمِعَ مِنَّا حَدِيثًا فَحَفِظَهٗ حَتّٰى يُبَلِّغَهٗ यानी अल्लाह पाक उस शख़्स को तरो ताज़ा रखे जिस ने मेरी कोई ह़दीस सुनी फिर उसे याद कर लिया यहां तक कि उसे (दूसरों तक) पहुंचा दिया ।"[1] में मज़कूर फ़ज़ीलत का मिस्दाक़ ठेहरने के लिए अह़ादीसे त़य्यिबात को उम्मत तक पहुंचाने के लिए ख़ूब ख़ूब कोशिशें कीं और अह़ादीसे मुबारका का ऐसा अ़ज़ीमुश्शान गुलशन तरतीब दिया जिस में सैर करने वाला अपने क़ल्बो नज़र को त़रावत (ठन्डक व ताज़गी) बख़्शता है । सह़ीह़, सुनन, मुस्नद, मुस्तदरक कुतुबे ह़दीस की येह सभी अक़्साम उसी गुलशन के दिलनशीन फूल हैं, इन्ही फूलों में से एक मुनफ़रिद फूल "अरबईन" भी है यानी किसी मौज़ूअ़ पर चालीस अह़ादीसे त़य्यिबात जम्अ़ करना ।

अरबईन नवेसी की फ़ज़ीलत : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मेरी उम्मत में से जो शख़्स चालीस अह़ादीस ह़िफ़्ज़ (याद) करेगा जिन से उम्मत नफ़अ़ उठाए अल्लाह पाक उसे बरोज़े क़ियामत फ़क़ीह व आ़लिम की ह़ालत में उठाएगा ।"

ह़िफ़्ज़ से मुराद यहां चालीस अह़ादीस उम्मत के लिए नक़्ल व रिवायत (Quote) करना है अगर्चे ज़बानी याद न की हों और इन के मआ़नी ओ मफ़ाहीम से वाक़िफ़ियत भी न हो क्यूंकि नक़्ल व रिवायत के ज़रीए़ ही मुसलमान नफ़अ़ उठाएंगे ।[2]

येह ह़दीसे मुबारका कई सह़ाबा ए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से अल्फ़ाज़ के कुछ फ़र्क़ के साथ मरवी है : ह़ज़रते अ़ली व इब्ने मसऊ़द व मुआ़ज़ बिन जबल व अबुद्दर्दा व अबू सईद व अबू हुरैरा व अबू उमामा व इब्ने अ़ब्बास व इब्ने उ़मर व इब्ने अ़म्र व जाबिर बिन समुरह व अनस व बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم । और इन सभी रिवायात के अल्फ़ाज़ का जाइज़ा लिया जाए तो इन से दर्जे ज़ैल फ़ज़ाइल मालूम होते हैं : बरोज़े क़ियामत फ़ुक़हा और उ़लमा के गिरोह में या ख़ुद फ़क़ीह और आ़लिम बन कर उठेगा, नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के लिए शाफ़ेअ़ और शहीद (यानी गवाही देने वाले) होंगे, जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए, गिरोहे उ़लमा में उस का शुमार होता है और शहीदों में उठाया जाएगा ।

ख़याल रहे येह फ़ज़ाइल आपस में मुख़ालिफ़ नहीं हैं बल्कि इन में तत़बीक़ मुमकिन है जैसा कि इमाम इब्ने दक़ीक़ुल ईद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : चालीस अह़ादीस को नक़्ल करने वाले मुख़्तलिफ़ मरातिब के होंगे लेहाज़ा उन के एतेबार से बिशारात मुख़्तलिफ़ वारिद हुई हैं ।

अरबईन नवेसी के मक़ासिद : इस का अव्वलीन मक़्सद अ़मल बिल ह़दीस के ज़रीए़ मज़कूरा बाला फ़ज़ाइल का ह़ुसूल था । इस के साथ साथ ह़दीसे मुबारका "मौजूद ग़ाइब तक पहुंचा दे" पर अ़मल और "अल्लाह पाक उस शख़्स को तरो ताज़ा रखे जिस ने हम से कोई ह़दीस सुनी फिर उसे याद कर लिया यहां तक कि उसे (दूसरों तक) पहुंचा दिया" की फ़ज़ीलत का मुस्तह़िक़ (ह़क़दार) बनना भी मत़लूब था ।

सब से पेहली अरबईन इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक[3] رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से जो सिलसिला शुरूअ़ हुवा था वोह आज तक जारी है । अ़रबी, उर्दू, फ़ारसी वग़ैरा में उ़लमा ए किराम ने ला तादाद अरबईनात तालीफ़ फ़रमाई हैं ता हम हर एक का मक़्सद व गरज़ यूं ही मेयारे इन्तेख़ाब जुदा था, किसी ने उसूले दीन में से तौह़ीद वग़ैरा तो किसी ने फ़ुरूई मसाइल व अह़कामात पर मुश्तमिल अह़ादीस का गुलदस्ता तरतीब दीया, किसी ने जंग और किसी ने ख़ास ख़ित्ते के फ़ज़ाइल को पेशे नज़र रखा तो किसी ने आदाबे ज़िन्दगी या दुन्या से बे रग़बती के मौज़ूअ़ पर अह़ादीस जम्अ़ कीं इन्ही में से चन्द का तआ़रुफ़ पेश है :

अरबईन फ़ित्तसव्वुफ़ : येह मुहम्मद बिन हुसैन अबू अ़ब्दुर्रहमान सुलमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 412 हिजरी) की तालीफ़ है जिस में आप ने तसव्वुफ़ और सूफ़िया के मुतअ़ल्लिक़ चालीस अह़ादीस जम्अ़ फ़रमाई हैं।

अरबईने त़िवाल : इमाम अ़ली बिन हुसैन दिमश्क़ी अलमारूफ़ इब्ने अ़साकिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 571 हिजरी) ने चालीस ऐसी त़वील अह़ादीस जम्अ़ की हैं जो रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत और सह़ाबा ए किराम के फ़ज़ाइलो मनाक़िब पर मुश्तमिल हैं। इस के इ़लावा इमाम इब्ने अ़साकिर की एक अरबईन बुलदानिया भी है जिस में आप ने चालीस सह़ाबा ए किराम से मरवी चालीस अह़ादीस को चालीस शेहरों के शुयूख़ से जम्अ़ किया और उम्महातुल मोमिनीन के फ़ज़ाइलो मनाक़िब की रिवायात पर मुश्तमिल आप ने ''اَلْاَرْبَعِيْنَ فِيْ مَنَاقِبِ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْن'' भी यादगार छोड़ी।

अरबईने बैहक़ी : इमाम अबू बक्र अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 458 हिजरी) ने सौ अह़ादीसे अख़्लाक़ को 40 अबवाब पर मुरत्तब किया है।

अरबईने त़ाइया : इमाम अबुल फ़तूह़ मुह़म्मद बिन मुह़म्मद त़ाई हमदानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 555 हिजरी) ने चालीस शुयूख़ से चालीस अह़ादीस जम्अ़ की हैं इस त़ौर पर कि हर ह़दीस अलग सह़ाबी से मरवी है, मज़ीद येह कि हर सह़ाबी की सवानेह़े ह़यात, उन के फ़ज़ाइल, हर ह़दीस के फ़वाइद व ज़रूरी तशरीह़ात भी बयान की हैं इस का नाम है :

''اَرْبَعِيْنَ فِيْ اِرْشَادِ السَّائِرِيْنَ اِلٰى مَنَازِلِ الْيَقِيْن''

अरबईने इलाहिया : येह इमाम अबुल ह़सन अ़ली बिन मुफ़ज़्ज़ल मक़्दसी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 611 हिजरी) की तालीफ़ है जिस में आप ने अह़ादीसे क़ुदसिया जम्अ़ फ़रमाई हैं, अह़ादीसे क़ुदसिया पर ही एक अरबईन शैख़े अक्बर मोह़युद्दीन इब्नुल अ़रबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 638 हिजरी) की भी है जिसे आप ने मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में तालीफ़ फ़रमाया था।

अरबईने आ़लिया : शैख़ ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 852 हिजरी) ने सह़ीह़ैन में से ऐसी चालीस अह़ादीस को जम्अ़ किया है जिन में मुस्लिम की सनद बुख़ारी की सनद से आ़ला है।

अरबईने अ़दलिया : शैख़ शिहाबुद्दीन अह़मद बिन ह़जर मक्की رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 973 हिजरी) ने अ़दलो इन्साफ़ और आ़दिलों के मुतअ़ल्लिक़ चालीस अह़ादीस जम्अ़ फ़रमाई हैं।

अरबईने जवामेउ़ल कलिम : अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 1014 हिजरी) ने भी अरबईन तस्नीफ़ फ़रमाई थी जिस में चालीस जवामेउ़ल कलिम अह़ादीस का इन्तेख़ाब फ़रमाया। इस के इ़लावा आप ने चालीस अह़ादीसे क़ुदसिया पर मुश्तमिल ''اَلْاَحَادِيْثُ الْقُدْسِيَّةُ الْاَرْبَعِيْنِيَّة'' नामी अरबईन भी तालीफ़ फ़रमाई है।

अरबईने त़ाश कुब्रा ज़ादा : अह़मद बिन मुस्त़फ़ा रूमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 968 हिजरी) ने ऐसी चालीस अह़ादीस का इन्तेख़ाब किया है जो सीरते नबवी के एक ख़ूब सूरत बाब ''मिज़ाह़'' से तअ़ल्लुक़ रखती हैं।

अरबईने रज़विया : सैयदी आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 1340 हिजरी) ने भी कई अरबईन तालीफ़ फ़रमाई हैं जिन में से एक ''मुख़्तसिरुल मीज़ान'' है जिस में सवादे आज़म की पैरवी पर चालीस अह़ादीस जम्अ़ फ़रमाई हैं।[4] यूं ही ग़ैरे ख़ुदा को सज्दा ह़राम होने पर आप ने चालीस अह़ादीस जम्अ़ फ़रमाईं जिस का नाम ''اَلزُّبْدَةُ الزَّكِيَّةُ فِيْ تَحْرِيْمِ سُجُوْدِ التَّحِيَّة'' रखा।

अरबईन फ़ी त़िब्बिर्रक़िन्नबिय्यल अमीन : येह अबुल बरकात सैयद अह़मद क़ादरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात : 1398 हिजरी) की तस्नीफ़ है जिस में आप ने इलाज-मुआ़लजा और दम वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ चालीस अह़ादीस जम्अ़ फ़रमाई हैं। इस के इ़लावा आप ने फ़ज़ाइले ख़ुलफ़ा ए राशिदीन, मोजिज़ाते नबवी और इस्लाह़े अख़्लाक़ व आमाल के मुतअ़ल्लिक़ भी अरबईनात तालीफ़ फ़रमाई हैं।

ज़िया ए दुरूदो सलाम : येह अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तालीफ़ है जिस में आप ने अल्लाह पाक के आख़री नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ने के फ़ज़ाइल पर चालीस अह़ादीस जम्अ़ फ़रमाई हैं।

फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस और 40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : इन तालीफ़ात का सेहरा माहनामा फ़ैज़ाने मदीना के सर है, इन में आ़म मुसलमानों के इफ़ादे की ग़रज़ से मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर सलीस व बा मुह़ावरा तर्जमे के साथ अह़ादीसे मुबारका जम्अ़ की गई हैं और साथ ही मुस्तनद शुरूह़ात की मदद से मुख़्तसर वज़ाह़त भी दर्ज कर दी गई है अलबत्ता ''फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस'' में लफ़्ज़ी तर्जमा का भी एहतेमाम किया गया है जब कि ''40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم'' में मौज़ूअ़ की मुनासबत से ह़िकायात भी नक़्ल की गई हैं।

---

(1) ابو داؤد، 5/501 حدیث: 3660 (2) شرح الاربعین النوویۃ لابن دقیق العید، ص16

(3) اربعین نوویہ، ص14 (4) اربعین امام حسین، ص93۔



(किस्त : 2)

क़सीदतुल हुज्रतिन्नबविय्यतिश्शरीफ़ह

मौलाना राशिद अ़ली अ़त्तारी मदनी

اِنِّیْ اِذَا سَامَنِیْ ضَیْمٌ یُرَوِّعُنِیْ　　اَقُوْلُ یَا سَیِّدَ السَّادَاتِ یَا سَنَدِیْ

बेशक जब मुझे डरा और घबरा देने वाली कोई ज़ुल्मो ज़ियादती तक्लीफ़ पहुंचाती है तो मैं केहता हूं : ऐ सैयदों के सरदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ऐ मेरे सहारे ! (पनाहगाहो मददगार, मेरी मदद फ़रमाइए) ।

کُنْ لِیْ شَفِیْعاً اِلَی الرَّحْمٰنِ مِنْ زَلَلِیْ　　وَامْنُنْ عَلَیَّ بِمَا لَا کَانَ فِیْ خَلَدِیْ

मेरी लग़्ज़िशों पर मौला ए रह़मान की बारगाहे बे नियाज़ में मेरी शफ़ाअ़त व सिफ़ारिश फ़रमाइए । और मेरे वेहमो ख़याल से भी बढ़ कर मुझ पर इन्आ़मातो इकरामात फ़रमाइए ।[1]

وَانْظُرْ بِعَیْنِ الرِّضَا لِیْ دَائِماً اَبَداً　　وَاسْتُرْ بِفَضْلِکَ تَقْصِیْرِیْ مَدَی الْاَمَدِ

और मुझ पर हमेशा हमेशा के लिए रिज़ामन्दी व ख़ुशनूदी वाली निगाहे ख़ास रखिए । और अपने फ़ज़्लो एह़सान से मेरी कोताहियों (ग़फ़्लतों) को सदा के लिए छुपाए ही रखिए ।

وَاعْطِفْ عَلَیَّ بِعَفْوٍ مِنْکَ یَشْمَلُنِیْ　　فَاِنَّنِیْ عَنْکَ یَا مَوْلَایَ لَمْ اَحِدِ

और ऐ मेरे आक़ा ओ मौला صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने ऐसे अ़फ़्वो करम से मुझ पर मेहरबानी फ़रमाइए जो अपनी आग़ोश में मुझे लिए रहे (जो मुझे अपने साए में लिए रहे) क्यूंकि मैं आप का साथ पा कर तन्हा नहीं रहा ।

اِنِّیْ تَوَسَّلْتُ بِالْمُخْتَارِ اَشْرَفِ مَنْ　　رَقَی السَّمٰوٰتِ سِرّ الْوَاحِدِ الْاَحَدِ

बेशक मैं ने ऐसे बा इख़्तियार (नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) को अपना वसीला[2] बनाया है, जो बुलन्दियों पर चढ़ने वालों में सब से ज़्यादा इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत वाले हैं, जो ख़ुदा ए यक्ता ओ तन्हा का इक राज़ हैं ।

رَبُّ الْجَمَالِ تَعَالَی اللّٰہُ خَالِقُہٗ　　فَمِثْلُہٗ فِیْ جَمِیْعِ الْخَلْقِ لَمْ اَجِدِ

हुस्नो जमाल वाले मुस्त़फ़ा करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़ालिक़ो मालिक कितनी बुलन्द शान वाला है । पस आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मिस्ल मैं ने सारी मख़्लूक़ में कोई नहीं पाया ।[3]

خَیْرُ الْخَلَائِقِ اَعْلَی الْمُرْسَلِیْنَ ذُرًی　　ذُخْرُ الْاَنَامِ وَھَادِیْھِمْ اِلَی الرَّشَدِ

आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सारी मख़्लूक़ से बेहतरीन, तमाम रसूलों में कमाल दरजे की बुलन्दी पाने वाले, ख़ल्क़त (मख़्लूक़े इलाही) के सरमाए व ख़ज़ाने हैं और राहे रास्त व हिदायत की त़रफ़ मख़्लूक़ के रेहबरो राहनुमा हैं ।[4]

بِهِ التَجَأْتُ لَعَلَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ لِيْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ فِيْ ظَنِّيْ وَ مُعْتَقَدِيْ

मैं ने इन (मल्जा ओ मावा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ही की पनाह ली है, इस उम्मीद पर कि **अल्लाह** पाक मेरी बख़्शिश व मग़फ़िरत फ़रमाएगा। येही मेरा गुमान और एतेक़ाद (अ़क़ीदा) है।

فَمَدْحُهُ لَمْ يَزَلْ دَأْبِيْ مَدَى عُمُرِيْ وَحُبُّهُ عِنْدَ رَبِّ الْعَرْشِ مُسْتَنَدِيْ

पस आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिदहत करना उ़म्र भर मेरी आ़दत रही है। और मालिके अ़र्श की बारगाह में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की महब्बत मेरा सहारा और आसरा है।

عَلَيْهِ اَزْكَى صَلَاةٍ لَمْ تَزَلْ اَبَداً مَعَ السَّلَامِ بِلَا حَصْرٍ وَلَا عَدَدِ

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ला तादाद और बे शुमार सलाम के साथ इन्तिहाई पाकीज़ा दुरूद हो जो अबद तक जारी रहे।

وَالْاٰلِ وَالصَّحْبِ اَهْلِ الْمَجْدِ قَاطِبَةً بَحْرِ السَّمَاحِ وَاَهْلِ الْجُوْدِ وَالْمَدَدِ

और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सारे ही आलो अस्हाब पर (दुरूदो सलाम हो) जो कि इ़ज़्ज़तो बुज़ुर्गी वाले, फ़य्याज़ी व बख़्शिश के समुन्दर और सख़ावत व मदद करने वाले हैं।[5]

---

(1) मन्सबे शफ़ाअ़ते कुब्रा नबिय्ये आज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़ज़ीम ख़ास्सा (ख़ुसूसिय्यत) है। इस से मुतअ़ल्लिक़ इस्लामी अ़क़ीदा मुलाहज़ा हो : "हर क़िस्म की शफ़ाअ़त हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिए साबित है। शफ़ाअ़त बिल वजाहत, शफ़ाअ़त बिल महब्बत, शफ़ाअ़त बिल इ़ज़्न, इन में से किसी का इन्कार वोही करेगा जो गुमराह है।" (बहारे शरीअ़त, 1/72)

शफ़ाअ़त करे ह़श्र में जो रज़ा की सिवा तेरे किस को येह क़ुदरत मिली है ?

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 188)

(2) किसी चीज़ के ज़रीए़ को वसीला कहा जाता है। (तफ़्सीरे नईमी, 6/394) और बिलाशुबा रब तआ़ला की रेह़मत पाने और उस की बारगाहे आ़ली से बख़्शिशो मग़फ़िरत की ख़ैरात पाने का सब से पेहला और बड़ा ज़रीआ़ व वसीला ज़ाते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है। आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले की बरकात को यूं बयान फ़रमाते हैं : दीनो दुन्या व जिस्मो जान में जो नेमत किसी को मिली और मिलती है और अबदुल आबाद तक मिलेगी सब हुज़ूरे अक़्दस ख़लीफ़तुल्लाहिल आज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वसीले और हुज़ूर के मुबारक हाथों से मिली और मिलती है और अबदुल आबाद तक मिलेगी। (फ़तावा रज़विया, 21/195)

(3) ख़लीफ़ए चहारुम, अमीरुल मोमिनीन मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : يَقُوْلُ نَاعِتُهُ: لَمْ اَرَ قَبْلَهُ وَلَا بَعْدَهُ مِثْلَهُ صَلَّى اللّٰه عليه واٰله وسلَّم यानी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नात गो केहता कि मैं ने आप की मिस्ल न आप से पेहले देखा, न आप के बाद। (شمائل النبی، ص21، حدیث:7) मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस के तह़त फ़रमाते हैं : ह़ज़राते सह़ाबा ए किराम तो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मिस्ल क्या देखते, ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का मिस्ल न देखा। देखते कैसे ? ख़ुदा ने हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का मिस्ल बनाया ही नहीं। (मिरआतुल मनाजीह, 8/58)

(4) सुल्त़ाने काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सारी मख़्लूक़ात, ह़त्ताकि तमाम नबियों और रसूलों से भी अफ़्ज़लो आला हैं। आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस अ़क़ीदे को यूं बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पुरनूर सैयदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अफ़्ज़लुल मुर्सलीन व सैयदुल अव्वलीन वल आख़िरीन होना क़त़ई ईमानी, यक़ीनी, इज्दआ़नी, इजमाई, ईक़ानी मस्अला है जिस में ख़िलाफ़ (इख़्तिलाफ़) न करेगा मगर गुमराह बददीन बन्दए शयात़ीन (शैत़ानों का ग़ुलाम)। (फ़तावा रज़विया, 30/131)

ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल और रसूलों से आला हमारा नबी (ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 138)

(5) शिफ़ाउल फ़वाइद ब ज़ियारते ख़ैरुल उ़ब्बाद, स. 143



क़सीदए ग़ौसिया के फ़वाइदो बरकात

मौलाना अबुल हक़ाइक़ अत्तारी मदनी

अल्लाह पाक का अपने मुक़र्रब बन्दों पर ऐसा ख़ास करम है कि उन की ज़बान से निकलने वाले अल्फ़ाज़ और क़लम से ज़ाहिर होने वाले नुक़ूश में भी बरकत रख देता है। ख़ल्क़े ख़ुदा उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के मुतबर्रक कलाम को अपना विर्दो वज़ीफ़ा बना कर मसाइबो आलाम से ख़लासी पाती और दारैन (दुन्या ओ आख़ेरत) की सआ़दतें हासिल करती है। इस मुबारक सिल्सिले की एक सुनेहरी कड़ी ग़ौसुल अग़वास, क़ुत्बुल अक़्ताब, ग़ौसुल आज़म सैयद शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की त़रफ़ मन्सूब अ़रबी क़सीदा बनाम **"क़सीदए ग़ौसिया"** भी है। इस क़सीदे में आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने ऊपर होने वाले फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी का ज़िक्र फ़रमाया है, नीज़ तेह़दीसे नेमत के त़ौर पर मन्सबे विलायत व मारिफ़ते इलाही में अपने बुलन्द मक़ाम व आला मर्तबे से दुन्या वालों को आगाह फ़रमाया है। कसीर औलिया ए किराम और मशाइख़े उ़ज़्ज़ाम ने इस मुबारक क़सीदे को बत़ौरे वज़ीफ़ा अपना कर इस से ह़ासिल होने वाले फ़वाइदो बरकात को बयान फ़रमाया है। चुनान्चे, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने भी **"मदनी पंज सूरह"** में **"क़सीदए ग़ौसिया"** को तेह़रीर कर के इस के दस फ़वाइदो बरकात ज़िक्र फ़रमाए हैं। उन में से चन्द का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है :

क़सीदए ग़ौसिया के फ़वाइदो बरकात : ☆ इस क़सीदे का पढ़ना क़ुर्बे ख़ुदावन्दी ह़ासिल होने का ज़रीआ़ है ☆ इस क़सीदे का विर्द क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा को बढ़ाता है ☆ इस क़सीदे के पढ़ने वाले को **अ़रबी** पढ़ने में बसीरत (महारत) ह़ासिल होती है ☆ हर मुश्किल और सख़्त काम के लिए 40 रोज़ पढ़ने से اِنْ شَآءَ الله कामयाबी ह़ासिल होगी ☆ हर मरज व तक्लीफ से नजात पाने के लिए तीन बार या पांच बार पढ़ना मुफ़ीद है ☆ तेल पर दम कर के आसेब ज़दा और जिन्न वाले मरीज़ के जिस्म पर मलें, (आसेब या जिन्न) दफ़्अ़ होगा ☆ ज़ालिम से नजात पाने के लिए रोज़ाना पढ़ने से اِنْ شَآءَ الله ख़लासी नसीब होगी। (माख़ूज़ अज़ : मदनी पंज सूरह, स. 265, 266)

क़सीदए ग़ौसिया ब मअ़ तर्जमा

1 سَقَانِیَ الْحُبُّ كَاْسَاتِ الْوِصَال　　فَقُلْتُ لِخَمْرَتِیْ نَحْوِیْ تَعَالِیْ

मह़ब्बत ने मुझे वस्ल (क़ुर्बे इलाही) के प्याले पिलाए, पस मैं ने अपने ख़ुमारे मह़ब्बत को कहा कि मेरी त़रफ़ आ

2 سَعَتْ وَمَشَتْ لِنَحْوِیْ فِیْ كُئُوْسٍ　　فَهِمْتُ بِسُكْرَتِیْ بَیْنَ الْمَوَالِیْ

प्यालों में भरा हुवा जामे मह़ब्बत मेरी त़रफ़ दौड़ता हुवा आया, मैं ने अपने अह़बाब की मजलिस में जामे मह़ब्बत के ख़ुमार से मस्त हो गया

3 فَقُلْتُ لِسَآئِرِ الْاَقْطَابِ لُمُّوْا　　بِحَالِیْ وَادْخُلُوْا اَنْتُمْ رِجَالِیْ

मैं ने तमाम अक़्ताब (औलिया की एक ख़ास क़िस्म) से कहा कि तुम मेरे ह़ाल के पास आ कर ठेहर जाओ और दाख़िल हो जाओ क्यूंकि तुम मेरे रफ़ीक़ (साथी) हो

4 وَهُبُّوْا وَاشْرَبُوْا اَنْتُمْ جُنُوْدِیْ　　فَسَاقِی الْقَوْمِ بِالْاَوْفٰی مَلَالِیْ

हिम्मत और मुस्तहकम इरादा करो और जामे मारेफ़त पियो कि तुम मेरा लश्कर हो क्यूंकि साक़ी ए क़ौम (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने मेरे लिए जामे महब्बत को लबालब भर दिया है

5 شَرِبْتُمْ فُضْلَتِیْ مِنْ بَعْدِ سُكْرِیْ وَلَا نِلْتُمْ عُلْوِیْ وَاتِّصَالِیْ

इश्के हक़ीक़ी का नशा मुझ पर तारी होने के बाद तुम ने मेरा बचा खुचा जाम पी लिया, लेकिन मेरे बुलन्द मर्तबे और कुर्ब को न पा सके

6 مَقَامُكُمُ الْعُلٰى جَمْعًا وَّلٰكِنْ مَقَامِیْ فَوْقَكُمْ مَّازَالَ عَالِیْ

तुम सब (औलिया) का मक़ाम बुलन्द है, लेकिन मेरा मक़ाम तुम्हारे मक़ाम से भी ऊपर है मेरी बुलन्दी हमेशा रहेगी

7 اَنَا فِیْ حَضْرَةِ التَّقْرِیْبِ وَحْدِیْ یُصَرِّفُنِیْ وَحَسْبِیْ ذُو الْجَلَالِ

मैं बारगाहे कुर्बे इलाही में यकता और यगाना हूं, रब्बे करीम ने मुझे बा इख़्तियार बना दिया है और अ़ज़मतो जलाल वाला खुदा मेरे लिए काफ़ी है

8 اَنَا الْبَازِیْ اَشْهَبُ كُلِّ شَیْخٍ وَمَنْ ذَا فِی الرِّجَالِ اُعْطِیْ مِثَالِیْ

मैं सफ़ेद बाज़ हूं हर वली पर ग़ालिब हूं (जैसे सफ़ेद बाज़ दीगर परिन्दों पर ग़ालिब होता है) (बताओ तो !) कौन है जिस को मुझ जैसा मर्तबा अ़ता किया गया हो

9 كَسَانِیْ خِلْعَةً بِطِرَازِ عَزْمٍ وَتَوَّجَنِیْ بِتِیْجَانِ الْكَمَالِ

रहमान عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वोह ख़िल्अ़त (लिबासे करामत) पेहनाया जिस पर अ़ज़्म और इरादए मुस्तहकम के बेल बूटे थे और तमाम कमालात के ताज मेरे सर पर रखे

10 وَاَطْلَعَنِیْ عَلٰى سِرِّ قَدِیْمٍ وَقَلَّدَنِیْ وَاَعْطَانِیْ سُؤَالِیْ

रब्बुल आ़लमीन ने मुझे अपने राज़े क़दीम पर मुत्तलअ़ (ख़बरदार) किया और मुझे इ़ज़्ज़त का हार पेहनाया और जो कुछ मैं ने मांगा मुझे अ़ता फ़रमाया

11 وَوَلَّانِیْ عَلَى الْاَقْطَابِ جَمْعًا فَحُكْمِیْ نَافِذٌ فِیْ كُلِّ حَالٍ

मालिके काएनात عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तमाम अक़्ताब पर हाकिम बनाया है, पस मेरा हुक्म हर हाल में जारी और नाफ़िज़ है

12 فَلَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فِیْ بِحَارٍ لَصَارَ الْكُلُّ غَوْرًا فِی الزَّوَالِ

अगर मैं अपना राज़ दरियाओं पर डाल दूं तो सारे दरियाओं का पानी ज़मीन में जज़्ब हो जाए और उन का नामो निशान तक न रहे

13 وَلَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فِیْ جِبَالٍ لَدُكَّتْ وَاخْتَفَتْ بَیْنَ الرِّمَالِ

अगर मैं अपना राज़ पहाड़ों पर डाल दूं तो वोह रेज़ा रेज़ा हो कर रैत में मिल जाएं (कि उन पहाड़ों और रैत में बिल्कुल फ़र्क़ न रहे)

14 وَلَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فَوْقَ نَارٍ لَخَمِدَتْ وَانْطَفَتْ مِنْ سِرِّ حَالِیْ

अगर मैं अपना राज़ आग पर डाल दूं तो वोह मेरे राज़ से बुझ कर बिल्कुल सर्द हो जाए (और उस का नामो निशान भी बाक़ी न रहे)

15 وَلَوْ اَلْقَیْتُ سِرِّیْ فَوْقَ مَیْتٍ لَقَامَ بِقُدْرَةِ الْمَوْلٰی تَعَالٰی

अगर मैं अपने राज़ को मुर्दे पर डाल दूं तो वोह फ़ौरन Allah तआ़ला की क़ुदरत से खड़ा हो जाए

16 وَمَا مِنْهَا شُهُوْرٌ اَوْ دُهُوْرٌ تَمُرُّ وَتَنْقَضِیْ اِلَّا اَتَانِیْ

महीने और ज़माने जो गुज़रते और ख़त्म होते हैं, मगर बिला शको शुबा वोह मेरे पास हाज़िर होते हैं

17 وَتُخْبِرُنِیْ بِمَا یَاْتِیْ وَیَجْرِیْ وَتُعْلِمُنِیْ فَاَقْصِرْ عَنْ جِدَالِیْ

और मुझ को मौजूदा और आने वाले वाक़िआ़त की ख़बर और इत्तेलाअ़ देते हैं (ऐ मुन्किरे करामात !) झगड़े से बाज़ आ

18 مُرِیْدِیْ هِمْ وَطِبْ وَاشْطَحْ وَغَنِّیْ وَافْعَلْ مَا تَشَاءُ فَاَلْاِسْمُ عَالِیْ

ऐ मेरे मुरीद ! इश्क़े इलाही से सरशार हो और ख़ुश रेह और (शरीअ़त की हुदूद में रेहते हुवे) बोलता रेह और जो तेरा दिल चाहे कर क्यूंकि मेरा नाम बुज़ुर्ग है

19 مُرِيْدِیْ لَاتَخَفْ اَللّٰهُ رَبِّیْ عَطَانِیْ رِفْعَةً نِلْتُ الْمَنَالِیْ

ऐ मेरे मुरीद ! **अल्लाह** के सिवा किसी से मत डर, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त मेरा परवर दगार है उस ने मुझे वोह बुलन्दी अ़ता फ़रमाई है कि जिस से मैं ने अपनी मत़लूबा आरज़ूओं को पा लिया है

20 طُبُوْلِیْ فِی السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ دُقَّتْ وَشَاعُوْسُ السَّعَادَةِ قَدْ بَدَالِیْ

आस्मानो ज़मीन में मेरे नाम के डंके बजाए जाते हैं, और नेक बख़्ती के क़ासिद मेरे लिए ज़ाहिर हो रहे हैं

21 بِلَادُ اللّٰهِ مُلْكِیْ تَحْتَ حُكْمِیْ وَوَقْتِیْ قَبْلَ قَلْبِیْ قَدْ صَفَالِیْ

अल्लाह तआ़ला के तमाम शेहर (उस की अ़ता से) मेरा मुल्क हैं, जो मेरे हुक्म के ताबेअ़ हैं और मेरा वक़्त मेरे दिल से पेहले ही साफ़ था (यानी मेरी रूहानी हालत मेरे जिस्म के पैदा होने से पेहले ही पाकीज़ा थी)

22 نَظَرْتُ اِلٰی بِلَادِ اللّٰهِ جَمْعًا كَحَبِّ خَرْدَلَةٍ عَلٰی حُكْمِ اتِّصَالِ

मैं ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के तमाम शेहरों की त़रफ़ देखा तो वोह सब मिल कर राई के दाने के बराबर थे

23 دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قُطْبًا وَنِلْتُ السَّعْدَ مِنْ مَّوْلَی الْمَوَالِیْ

मैं (ज़ाहिरी ओ बात़िनी) इ़ल्म पढ़ते पढ़ते कुत़ुब बन गया और मैं ने मुख़्लिस दोस्तों के आक़ा ओ मौला عَزَّوَجَلَّ की मदद से सआ़दत को पा लिया

24 فَمَنْ فِیْ اَوْلِیَاءِ اللّٰهِ مِثْلِیْ وَمَنْ فِی الْعِلْمِ وَالتَّصْرِیْفِ حَالِیْ

औलियाउल्लाह के गिरोह में मेरी मिस्ल कौन है ? और इ़ल्म और तदबीर करने में मेरी बराबरी कौन कर सके ?

25 رِجَالِیْ فِیْ هَوَاجِرِهِمْ صِيَامٌ وَفِیْ ظُلَمِ اللَّيَالِیْ كَاللَّالِیْ

मेरे मुरीद मौसमे गर्मा में रोज़ा रखते हैं और रातों की तारीकी में (इ़बादत की रौशनी की वज्ह से) मोतियों की त़रह़ चमकते हैं

26 وَكُلُّ وَلِیٍّ لَّهٗ قَدَمٌ وَّاِنِّیْ عَلٰی قَدَمِ النَّبِیِّ بَدْرِ الْكَمَالِ

हर वली किसी नबी के क़दम पर होता है और मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दम मुबारक पर हूं जो (आस्माने रिसालत के) बदरे कमाल हैं

27 نَبِیُّهَاشِمِیٌّ مَكِّیٌّ حِجَازِیٌّ هُوَجَدِّیْ بِهٖ نِلْتُ الْمَوَالِیْ

वोह नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हाशमी, मक्की और ह़िजाज़ी मेरे जद्दे पाक हैं, उन्हीं की वसात़त (वसीले) से मैं ने मुख़्लिस दोस्तों को पाया

28 مُرِيْدِیْ لَاتَخَفْ وَاشٍ فَاِنِّیْ عَزُوْمٌ قَاتِلٌ عِنْدَ الْقِتَالِ

ऐ मेरे मुरीद ! तू किसी चुग़ल ख़ोर से मत डर, क्यूंकि मैं जंग में साबित क़दम और क़ातिले आदा (दुश्मनाने ख़ुदा को मारने वाला) हूं

29 اَنَا الْجِيْلِیُّ مُحِیُّ الدِّيْنِ لَقَبِیْ وَاَعْلَامِیْ عَلٰی رَاْسِ الْجِبَالِ

मैं जीलान का रेहने वाला हूं और मुह़ियुद्दीन मेरा लक़ब है और मेरी बुज़ुर्गी के झन्डे पहाड़ों की चोटियों पर लेहरा रहे हैं

30 اَنَا الْحَسَنِیُّ وَالْمُخْدَعُ مَقَامِیْ وَاَقْدَامِیْ عَلٰی عُنُقِ الرِّجَالِ

मैं ह़ज़रते इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की औलाद से हूं और मेरा रुत़्बा मुख़्दअ़ (यानी एक ख़ास मक़ामे विलायत) है, और मेरे क़दम औलिया की गर्दनों पर हैं

31 وَعَبْدُ الْقَادِرِ الْمَشْهُوْرُ اِسْمِیْ وَجَدِّیْ صَاحِبُ الْعَيْنِ الْكَمَالِ

और अ़ब्दुल क़ादिर मेरा मश्हूरो मारूफ़ नाम है और मेरे नानाजान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चश्मे कमाल के मालिक हैं

32 تَقَبَّلْنِیْ وَلَاتَرُدَّ سُؤَالِیْ اَغِثْنِیْ سَيِّدِیْ اُنْظُرْ بِحَالِیْ

मुझे मन्ज़ूर फ़रमाइए और मेरा सवाल रद न कीजिए, मेरी फ़रियाद रसी कीजिए, मेरे आक़ा ! मेरा ह़ाल मुलाह़ज़ा फ़रमाइए। **अल्लाह** पाक हमें भी क़सीदए ग़ौसिया की बरकतों से मालामाल फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِيْن صَلَّی اللّٰه عليه واٰله وسلَّم



ख़लीफ़ए मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द हज़रते अल्लामा मौलाना बदरुल क़ादरी साहब रुख़्सत हो गए

मौलाना काशिफ़ शेहज़ाद अत्तारी मदनी

ख़लीफ़ए मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द हज़रते अल्लामा मौलाना बदरुल क़ादरी मिस्बाही رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की विलादत 25 अक्तूबर 1950 ईसवी को घोसी, ज़िल्अ़ आज़म गढ़, यूपी इन्डिया में हुई । इब्तेदाई तालीम ह़ासिल करने के बाद 11 साल की उ़म्र में मुबारक पुर तशरीफ़ लाए और दर्से निज़ामी करने के लिए एहले सुन्नत के मशहूर इदारे दारुल उ़लूम अशरफ़िया में दाख़िला लिया । 10 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1389 हिजरी मुत़ाबिक़ 23 अक्तूबर 1969 ईसवी को दर्से निज़ामी की तक्मील के बाद ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अल्लामा शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बानी ए अशरफ़िया से दस्तारे फ़ज़ीलत ह़ासिल की ।

बैअ़तो ख़िलाफ़त : 23 जुमादल उख़रा 1399 हिजरी मुत़ाबिक़ जून 1979 ईसवी में आप ने मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से बैअ़त की और इजाज़त व ख़िलाफ़त भी पाई । इन के इ़लावा भी कई बुज़ुर्गों ने इजाज़त व ख़िलाफ़त से नवाज़ा ।

तदरीसी ख़िदमात : 1969 ईसवी में फ़ारिग़ुत्तेह़सील होने के बाद आप ने दर्से निज़ामी की तदरीस शुरूअ़ की और हिन्दुस्तान के कई जामेआ़त में तिश्नगाने उ़लूमे दीनिया को सैराब किया ।

तस्नीफ़ी ख़िदमात : ह़ज़रते अल्लामा बदरुल क़ादरी साहब ने तक़रीबन 2 दर्जन कुतुबो रसाइल तस्नीफ़ फ़रमाए । आप ने इमाम याफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब **''रौज़ुर्रियाह़ीन फ़ी ह़िकायातिस्सालेह़ीन''** का बा मुह़ावरा तर्जमा **''बज़्मे औलिया''** के नाम से फ़रमाया जो काफ़ी मशहूर है । इस के इ़लावा आप ने मुख़्तलिफ़ उ़नवानात पर कसीर मज़ामीन व मक़ालात भी तस्नीफ़ फ़रमाए ।

इशाअ़ते दीन में ख़िदमात : 250 से ज़्यादा ग़ैर मुस्लिम आप के हाथ पर मुसलमान हुवे जबकि कसीर बद मज़हब व बद अ़क़ीदा लोगों ने तौबा कर के दुरुस्त इस्लामी अ़क़ाइद को क़बूल किया ।

शेअ़रो सुख़न : अल्लाह पाक ने अल्लामा साहिब मर्ह़ूम को नस्र के साथ साथ नज़्म की सूरत में भी इज़्हारे जज़्बात की सलाह़ियत अ़त़ा फ़रमाई थी । ह़म्दो नात, मनाक़िब और दीगर अस्नाफ़े शेर पर मुश्तमिल आप के ग्यारह दीवान फ़न्ने शेरगोई में आप की महारत के गवाह हैं । मुस्तक़िल कलाम लिखने के इ़लावा आप तज़मीन निगारी में भी महारत रखते थे । आला ह़ज़रत, इमामे एहले सुन्नत अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की पांच नातों पर आप ने तज़मीन निगारी फ़रमाई ।

एक झलक मुलाह़ज़ा फ़रमाइए :

अल्लाह अल्लाह ये रुत्बए वक़ारे आ़रिज़
चश्मे कौनैन है वा, बहरे निसारे आ़रिज़
नारे दोज़ख़ को चमन कर दे बहारे आ़रिज़
अपना एजाज़ जो दिखाए निगारे आ़रिज़
ज़ुल्मते ह़श्र को दिन कर दे निहारे आ़रिज़

मनाक़िबे अ़त्तार : ह़ज़रते अल्लामा मौलाना बदरुल क़ादरी मिस्बाही رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अमीरे एहले सुन्नत अल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी से बहुत मह़ब्बत

फ़रमाते थे । इस का सुबूत अमीरे एहले सुन्नत से मुतअ़ल्लिक़ तेह़रीर कर्दा आप की कई मनक़बतें हैं । इन में सब से ज़्यादा शोहरत इस मन्क़बत को मिली :

मस्लक का तू इमाम है इल्यास क़ादरी
तदबीर तेरी ताम है इल्यास क़ादरी
फ़िक्रे रज़ा को कर दिया आ़लम पे आश्कार
येह तेरा ऊंचा काम है इल्यास क़ादरी
है दावते इस्लामी की दुन्या में धूम धाम
मक़्बूल तेरा काम है इल्यास क़ादरी
है बद्रे रज़वी भी तेरे किरदार का असीर
इस का तुझे सलाम है इल्यास क़ादरी

माहनामा अशरफ़िया का आग़ाज़ : 1974 ईसवी में अपने उस्ताज़े मोह़तरम ह़ाफ़िज़े मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़ुक्म पर लब्बैक केहते हुवे अपनी मादरे इ़ल्मी जामेआ़ अशरफ़िया मुबारक पुर आए जहां शोबए नश्रो इशाअ़त के इन्चार्ज की ह़ैसिय्यत से ख़िदमात का आग़ाज़ किया । फ़रवरी 1976 ईसवी में आप ने "माहनामा अशरफ़िया" का आग़ाज़ किया जो आज तक अपनी पूरी आबो ताब से जारी है और اِنْ شَآءَاللهعزوجل ह़ज़रत के लिए सवाबे जारिया का सबब बनेगा ।

हॉलेन्ड में इस्लामी ख़िदमात : जूलाई 1978 ईसवी में आप नेधरलेन्ड (हॉलेन्ड) तशरीफ़ ले गए और वहां तब्लीग़े इस्लामो इशाअ़ते इ़ल्म का सिलसिला शुरूअ़ फ़रमाया । आप की आमद से क़ब्ल हॉलेन्ड, फ़्रान्स और बेल्जियम वग़ैरा में मुसलमानों के पास कोई मुस्तक़िल अवक़ाते नमाज़ का नक़्शा मौजूद न था और न ही रूयते हिलाल का बा क़ाइ़दा एहतेमाम होता था । आप ने मुस्तक़िल अवक़ाते नमाज़ का नक़्शा मुहय्या करने के इ़लावा यहां रूयते हिलाल का बा क़ाइ़दा सिलसिला भी शुरूअ़ फ़रमाया ।

हॉलेन्ड के इ़लावा भी आप कई ममालिक के दौरे पर गए और मुख़्तलिफ़ ममालिक में इस्लामी तालीमात को आ़म किया । मुख़्तलिफ़ मसाजिद और मदारिस की तामीरात में भी आप की काविशें शामिल रहीं ।

सफ़रे आख़ेरत : त़वील अ़लालत के बाद 9 सितम्बर 2021 ईसवी को आप इस दुन्या ए फ़ानी से रवाना हो कर अपने मालिके ह़क़ीक़ी के दरबार में ह़ाज़िर हो गए, اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْن आप की तदफ़ीन हिन्दुस्तान के सूबा उत्तर प्रदेश के ज़िल्अ़ मऊ में आप के आबाई अ़लाक़ा घोसी में हुई ।

ह़ज़रत के विसाले पुर मलाल के बाद मदनी मुज़ाकरे के दौरान इन का ज़िक्रे ख़ैर हुवा तो निगराने शूरा मौलाना ह़ाजी मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी ने अपने जज़्बात का इज़हार यूं किया :

हॉलेन्ड के सफ़र के दौरान एक मस्जिद में तरबियती इजतेमाअ़ था, वहां ह़ज़रत करम फ़रमाते हुवे तशरीफ़ लाए और हमें मुलाक़ात से मुशर्रफ़ फ़रमाया । ह़ज़रत की अमीरे एहले सुन्नत से जो मह़ब्बत है उस से दुन्या वाक़िफ़ है, मुलाक़ात के दौरान भी येही तज़केरा जारी रहा और ह़ज़रत ने हमें अमीरे एहले सुन्नत की शान में लिखी हुई नई मनक़बत सुनाई । दावते इस्लामी के ज़िम्मेदारान पर ह़ज़रत बहुत शफ़्क़त फ़रमाते थे और अपने मुतअ़ल्लिक़ीन को मदनी माह़ोल से वाबस्तगी की तरग़ीब दिलाते थे ।

इस मौक़ेअ़ पर अमीरे एहले सुन्नत ने कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : ह़ज़रत से मेरा पेहला ग़ाइबाना तआ़रुफ़ इन की ज़ख़ीम किताब "बज़्मे औलिया" के ज़रीए़ हुवा जो इमाम याफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की किताब "**रौज़ुर्रियाह़ीन**" का उर्दू तर्जमा है । इस में ह़ज़रत ने न सिर्फ़ तर्जमा फ़रमाया बल्कि किताब की तरतीब भी अज़ सरे नौ फ़रमाई, तब से उन से तआ़रुफ़ हो गया कि येह एक सुन्नी आ़लिमे दीन हैं । बाद में मुबल्लिग़ीन और निगराने शूरा के ज़रीए़ उन की दावते इस्लामी और मुझ से मह़ब्बत की ख़बरें भी मिलती रहीं और यूं तआ़रुफ़ बढ़ता गया । जो भी सुन्नियत का मुख़्लिस मह़ब्बत करने वाला होगा वोह اِنْ شَآءَاللهعزوجل आप को दावते इस्लामी से मह़ब्बत करने वाला मिलेगा ।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इन्हें ग़रीक़े रेह़मत फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



ताज़ियत व इयादत

हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती बदरुल क़ादरी के इन्तेक़ाल पर ताज़ियत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दौराने मदनी मुज़ाकरा फ़रमाया : ख़लीफ़ ए हुज़ूर मुफ़्ती ए आज़मे हिन्द, मोह़सिने दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती बदरुल क़ादरी साह़ब पेहली सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1443 हिजरी मुत़ाबिक़ 9 सितम्बर 2021 ईसवी बरोज़ जुमेरात को हॉलेन्ड में इन्तेक़ाल फ़रमा गए। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن

येह दावते इस्लामी से बड़ी मह़ब्बत फ़रमाते थे, **अल्लाह** पाक इन की ख़िदमाते दावते इस्लामी और दीगर दीनी व मिल्ली ख़िदमात क़बूल फ़रमाए।

मैं इन के साह़िबज़ादे मुह़य्युद्दीन ह़सनैन क़ादरी, इन की बेटियों, इन के मुरीदीन, मुह़िब्बीन, मुतवस्सिलीन समेत तमाम सोगवारों से ताज़ियत करता हूं।

या **अल्लाह** पाक ! प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का वास्त़ा ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती बदरुल क़ादरी को ग़रीक़े रेह़मत फ़रमा, ऐ **अल्लाह** पाक ! इन के दर्जे बुलन्द फ़रमा, इलाहल आ़लमीन ! इन की क़ब्र जन्नत का बाग़ बने, रेह़मत के फूलों से ढके, ता ह़श्र नूरे मुस्त़फ़ा के सदक़े जगमगाती रहे, प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जल्वों से इन की क़ब्र आबाद हो, मौला ए करीम ! जन्नतुल फ़िरदौस में इन्हें अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा, मौला ए करीम ! इन के तमाम सोगवारों को सब्रे जमील और सब्रे जमील पर अज्रे जज़ील मरह़मत फ़रमा, या **अल्लाह** पाक ! मेरे पास जो कुछ टूटे फूटे आमाल हैं अपने करम के शायाने शान उन का अज्र अ़त़ा फ़रमा, येह सारा अज्रो सवाब जनाबे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़त़ा फ़रमा, ब वसीलए ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह सारा सवाब ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती बदरुल क़ादरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه समेत सारी उम्मत को इनायत फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मुख़्तलिफ़ पैग़ामाते अ़त्त़ार

शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अगस्त 2021 ईसवी में निजी पैग़ामात के इलावा तक़रीबन 2 हज़ार 163 पैग़ामात जारी फ़रमाए जिन में 448 ताज़ियत के, 1 हज़ार 500 इयादत के जबकि 215 दीगर पैग़ामात थे।

काशिफ़ शेहज़ाद अत्तारी मदनी

मदनी क्लीनिक व रूहानी इलाज

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आंख **अल्लाह** तआला की बहुत बड़ी नेमत है । इस नेमत की क़द्र हक़ीक़त में वोही शख़्स जान सकता है जो बीनाई से मेहरूम हो और हाथ में सफ़ेद छड़ी लिए सड़क किनारे इस इन्तेज़ार में खड़ा हो कि कोई आ कर मुझे सड़क पार करवा दे । मुक़द्दस कुरआन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है : ﴿وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें कान और आंख और दिल दिए कि तुम एहसान मानो (پ14، النحل:78) लेहाज़ा हमें जिस्म के दीगर आज़ा के साथ साथ आंख का भी शुक्र अदा करना चाहिए । **आंख का शुक्र कैसे अदा हो ?** आंख का शुक्र इस त़रह़ अदा हो सकता है कि आंख जब भी उठे तो सिर्फ़ जाइज़ उमूर ही की त़रफ़ उठे । आंख से कुरआने मजीद, मस्जिद व मद्रसा और मक़ामाते मुक़द्दसा नीज़ उ़लमा ओ मशाइख़ और अपने वालिदैन की ज़ियारत करें । ख़बरदार ! इन आंखों को बद निगाही, फ़िल्में ड्रामे और दीगर नाजाइज़ मनाज़िर देखने के लिए हरगिज़ इस्तेमाल न करें और अपने दिलो दिमाग़ में येह बात बिठा लें कि **"अल्लाह देख रहा है"** । फ़रमाने बारी तआ़ला है : ﴿يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** जानता है चोरी छुपे की निगाह । (پ 24، المؤمن:19) यानी निगाहों की ख़ियानत और चोरी, ना मेहरम को देखना और ममनूआ़त पर नज़र डालना । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

ख़बरदार भाई ! ख़ुदा देखता है
भलाई बुराई ख़ुदा देखता है

जन्नत की बिशारत : देखने-सुनने या बोलने की सलाह़िय्यत से मेहरूम इन्सानों को ख़ुसूसी अफ़राद (Special Persons) कहा जाता है । एक तेह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ दुन्या में इस वक़्त नाबीना अफ़राद की तादाद 3 करोड़ के क़रीब जब कि सिर्फ़ हिन्दुस्तान में 22 लाख के लगभग है । नाबीना अफ़राद में 82 फ़ीसद अफ़राद वोह हैं जो 50 साल से ज़्यादा उ़म्र के हैं । जो आंख की नेमत से मेहरूम हैं वोह हौसला रखें, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहें और सब्र करें, اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जन्नत की अ़ज़ीम नेमतें उन का मुक़द्दर होंगी । प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : اِذَا اَخَذْتُ كَرِيْمَتَيْ عَبْدِيْ فِي الدُّنْيَا لَمْ يَكُنْ لَهٗ جَزَآءٌ عِنْدِيْ اِلَّا الْجَنَّةَ मैं दुन्या में अपने जिस बन्दे की दो प्यारी चीज़ें (यानी आंखें) ले लूं तो मेरे नज़दीक इस का बदला सिर्फ़ जन्नत है । (ترمذی، 4/179، حدیث 2408) **बीनाई** से मेहरूमी की त़रह़ नज़र की कमज़ोरी भी एक आज़माइश है जिस पर सब्र करने वाला सवाब का ह़क़दार होगा । जैल में नज़र की कमज़ोरी से मुतअ़ल्लिक़ कुछ मालूमात और इस का इलाज पेशे ख़िदमत है : **नज़र की कमज़ोरी की वुजूहात :** टी वी, मोबाइल, कम्प्यूटर और वीडियो गेम्ज़ (Video Games) का ह़द से ज़्यादा इस्तेमाल, बुढ़ापा, सर पर लगने वाली संगीन चोट, शूगर या दीगर अमराज़ वग़ैरा । **बच्चों में नज़र की कमज़ोरी :** एक सर्वे रिपोर्ट के मुत़ाबिक़ स्कूल जाने की उ़म्र से पेहले ही 25 फ़ीसद बच्चों में नज़र की कमज़ोरी पाई जाती है । वालिदैन को चाहिए कि शुरूअ़ से ही अपने बच्चों को बिल ख़ुसूस नज़र की कमज़ोरी के अस्बाब से बचाने का एहतेमाम करें और ह़त्तल इमकान बच्चों को मोबाइल फ़ोन टेब्लेट वग़ैरा के इस्तेमाल नीज़ कार्टून प्रोग्राम्ज़ और वीडियो गेम्ज़ की लत से बाज़ रखें । पैदाइश के 6 माह बाद और फिर 3 साल की उ़म्र में आंखों के डॉक्टर (Eye Specialist) से बच्चे की आंखों का मुआ़यना करवा कर मश्वरा कर लेना चाहिए । इस मुआ़मले में सुस्ती या लापरवाही आगे चल कर बड़ी परेशानी का बाइस बन सकती है । जिन वालिदैन की अपनी नज़र कमज़ोर हो उन्हें अपनी औलाद के बारे में ज़्यादा एह़तियात़ की ज़रूरत है ।

ह़िकायत : एक मदनी इस्लामी भाई का बयान है कि मेरी 5 सालह मदनी मुन्नी जो दावते इस्लामी के "दारुल मदीना" में ज़ेरे तालीम थी, उस की बाजी (उस्तादनी) की त़रफ़ से पैग़ाम मिला कि मदनी मुन्नी की आंखों का मुआ़यना करवाइए । हम ने येह सोच कर ज़्यादा तवज्जोह नहीं दी कि शायद येह मामूल (Routine) की हिदायत है जो तमाम बच्चों के वालिदैन को की



गई है । कुछ अ़र्से बाद दोबारा येह पैग़ाम मिला और मालूम किया तो पता चला कि मदनी मुन्नी को White Board की लिखाई समझ न आने की शिकायत है । Eye Specialist को दिखाया तो मालूम हुवा कि मदनी मुन्नी की नज़र कमज़ोर है और फिर 5 नम्बर का चश्मा लगवाना पड़ा । **मदनी मश्वरा :** मोटर सायकल वग़ैरा चलाते हुवे या वैसे ही आंखों में रैत के ज़र्रात या कोई और चीज़ चली जाए तो आंखों को हाथ से रगड़ने के बजाए उन पर पानी मारें اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل सफ़ाई हो जाएगी । **मुसल्सल कम्प्यूटर इस्तेमाल करने वालों के लिए मश्वरा :** जिन का कम्प्यूटर स्क्रीन वग़ैरा से ज़्यादा वास्ता पड़ता हो उन्हें चाहिए कि Anti reflective / Multi coated Glasses इस्तेमाल करें, इस की बदौलत एक ह़द तक स्क्रीन की शुआ़ओं से आंखों की ह़िफ़ाज़त रहेगी । **मुत़ालआ़ करने की एह़तियातें :** मुत़ालआ़ वग़ैरा करते हुवे रौशनी का सामने से आंखों पर पड़ना नज़र को मुतास्सिर करता है । एनर्जी सेवर या ट्यूब लाइट वग़ैरा की तरकीब इस त़रह़ होनी चाहिए कि रौशनी ऊपर या पीछे से आए । दौराने मुत़ालआ़ किताब, मोबाइल फ़ोन और टेब्लेट वग़ैरा दो फ़िट दूर रख कर इस्तेमाल करना चाहिए ताकि बीनाई मुतास्सिर न हो । टीवी वग़ैरा देखते हुवे स्क्रीन से 6 फ़िट का फ़ास्ला रखना चाहिए । **पलकें झपकाने के फ़वाइद :** फ़ित्री त़ौर पर पलकें झपकाने से आंखों में तरी मौजूद रेहती है जब कि पलक झपकाए बग़ैर टीवी स्क्रीन वग़ैरा को देखना बीनाई के लिए नुक़्सान देह है । आंखों के गुदूद में Antibacterial Chemical मौजूद होता है, पलकें झपकाने से येह केमीकल आंखों में जाने वाले गर्दो ग़ुबार और जरासीम वग़ैरा को साफ़ कर देता है । **बीनाई तेज़ करने वाली ग़िज़ाएं :** नज़र की ह़िफ़ाज़त के लिए विटामिन A और C की ज़्यादा ज़रूरत होती है । विटामिन A आड़ू (Peach) और कलेजी में जब कि विटामिन C गाजर (Carrot) में बिल ख़ुसूस पाया जाता है । पालक और दीगर हरी सब्ज़ियों नीज़ पिस्ता, अख़रोट और बादाम का इस्तेमाल भी बीनाई के लिए मुफ़ीद है । **क़िब्ला रुख़ बैठने से बीनाई तेज़ होती है :** ह़ज़रते सैयदना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : चार चीज़ें आंखों की (बीनाई की) तक़्वियत का बाइ़स हैं : (1) क़िब्ला रुख़ बैठना (2) सोते वक़्त सुरमा लगाना (3) सब्ज़े (हरियाली) की त़रफ़ नज़र करना और (4) लिबास को पाको साफ़ रखना । (इह़याउल उ़लूम, 2/27)

आंखों का लज़ीज़ चूरन : सौंफ़, मिस्री और ईरानी बादाम तीनों हम वज़्न ले कर अच्छी त़रह़ बारीक पीस कर यक्जां (MIX) कर के बड़े मुंह की बोतल में मेह़फ़ूज़ कर लीजिए और बिला नाग़ा रोज़ाना नहार मुंह (ख़ाली पेट) एक चाए की चम्मच बग़ैर पानी के खा लीजिए (एक चम्मच से कुछ ज़्यादा खाने में भी ह़रज नहीं) त़वील अ़र्सा इस्तेमाल करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل आंखों की बीनाई को फ़ाएदा होगा । जिन को तक्लीफ़ न हो वोह भी मुस्तक़िल इस्तेमाल कर सकते हैं । (घरेलू इलाज, स. 33)

ऐनक के नम्बर कम करने के लिए : गाजर के मौसम में रोज़ाना एक गाजर खा लिया करें اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل ह़ाफ़िज़ा क़वी और बीनाई तेज़ होगी ह़त्ताकि चश्मा है तो اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل (नम्बर) कम होना शुरूअ़ हो जाएंगे । (घरेलू इलाज, स. 34)

आंखों के अमराज़ के 3 रूह़ानी इलाज :

(1) अगर आंखों की रौशनी कम हो गई हो तो 41 बार يَاشَكُوْرُ पढ़ कर पानी पर दम कर के आंखों पर येह पानी मलिए । (मुद्दते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा) (2) नज़र कमज़ोर हो जाए या चली जाए तो 41 बार يَا رَحْمٰنُ يَا رَحِيْمُ يَا اَللّٰهُ يَا سَلَامُ (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दोनों हाथों में पानी ले कर दम कीजिए, मुंह पर डालिए और आंखों पर मलिए اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل फ़ाएदा होगा । (मुद्दते इ़लाज : मुसलसल (लगातार) 7 दिन)

मदनी फूल : मुंह पर पानी डालते वक़्त कोई पाक कपड़ा वग़ैरा बिछा लीजिए ताकि दम किए हुवे पानी की बे अदबी न हो । (3) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ हर नमाज़ के बाद तीन बार पढ़ कर उंगली पर दम कर के अपनी आंखों पर लगाइए । येह अ़मल उ़म्र भर जारी रखिए, اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل बीनाई की कमज़ोरी दूर होगी नीज़ सफ़ेद और काले मोतिये से भी ह़िफ़ाज़त होगी ।

(बीमार आ़बिद, स. 33 ता 34)

कुछ ऐसा कर दे मेरे किरदिगार आंखों में
हमेशा नक़्श रहे रूए यार आंखों में





नए लिखारी (जुनियर कॉलम निगार)

नए लिखने वालों के इन्आ़म याफ़्ता मज़ामीन

(New Writers)

नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल

मुहम्मद शाहिद मेहताब अ़त्तारी (दौरए ह़दीस जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने अ़त्तार, नागपुर हिन्द)

रोज़ा तज़्किय़ए नफ़्स का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है इसी लिए इस्लाम ने जहां पर फ़र्ज़ रोज़ों की तालीम दी है वहीं नफ़्ली रोज़ों के भी बहुत सारे फ़ज़ाइल बयान किए हैं येही वज्ह थी कि हमारे अस्लाफ़ फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ नफ़्ली रोज़ों का ख़ूब एहतेमाम किया करते थे, आइए नफ़्ली रोज़ों की फ़ज़ीलत के बारे में चन्द अह़ादीस मुलाह़ज़ा फ़रमाइएं :

ह़ज़रते उ़त्बा बिन अ़ब्दुस्सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने एक दिन का नफ़्ली रोज़ा रखा अल्लाह पाक उसे जहन्नम से उतना दूर कर देगा जितना ज़मीनो आस्मान का दरमियानी फ़ास्ला है। (معجم کبیر، 17/120، حدیث:295)

ह़ज़रते क़ैस बिन ज़ैद जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने एक नफ़्ली रोज़ा रखा अल्लाह पाक उस के लिए जन्नत में एक दरख़्त लगाएगा जिस का फल अनार से छोटा और सेब से बड़ा होगा। वोह (मोम से अलग न किए हुवे) शहद जैसा मीठा और (मोम से अलग किए हुवे ख़ालिस शहद की त़रह़) ख़ुश ज़ाइक़ा होगा। अल्लाह पाक बरोज़े क़ियामत रोज़ादार को उस दरख़्त का फल खिलाएगा। (معجم کبیر، 18/366، حدیث:935)

سُبْحٰنَ اللّٰہ आप अगर ग़ौर करें तो पता चलेगा कि रोज़ा रखने में बे शुमार दीनी और दुन्यावी फ़वाइद हैं और सवाब तो इतना है कि जी चाहता है कि बस रोज़ा रखते चले जाएं।

मज़ीद जैसा कि एक मक़ाम पर ह़ज़रते सैयदना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन रोज़ेदार क़ब्रों से निकलेंगे तो वोह रोज़े की बू से पेहचाने जाएंगे और पानी के कूज़े जिन पर मुश्क से मोहर होगी उन्हें कहा जाएगा खाओ कल तुम भूके थे, पियो कल तुम प्यासे थे, आराम करो कल तुम थके हुवे थे पस वोह खाएंगे और आराम करेंगे ह़ालांकि लोग ह़िसाब की मशक़्क़त और प्यास में मुब्तला होंगे।

(کنز العمال، 8/313، حدیث:23639 بتغیر قلیل، والتدوین فی اخبار قزوین 2/326)

एक मक़ाम पर नफ़्ली रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सैयदना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुलत़ाने बेह़रोबर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए एक दिन का रोज़ा रखता है अल्लाह पाक उसे जहन्नम से उतना दूर कर देता है जितना फ़ास्ला एक कव्वा बचपन से बूढ़ा हो कर मरने तक मुसलसल उड़ते हुवे त़ै कर सकता है।

(مسند امام احمد بن حنبل، 3/619، حدیث : 10810)

सुनने नसाई की ह़दीस है : ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे किसी ऐसे काम का हुक्म दीजिए जिस के ज़रीए अल्लाह पाक मुझे नफ़्अ़ दे, फ़रमाया : रोज़े को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूंकि इस की कोई मिस्ल नहीं।

(نسائی، ص371، حدیث:2218)

ऐ काश हम नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पाने वाले बन जाएं और अपनी दुन्या ओ आख़ेरत बेहतर बनाने में कामयाब हो जाएं। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

फ़िरऔनियों पर आने वाले अ़ज़ाबात

मुहम्मद तौफ़ीक़ अ़त्तारी (दर्जए ख़ामिसा, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने औलिया, अहमदाबाद, हिन्द)

अल्लाह पाक ने हमें हज़ार हा नेमतें अ़ता फ़रमा कर महज़ अपनी इ़बादत के लिए पैदा फ़रमाया है लेकिन अफ़्सोस ! हम अपने रब की ला तादाद नेमतों के इस्तेमाल पर उस का शुक्र अदा करने के बजाए उस के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी कर के बड़े ना शुक्रे होते जा रहे हैं। अल्लाह पाक की ना फ़रमानी करने वालों पर आने वाले अ़ज़ाबात को पढ़िए और ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़िए, चुनान्चे जब फ़िरऔनी हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के ज़माने में कुफ़्र व ना फ़रमानी पर अड़े रहे, तो उन पर पांच त़रह़ के अ़ज़ाब नाज़िल हुवे।

1 तूफ़ान का अ़ज़ाब : इस त़रह़ कि बादल आया, अन्धेरा हुवा और कसरत से बारिश होने लगी। क़िब्त़ियों (फ़िरऔनियों) के घरों में पानी भर गया ह़त्ताकि वोह उस में खड़े रेह गए और पानी उन की गर्दनों की हंसलियों तक आ गया, उन में से जो बैठा वोह डूब गया। सात रोज़ इसी मुसीबत में मुब्तला रहे। जब येह लोग आ़जिज़ हुवे तो हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से दुआ़ की अ़र्ज़ की, हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ़ से तूफ़ान की मुसीबत दूर हो गई लेकिन फिर येह लोग ईमान न लाए।

2 टिड्डी का अ़ज़ाब : एक महीना तो आ़फ़ियत से गुज़रा, मगर फिर अल्लाह पाक ने टिड्डी भेजी वोह खेतियां, फल, तमाम सामान, ह़त्ताकि लोहे की कीलें तक खा गईं। अब क़िब्त़ियों ने परेशान हो कर फिर हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से दरख़्वास्ते दुआ़ की और वादए ईमान किया। सात रोज़ तक टिड्डी की मुसीबत में मुब्तला रहे, वापस हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की दुआ़ से नजात पाई। मगर फिर ईमान न लाए और अपने आमाले बद में मुब्तला हो गए।

3 कुम्मल का अ़ज़ाब : एक महीना आ़फ़ियत से गुज़रा ही था कि फिर अल्लाह पाक ने कुम्मल (जूं) भेजे। उस ने जो खेतियां और फल बाक़ी रहे थे वोह खा लिए, येह कीड़ा कपड़ों में घुस जाता था और जिल्द को काटता था। येह कीड़े फ़िरऔनियों के बाल, भंवें, पलकें चाट गए, ह़त्ताकि इन कीड़ों ने उन का सोना दुश्वार कर दिया था। सात रोज़ के बाद येह मुसीबत भी दुआ़ ए मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से दूर हुई, लेकिन फ़िरऔनी फिर ईमान न लाए और पेहले से ज़्यादा ख़बीस तर अ़मल शुरूअ़ कर दिए।

4 मेंडक का अ़ज़ाब : एक महीना अम्न में गुज़रने के बाद फिर अल्लाह पाक ने मेंडक भेजे और येह ह़ाल हुवा कि आदमी बैठता था तो उस की मजलिस में मेंडक भर जाते, हांडियों, खानों में मेंडक होते, लेटते तो मेंडक ऊपर सवार होते, इस मुसीबत से फ़िरऔनी रो पड़े। फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने उन से अह़दो पैमान ले कर दुआ़ की तो सात रोज़ के बाद येह मुसीबत भी दूर हुई।

5 ख़ून का अ़ज़ाब : फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने दुआ़ फ़रमाई तो तमाम कुंवों, नेहरों, चश्मों का पानी, दरिया ए नील का पानी, ग़रज़ हर पानी उन के लिए ताज़ा ख़ून बन गया। सात रोज़ तक ख़ून के सिवा कोई चीज़ पीने की मयस्सर न आई फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से दुआ़ की दरख़्वास्त की और ईमान लाने का वादा किया। ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने दुआ़ फ़रमाई तो येह मुसीबत भी दूर हुई, मगर वोह ईमान फिर भी न लाए।

(تفسیر بغوی، 2/159 تا 161 الاعراف، تحت الآیۃ: 133 ملخصاً وملتقطاً)

ईसाले सवाब के 5 त़रीक़े

मुहम्मद अनस क़ादरी (दर्जए सादिसा, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, आगरा, हिन्द)

मर्ह़ूमीन के लिए ईसाले सवाब बहुत ही पसन्दीदा अ़मल है अह़ादीसे करीमा और आसार व अक़्वाले अस्लाफ़ से भी येह बात साबित है कि ज़िन्दों का मुर्दों के लिए ईसाले सवाब करना उन्हें फ़ाइदा पहुंचाता है जैसा कि ह़दीसे पाक में मज़कूर है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

मुर्दे का ह़ाल क़ब्र में डूबते हुवे इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तेज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़दीक वोह दुन्या ओ माफ़ीहा (यानी दुन्या और इस में जो कुछ है, उस) से बेहतर होती है। अल्लाह पाक क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदिया किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़ता फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिया (यानी तोह़फ़ा) मुर्दों के लिए दुआ़ ए मग़फ़िरत करना है। (شعب الایمان، 6/203، حدیث: 7905)

लेहाज़ा साबित हुवा कि ईसाले सवाब जाइज़ और मुस्तह़सन अ़मल है।

यूं तो ईसाले सवाब के बहुत से त़रीक़े हैं लेकिन यहां ईसाले सवाब के 5 त़रीक़े ज़िक्र किए जाते हैं मुलाह़ज़ा फ़रमाएं:

1 दुआ़ ए मग़फ़िरत करना : जैसा कि मज़कूरा ह़दीसे मुबारका में इरशाद हुवा नीज़ कुरआने करीम में सूरए ह़श्र की आयत नम्बर 10 में इरशाद होता है :

﴿وَالَّذِیْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَ لِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ وَ لَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَاۤ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ۝﴾

तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और उन के बाद आने वाले अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब ! हमें और हमारे उन भाइयों को बख़्श दे जो हम से पेहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों के लिए कोई कीना न रख, ऐ हमारे रब ! बेशक तू निहायत मेहरबान, बहुत रेह़मत वाला है ।

2 मैयत की त़रफ़ से ह़ज व उ़मरह करना : ह़दीसे मुबारका है : बनी जुहैना की एक औ़रत नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में आई और अ़र्ज़ की, कि मेरी वालिदा ने ह़ज की मन्नत मानी थी मगर वोह ह़ज अदा करने से पेहले ही फ़ौत हो गईं, क्या मैं उन की त़रफ़ से ह़ज कर लूं ? तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हां उन की त़रफ़ से ह़ज कर लो । (بخاری، 1/611، حدیث:1852)

3 मैयत की त़रफ़ से सदक़ा ओ ख़ैरात करना : ह़दीसे पाक में इरशाद होता है : जब तुम में से कोई कुछ नफ़्ल ख़ैरात करे तो चाहिए कि इसे अपने मां बाप की त़रफ़ से करे कि इस का सवाब उन्हें मिलेगा और इस के (यानी ख़ैरात करने वाले के) सवाब में कोई कमी भी नहीं आएगी ।

(شعب الایمان، 6/205، حدیث:7911)

4 कुरआने करीम पढ़ कर इस का सवाब ईसाल करना : जैसा कि हमारे ज़माने में येह त़रीक़ा बहुत राइज है कुरआन ख़्वानी की सूरत में, फ़ातिह़ा ख़्वानी की सूरत में चुनान्चे, नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : जो शख़्स क़ब्रस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने सूरए फ़ातिह़ा, सूरए इख़्लास और सूरए तकासुर पढ़ी फिर येह दुआ मांगी : या अल्लाह ! मैं ने जो कुछ कुरआन पढ़ा उस का सवाब इस क़ब्रस्तान के मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को पहुंचा । तो वोह सब के सब क़ियामत के रोज़ उस (यानी ईसाले सवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे । (शर्हुस्सुदूर, सफ़ह़ा 311)

5 रिफ़ाहे आ़म्मा : मुसलमानों की इजतेमाई ज़रूरतों और सहूलतों को पूरा कर के इस का सवाब मुर्दों को पहुंचाना और येह सवाबे जारिया भी बनता है मसलन प्यासों और मुसाफ़िरों के लिए पानी का इन्तेज़ाम कर देना या मस्जिद की तामीर करना जैसा कि ह़दीसे पाक में इस की तरग़ीब मौजूद है चुनान्चे ह़ज़रते सैयदना सअ़द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी मां इन्तेक़ाल कर गई हैं मैं उन की त़रफ़ से सदक़ा करना चाहता हूं कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल रहेगा ? सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पानी, चुनान्चे उन्हों ने एक कुंवां खुदवाया और कहा : هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْد यानी येह उम्मे सअ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के लिए है । (ابوداؤد، 2/180، حدیث:1681)

अल्लाह करीम हमें ख़ूब ख़ूब ईसाले सवाब करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और हमारी और हमारे उन भाइयों की बख़्शिश फ़रमाए जो हम से पेहले ईमान लाए और ईमान के साथ इस दुन्या से रुख़्सत हुवे । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तेह़रीरी मुक़ाबले में मज़मून भेजने वालों के नाम

(1) अ़ब्दुल वह़ीद रज़ा अ़त़्तारी (दर्जए सालिसा जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने उ़स्माने ग़नी, बारशी महाराष्ट्र) (2) मुह़म्मद तौफ़ीक़ अ़त़्तारी (दर्जए ख़ामिसा, जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने औलिया, अह़मदाबाद) (3) मेराज अ़त़्तारी (नाज़िम मद्रसतुल मदीना मुबारकपुर, आज़म गढ़) (4) मुह़म्मद सद्दाम हुसैन अ़त़्तारी मदनी (मुदर्रिस जामेअ़तुल मदीना धोलका, गुजरात) (5) मुह़म्मद अनस क़ादरी (दर्जए सादिसा जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर, आगरा) (6) मुह़म्मद मुश्ताक़ अ़त़्तारी बिन क़ुत़्बुद्दीन अ़त़्तारी (जामेअ़तुल मदीना फ़ैज़ाने कन्ज़ुल ईमान, मुम्बई) ।

तेह़रीरी मुक़ाबला "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" के उ़न्वानात (बराए फ़रवरी 2022)

मज़मून भेजने की आख़िरी तारीख़ : 20 नवम्बर 2021

1 कुरआने करीम से 20 अस्माउल ह़ुस्ना 2 नमाज़े फ़ज्र पर 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

3 नेकी के कामों में तआ़वुन की 10 सूरतें

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं

चुग़ली (Gossip)



मौलाना मुहम्मद जावेद अत्तारी मदनी

अल्लाह पाक के आख़री नबी हज़रते मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَّاتٌ यानी चुग़ल ख़ोर जन्नत में दाख़िल न होगा।

(بخاری، 4/115، حدیث:6056)

किसी की बात नुक़्सान पहुंचाने के इरादे से दूसरों को बताना चुग़ली है। (عمدۃ القاری، 2/594، تحت الحدیث:216)

प्यारे बच्चो ! किसी की चुग़ली लगाना अच्छी बात नहीं है, चुग़ली गुनाह और अपने प्यारे अल्लाह पाक को नाराज़ करने वाला काम है, चुग़ल ख़ोर फ़साद डालने वाला होता है, चुग़ली अ़ज़ाबे क़ब्र का सबब है, चुग़ल ख़ोर अल्लाह पाक के नज़दीक बदतरीन लोग हैं, चुग़ल ख़ोर दोस्तों में जुदाई डालता है।

बाज़ बच्चों में भी चुग़ली की आ़दत पाई जाती है और वोह बात बात पर अपने बहन भाइयों की अम्मी अब्बू से और स्कूल में दूसरे बच्चों की टीचर से चुग़ली लगाते रेहते हैं कि बड़े भाई ने बहन को मारा है, इस ने आज स्कूल में सबक़ नहीं सुनाया और टीचर ने इस को डांटा भी है, दो बच्चे आपस में बात कर रहे होते हैं तीसरा बच्चा कान लगा कर सुनता है और उन की बातें दूसरों को बताता है इस त़रह़ की और बहुत सारी बातें हैं जिन में बच्चे अपने बहन भाइयों और दोस्तों की चुग़ली कर रहे होते हैं।

एक लड़की का इन्तेक़ाल हो गया, उसे दफ़्न करने के बाद उस लड़की के भाई को याद आया कि उस की रक़म की थेली तो क़ब्र में गिर गई जब भाई ने वापस जा कर क़ब्र खोली और झांक कर देखा तो क़ब्र में आग भड़क रही थी, उस ने घर आ कर अपनी अम्मी से पूछा कि मेरी बहन के अ़मल कैसे थे ? अम्मी ने बताया कि तुम्हारी बहन की आ़दत थी कि वोह पड़ोसियों के दरवाज़ों से कान लगा कर उन की बातें सुनती और चुग़ल ख़ोरी करती थी।

(मुकाशफ़तुल क़ुलूब, सफ़ह़ा. 71 मुलख़्ख़सन)

अल्लाह पाक हमें चुग़ली और दीगर गुनाह वाले कामों से बचते रेहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बच्चों के लिए अमीरे एहले सुन्नत की नसीह़त

सफ़ाई का ख़याल रखिए



मौलाना उवैस यामीन अत्तारी मदनी

अच्छे बच्चो !

अमीरे एहले सुन्नत अ़ल्लामा मुहम्मद इल्यास क़ादरी साह़ब फ़रमाते हैं :

बाहर इस्तेमाल किया हुवा जूता पेहन कर इस्तिन्जा ख़ाने जाने से बचना मुनासिब है क्यूंकि इस से फ़र्श गन्दा हो जाता है। (रिसाला झूटा चोर, सफ़ह़ा 31)

प्यारे बच्चो ! घर में इस्तिन्जा ख़ाने (Toilet) में जाते हुवे इस्तिन्जा ख़ाने की चप्पल इस्तेमाल करनी चाहिए, बाज़ बच्चे स्कूल, ट्यूशन या बाहर से खेल कर आते हैं और जूते चप्पल उतारने की जगह पर जूते, चप्पल उतारे बग़ैर ही Toilet में चले जाते हैं जिस की वज्ह से घर का सेह़न, इस्तिन्जा ख़ाने का फ़र्श और W.C पर पाउं रखने की जगह गन्दी हो जाती है और इस के बाद में जाने वालों को घिन आती है। नीज़ इस्तिन्जा ख़ाने से बाहर आने के बाद जूते, चप्पल गीले होने की वज्ह से घर और सेह़न में गन्दगी भी ज़्यादा हो जाती है। लेहाज़ा बाहर इस्तेमाल किए हुवे जूते, चप्पल पेहन कर इस्तिन्जा ख़ाने में नहीं जाना चाहिए।



इस त़रह़ याद कीजिए

मौलाना मुह़म्मद अरशद अस्लम अ़त़्तारी मदनी

ख़ुबैब ने कहा : दादाजान ! आज कल मुझे टेस्ट याद नहीं हो रहे बताइए मैं क्या करूं ? दादाजान ने कहा : बेटा ! मैं आप को सबक़ याद करने के कुछ त़रीक़े बताता हूं जिन से बहुत फ़ाइदा होगा :

1 अच्छी त़रह़ समझ कर याद कीजिए 2 ऊंची आवाज़ से पढ़ते हुवे याद कीजिए 3 याद करने का एक टाइम फ़िक्स कर लीजिए 4 टेन्शन फ़्री हो कर याद कीजिए 5 जो याद कर लिया उसे लिख कर चेक कीजिए।

सोहेब ने परेशान लेहजे में कहा : दादाजान ! याद तो हो जाता है लेकिन उसे लोंग टाइम के लिए किस त़रह़ सेव करें ? दादाजान मुस्कुराए और कहा : 1 याद करने के बाद शुरूअ़ से ले कर आख़िर तक एक नज़र देखना 2 जो याद किया उसे किसी से शेर करना 3 जब जब मौक़अ़ मिले Repeat (दोहराई) करना।

इन त़रीक़ों पर अ़मल करने से जो आप ने याद किया होगा वोह देर तक याद रहेगा। اِنْ شَآءَاللّٰه

उम्मे ह़बीबा ने कहा : इतने दिन हो गए आप ने कोई वाक़िआ़ भी नहीं सुनाया।

हां भई ! दिन तो काफ़ी हो गए हैं, अब तो वाक़िआ़ सुनाना ही पड़ेगा, दादाजान ने फ़ौरन जवाब दिया।

फिर दादाजान वाक़िआ़ सुनाने लगे : **अल्लाह** पाक ने हमारे प्यारे नबी, ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एक मोजिज़ा येह भी दिया है कि आप कमज़ोर ह़ाफ़िज़े को अच्छा बना देते। अब वाक़िआ़ सुनो :

एक सह़ाबी ने अपनी परेशानी और ह़दीसों को भूलने की फ़रियाद कुछ इस त़रह़ की : या रसूलल्लाह ! मैं आप से बहुत सारी ह़दीसें सुनता हूं और उन को भूल जाता हूं।

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम अपनी चादर फैलाओ, उन्हों ने अपनी चादर फैला दी, वोह सह़ाबी केहते हैं कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दोनों हाथों (को मिला कर इन) से चुल्लू बनाया (और ऐसे इशारा किया कि जैसे कोई चीज़ हाथों से डालते हैं) फिर फ़रमाया : इस चादर को अपने सीने से लगा लो। जिस त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया मैं ने वैसा ही किया फिर इस के बाद मैं कोई चीज़ भी नहीं भूला।[1]

प्यारे बच्चो ! इस वाक़िए़ के बाद उन की मेमोरी बहुत पावरफ़ुल हो चुकी थी। अब आप लोग उन का नाम बताइए ? सोहेब ने भोलेपन से कहा : दादाजान ! जब आप ने नाम ही नहीं बताया तो हमें कैसे मालूम होगा ? दादाजान ने मुस्कुराते हुवे कहा : वोह ख़ुश नसीब सह़ाबी ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه हैं, मगर उन का नाम अ़ब्दुर्रह़मान है। सोहेब एक दम बोला : हां ! उन का दूध वाला वाक़िआ़ भी तो सुनाया था आप ने। दादाजान ने सोहेब की तारीफ़ करते हुवे कहा : वाह भई ! आप को वोह वाक़िआ़ भी याद है।

ख़ुबैब न कहा : दादाजान ! येह तो उस वक़्त की बात है जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सह़ाबा ए किराम के दरमियान मौजूद थे और उन्हों ने अपना ह़ाफ़िज़ा मज़बूत

करवा लिया। हम आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ मांगें तो क्या हमारी मदद फ़रमाएंगे ?

दादाजान ने कहा : बिल्कुल ! हमारी मदद फ़रमाएंगे बल्कि हमारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मदद करने वाले बहुत सारे वाक़िआ़त किताबों में लिखे हुवे भी हैं।

दादाजान ने बात को जारी रखते हुवे कहा : इन्ही वाक़िआ़त में से एक वाक़िआ़ इमाम बुसैरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का है। तीनों बच्चों ने एक साथ कहा : उन का "क़सीदा ए बुर्दा" तो बहुत मश्हूर है हमारे स्कूल में रोज़ाना पढ़ाया जाता है।

مَوْلَایَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِماً اَبَداً عَلٰی حَبِیْبِكَ خَیْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

दादाजान ने कहा : मगर बच्चो ! इस क़सीदे का एक बड़ा ही प्यारा वाक़िआ़ भी है :

हुवा यूं कि इमाम बुसैरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक मरतबा सख़्त बीमार हो गए और उन के जिस्म का आधा हिस्सा बिल्कुल बेकार हो गया, वोह काफ़ी परेशान थे।

एक दिन उन्हों ने बीमारी की हालत में येह क़सीदा लिखा और उस क़सीदे में **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मदद चाही। जब क़सीदा मुकम्मल हो गया तो वोह सो गए, ख़्वाब में प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा, और देखा कि आप नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने वोही क़सीदा पढ़ रहे हैं, क़सीदा सुनने के बाद नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के जिस्म पर अपना मुबारक हाथ फेरा और अपनी चादर डाल दी। जब उन की आंख खुली तो वोह बिलकुल ठीक हो चुके थे और जो चादर डाली थी वोह भी मौजूद थी।

आप को पता है कि येह वाक़िआ़ कब का है ?

कब का है दादाजान ? ख़ुबैब ने फ़ौरन पूछा।

प्यारे बच्चो ! येह वाक़िआ़ हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने के तक़रीबन 600 साल बाद का है।[2]

ख़ुबैब ने ह़ैरत से कहा : दादाजान ! न कोई दवाई ली न ही इन्जेक्शन लगाया सिर्फ़ ख़्वाब में हाथ फेरने से कैसे ठीक हो गए ? दादाजान ने मुस्कुराते हुवे कहा : येही तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कमाल है। जो चीज़ें आज ऑप्रेशन से ठीक होती हैं रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिर्फ़ हाथ फेर कर ठीक कर दिया करते थे।

उम्मे ह़बीबा बोली : ऐसा कोई वाक़िआ़ सुनाइए, दादाजान ने कहा : बच्चों अभी आप लोग अपना होम वर्क कीजिए बाद में वाक़िआ़त भी सुना दूंगा। येह केहते हुवे दादाजान अपने कमरे में चले गए।

(1) بخاری، 1/62، حدیث:119 (2) عصیدۃ الشہدۃ شرح قصیدۃ البردہ، ص37، کشف الظنون، 2/1331، 1332

हुरूफ़ मिलाइए !

प्यारे बच्चो ! हम सब को **अल्लाह** पाक ने पैदा किया है। **अल्लाह** पाक ही हम सब को देता है। जब हमारी त़बीअ़त ख़राब होती है तो **अल्लाह** पाक ही हमें शिफ़ा अ़त़ा करता है। सारी दुन्या उसी के कन्ट्रोल में है, उस की मर्ज़ी के बग़ैर कोई कुछ भी नहीं कर सकता। हमारे प्यारे **अल्लाह** पाक के बहुत सारे नाम हैं जैसे **अल्लाह**, रह़मान, रह़ीम, सत्तार, ग़फ़्फ़ार, ख़ालिक़, मालिक और येह नाम इतने हैं कि हम गिन भी नहीं सकते।

आप ने नक़्शे में बताए हुवे त़रीक़े के मुत़ाबिक़ हुरूफ़ मिला कर 6 नाम तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "**अल्लाह**" तलाश कर के दिखाया गया है। अब येह नाम तलाश कीजिए :

सिर्फ़ इन दो सम्तों में तलाश करें

ق	و	ع	ر	ت	ہ	ی	ئ	ے
ھ	ج	ک	م	ا	ل	س	ل	پ
ع	ذ	ن	ط	چ	ق	ض	خ	ھ
ز	ژ	ہ	ل	ل	ا	ڑ	ہ	گ
ی	ف	ا	ش	ب	د	ٹ	ا	ف
ز	ث	ق	ا	ز	ر	ظ	د	د
آ	ظ	ھ	ہ	ث	ح	ض	ی	س
ص	ز	ش	چ	ط	ب	ن	م	ا

1 قادِر 2 شافی 3 ہادی 4 سَلام 5 عزیز 6 رَزّاق۔

(1) क़ादिर (2) शाफ़ी (3) हादी (4) सलाम (5) अ़ज़ीज़ (6) रज़्ज़ाक़।



गाऊं की सैर

मौलाना हैदर अ़ली मदनी

(क़िस्त : 1)

दोपहर के खाने पर नन्हे मियां ने ख़ुशी से अपनी गर्मी की छुट्टियों का एलान किया तो मामूंजान बोले : बाजी ! फिर हम कल ही रवाना हो जाते हैं।

अम्मीजान बोलीं : जैसे आप मुनासिब समझें। अम्मीजान की बात ख़त्म हुई तो नन्हे मियां बोले : कहां जाना है अम्मीजान ?

अम्मीजान के बजाए मामूंजान बोले : हम आप को अपने गाऊं ले जा रहे हैं नन्हे मियां ! येह सुन कर तो नन्हे मियां की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा, खाना भूल चुके थे। रात में भी नानी अम्मां के घर जाने की ख़ुशी में बड़ी मुश्किल से नन्हे मियां को नींद आई और ख़्वाब में भी गाऊं, लेहलहाती फ़सलों वाले खेत, ट्यूब वेल जो कुछ आज तक उर्दू की किताब में पढ़ा था सब कुछ देखते रहे।

अगले रोज़ फ़ज्र की नमाज़ के बाद सब ने नाश्ता किया, अम्मीजान ने सफ़री बेग रात ही तैयार कर दिए थे, नाश्ते के बाद सब नहा धो कर तैयार हुवे तब तक अब्बूजान रिक्शा ले आए थे, दादी अम्मां से सलाम और दुआ़एं ले कर नन्हे मियां, अम्मीजान और मामूंजान के साथ घर से रवाना हो गए।

बरोड़ा से मुंबई जाने वाली सुपर फ़ास्ट ट्रेन प्लेट फ़ॉर्म नम्बर 1 पर आ रही है ! एलान सुन कर कुली अपने अपने मुसाफ़िरों के सामान को सर पर लादना शुरूअ़ हो गए, माओं ने बच्चों को पटड़ी की त़रफ़ जाने से रोकने के लिए उन के हाथ पकड़ लिए, इतने में मामूंजान पानी, ज्यूस, फल और निमको ले आए और अम्मीजान को पकड़ा कर भारी बेग ख़ुद उठा लिए और कहा : बाजी हमारी कोच नम्बर 4 है, आप मेरे पीछे पीछे आ जाएं।

रेल गाड़ी में अपनी बर्थ पर पहुंच कर नन्हे मियां और अम्मीजान तो बैठ गए जब कि मामूंजान ने दोनों बेग त़रीक़े से बर्थों के नीचे रख दिए ताकि दूसरी सवारियों के बेग भी नीचे ही आ सकें। अम्मीजान ने नन्हे मियां को पेहले सफ़र की दुआ़ और फिर सूरतुल कुरैश पढ़ाई, इतने में ट्रेन की व्हिसल सुनाई दी तो मामूंजान ने बताया कि येह रेल गाड़ी चलने की निशानी है नन्हे मियां अब आप ने हाथ खिड़की से बाहर नहीं निकालना। शेहर से बाहर निकलते ही ट्रेन की स्पीड तेज़ हुई तो नन्हे मियां बाहर देखते हुवे बोले : अम्मी जान ! देखें घर, दरख़्त सब कैसे पीछे की त़रफ़ दौड़ रहे हैं। जी बेटा, येह लो ज्यूस पी लो। बातें करते, खाते पीते सुरत आ गया तो नन्हे मियां बोले : मामूंजान ! और कितनी देर है हमारा गाऊं आने में ?

मामूंजान जो चाए पी रहे थे बोले : बस नन्हे मियां चार स्टेशन बाद हमारा स्टॉप आ जाएगा। आएं आप को ट्रेन घुमाते हैं। मामूंजान ने नन्हे मियां की उंगली पकड़ी और चल

पड़े, एक जगह लिखा था : बिला ज़रूरत ज़न्जीर खींचने वाले को जुर्माना अदा करना पड़ेगा।

नन्हे मियां : मामूंजान ! येह क्यूं लिखा है ?

मामूंजान बोले : बेटा किसी इमरजन्सी की सूरत में रेल गाड़ी रोकने के लिए एक ज़न्जीर लगी होती है, अलबत्ता कोई शरारतन न खींच दे इस लिए येह नोटिस लिख कर लगाया गया है।

वापस आ कर नन्हे मियां तो ऊपर वाली बर्थ पर सो गए और अम्मी जान अपने भाई के साथ बातें करने लगीं। पांच घन्टे बाद अम्मी जान ने उठाया, नन्हे मियां ! हम अपने स्टेशन पहुंचने वाले हैं, उठ जाएं। नन्हे मियां आंखें मलते उठे तो मामूंजान ने उन्हें पकड़ कर नीचे उतार लिया और अम्मीजान उन का मुंह धुलाने ले गईं। वापस आ कर बैठें तो ट्रेन वापी स्टेशन में दाख़िल हो चुकी थी और प्लेटफ़ॉर्म पर कुली इस के साथ साथ भाग रहे थे। मामूंजान ने दोनों बेग संभाल लिए थे और अम्मीजान ने नन्हे मियां का हाथ पकड़ लिया, रेल गाड़ी से नीचे उतरते ही सामने छोटे मामूं नज़र आ गए और क़रीब आ कर सलाम करने के बाद बोले : आहा, हमारे नन्हे मियां हम से मिलने आए हैं और साथ ही उन्हें उठा कर गले से लगा लिया। बाक़ी सब से मिल कर उन्हों ने बड़े भाई जान से एक बेग ले लिया और बोले : बाजी आ जाएं, बाहर गाड़ी खड़ी है गाऊं हम उसी पर जाएंगे।

प्यारे बच्चो ! नन्हे मियां ने गाऊं में क्या देखा, इस के लिए आप को अगली क़िस्त का इन्तेज़ार करना पड़ेगा।

तलफ़्फ़ुज़ दुरुस्त कीजिए !

ग़लत तलफ़्फ़ुज़	सहीह तलफ़्फ़ुज़
अक़्दाम	इक़्दाम
इन्तफ़ाअ/इन्त्फ़ाअ/अन्तफ़ाअ	इन्तिफ़ाअ
मुबतिला	मुब्तला
तदब्बर	तदब्बुर
अफ़ादा	इफ़ादा

(उर्दू लुग़त, जिल्द 1, 5, 17)

क्या आप जानते हैं ?

मौलाना आसिफ़ जहानज़ेब अत्तारी मदनी

सवाल : प्यारे आका صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वालिदा ए माजिदा का मज़ार शरीफ़ कहां है ?

जवाब : मक्के और मदीने के दरमियान ''अबवा'' नामी मक़ाम पर। (الروض الانف، 3/213)

(मिरआतुल मनाजीह, 2 / 523)

सवाल : वोह कौन से सहाबी हैं जो पेहले यहूदी आलिम थे और इस्लाम लाने के बाद उन्हें वही लिखने का एज़ाज़ हासिल हुवा ?

जवाब : सहाबी ए रसूल हज़रते सैयदना उबय बिन काब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه। (الاعلام للزرکلی، 1/82)

सवाल : वोह कौन से शहीद हैं जिन की नमाज़े जनाज़ा 70 बार पढ़ी गई ?

जवाब : 70 मरतबा नमाज़े जनाज़ा का येह ख़ास्सा सैयदुश्शुहदा हज़रते सैयदना अमीरे हम्ज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का है। रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जंगे उहुद के शुहदा की नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाते हुवे हर शहीद के साथ हज़रते हम्ज़ा की मैयत को भी शामिल रखा। (طبقات ابن سعد، 2/33)

सवाल : वोह कौन से सहाबी हैं जिन का नाम कुरआने मजीद में आया है ?

जवाब : हज़रते ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه। (پ22، الاحزاب:37)

सवाल : हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज किस सिने हिजरी में अदा फ़रमाया ?

जवाब : 10 हिजरी में। (طبقات ابن سعد، 2/130)

सवाल : हज़रते सैयदना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने जन्नत में कितना अर्सा क़ियाम फ़रमाया ?

जवाब : हज़रते सैयदना आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने जन्नत में 500 साल क़ियाम फ़रमाया। (طبقات ابن سعد، 1/30)



फ़ैज़ाने औलिया

उम्मे मीलाद अ़त्तारिया

अल्लाह पाक के फ़ज़्लो एह़सान से हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ैज़ाने रेह़मत का सिलसिला सह़ाबा ए किराम, ताबेईन व तबए ताबेईन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم और फिर उन के फ़ैज़ याफ़्तगान औलिया ए कामिलीन के ज़रीए जारी ओ सारी है, इन नुफ़ूसे क़ुदसिया के फ़ुयूज़ो बरकात के बाइस हर दौर में ह़क़ की शम्अ़ फ़रोज़ां रही, इन्ही की बदौलत लोगों की ज़ाहिरी ओ बात़िनी इस्लाह़ का सामान होता रहा।

वली किसे केहते हैं ? "अल्लाह के वोह मक़्बूल बन्दे जो उस की ज़ातो सिफ़ात की मारेफ़त रखते हों, उस की इत़ाअ़त व इबादत के पाबन्द रहें, गुनाहों से बचें, उन्हें अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से अपना क़ुर्बे ख़ास अ़त़ा फ़रमाए उन को "औलियाअल्लाह" केहते हैं।"

(बुन्यादी अ़क़ाइद और मालूमाते एहले सुन्नत, सफ़ह़ा 81)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه हमें औलिया ए किराम से निस्बत व अ़क़ीदत है और औलियाअल्लाह की मह़ब्बत दोनों जहां की सआ़दत और रिज़ा ए इलाही पाने का सबब है, इन की बरकत से रब्बे करीम मख़्लूक़ की ह़ाजतें पूरी करता है, इन की दुआ़ओं से मख़्लूक़ फ़ाइदा उठाती है, इन के वसीले से दुआ़ करना क़बूलिय्यत का ज़रीआ़ है, इन की सीरत पर अ़मल कर के सिराते मुस्तक़ीम पर इस्तेक़ामत के साथ चला जा सकता है, इन की पैरवी करने में नजात है नीज़ औलिया ए किराम की सोह़बत पाने वाला अगर बुरा भी हो तो अच्छा बन जाता है जैसा कि मन्क़ूल है : एक चोर रात के वक़्त ह़ज़रते राबिआ़ बसरिया رحمۃُ اللهِ علیها के घर दाख़ल हुवा, उस ने पूरे घर की तलाशी ली लेकिन सिवाए एक लोटे के कोई चीज़ न पाई। आप ने फ़रमाया : अगर तुम होशियार चोर हो तो कोई चीज़ लिए बग़ैर नहीं जाओगे। उस ने कहा : मुझे तो कोई चीज़ नहीं मिली। आप ने फ़रमाया : इस लोटे से वुज़ू कर के कमरे में दाख़िल हो जाओ और दो रकअ़त नमाज़ अदा करो, यहां से कुछ न कुछ ले कर जाओगे। उस ने वुज़ू किया और जब नमाज़ के लिए खड़ा हुवा तो ह़ज़रते राबिआ़ ने यूं दुआ़ की : ऐ मेरे मौला ! येह शख़्स मेरे पास आया लेकिन इस को कुछ न मिला, अब मैं ने इसे तेरी बारगाह में खड़ा कर दिया है, इसे अपने फ़ज़्लो करम से मेह़रूम न करना। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुवा तो उस को इबादत की लज़्ज़त नसीब हुई। चुनान्चे वोह रात के आख़री ह़िस्से तक नमाज़ में मश्ग़ूल रहा। जब सेह़री का वक़्त हुवा तो आप उस के पास तशरीफ़ ले गईं तो उसे ह़ालते सज्दा में पाया। (ह़िकायतें और नसीह़तें, सफ़ह़ा 305 मुलख़्ख़सन)

इस ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत से मालूम हुवा कि औलिया ए किराम की सोह़बत किस क़दर मुफ़ीद है, लेहाज़ा हमें भी चाहिए कि अल्लाह वालों के दामने करम से वाबस्ता रहें, उन की सीरत का मुत़ालआ़ करें नीज़ उन की तस्नीफ़ात व बयानात के ज़रीए उन की बरकात ह़ासिल करें। ह़ज़रते इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर तुम नफ़्स की निगरानी चाहते हो तो मुजाहदा करने वाले मर्दों और औरतों के ह़ालात का मुत़ालआ़ करो ताकि त़बीअ़त भी राग़िब हो और अ़मल का जज़्बा भी पैदा हो।

(इह़याउल उ़लूम, 5/152)



हज़रते उम्मे बिश्र बिन्ते क़ैस

मौलाना अबरार अख़्तरुल क़ादरी

हक़ीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं कि मदीनए मुनव्वरा में जो भी फ़ौत होता येह (वक़्ते विसाल उस के पास आतीं और) उस की मारेफ़त अपने बेटे को सलाम केहला कर भेजती थीं।(7)

आप ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मरज़े विसाल में आप की इयादत करने की सआ़दत ह़ासिल की।(8)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रेह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़ेरत हो।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हज़रते उम्मे बिश्र बिन्ते क़ैस बिन साबित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا उन अन्सारी सह़ाबियात में से हैं जो हिजरते नबवी से पेहले ही इस्लाम ला चुकी थीं, बाज़ ने आप का नाम ख़ुलैसह(1) और बाज़ ने ख़ुलैदह(2) ज़िक्र किया है।

आप का तअ़ल्लुक़ क़बीलए बनी दोहमान से था, आप का पूरा घराना ही अ़ज़मतों का पैकर था, क्यूंकि आप मशहूर सह़ाबी ह़ज़रते बरा बिन मअ़रूर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ज़ौजा थीं। आप को येह एजाज़ भी ह़ासिल है कि आप ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बैअ़ते इस्लाम की और आप से अह़ादीसे करीमा रिवायत कीं।(3)

आप के फ़रज़न्द ने ग़ज़वए बद्र में जामे शहादत नोश किया इस एतेबार से आप को एक शहीद सह़ाबी की वालिदा होने का शरफ़ ह़ासिल हुवा।(4)

सुनने इब्ने माजा में है कि ह़ज़रते उम्मे बिश्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ह़ज़रते कअ़ब बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के विसाल के वक़्त उन के पास आईं और कहा : ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! अगर आप बादे विसाल फ़ुलां (यानी मेरे बेटे) से मिलें तो उन्हें मेरा सलाम केहना, तो ह़ज़रते कअ़ब ने फ़रमाया : ऐ उम्मे बिश्र ! **अल्लाह** पाक तुम्हारी मग़फ़ेरत फ़रमाए हमें भला इस का इख़्तियार कहां ! ह़ज़रते उम्मे बिश्र ने जवाबन कहा : ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या आप ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे नहीं सुना कि मुसलमानों की रूहें सब्ज़ परिन्दों के क़ालिब में जन्नत के दरख़्त से लटकाई जाती हैं। फ़रमाया : हां, आप बोलीं : येह वोही है।(5)

जब कि त़बक़ाते इब्ने सअ़द में है कि ह़ज़रते उम्मे बिश्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने ख़ुद रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया : क्या मरने के बाद मुर्दे एक दूसरे को पेहचानते हैं ? तो ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (मिसाल से समझाते हुवे) फ़रमाया कि नेक रूहें सब्ज़ परिन्दों की त़रह़ जन्नत में रेहती हैं तो जैसे दरख़्तों पर परिन्दे एक दूसरे को पेहचानते हैं इसी त़रह़ वोह भी पेहचानते हैं।(6)

---

(1) الاصابہ، 8/107 (2) طبقات ابن سعد، 8/241 (3) طبقات ابن سعد، 8/241
(4) طبقات ابن سعد، 8/241 (5) ابن ماجہ، 2/196، حدیث: 1449
(6) طبقات ابن سعد، 8/241 (7) مرآۃ المناجیح، 2/459 (8) طبقات ابن سعد، 8/241۔

इस्लाम ने औ़रत को क्या दिया ?

इस्लामी बहनों के लिए

मौलाना आसिफ़ जहांज़ेब अ़त्तारी मदनी

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद से पेहले औ़रतों के साथ किए जाने वाले सुलूक के तसव्वुर से ही बदन पर कपकपी त़ारी हो जाती है। किसी के यहां बेटी की विलादत हो जाती तो ग़म व ग़ुस्से के मारे उस का चेहरा (काला) हो जाता, ग़ुस्से की आग बुझाने और शरमिन्दगी मिटाने के लिए उस नन्ही कली को "**ज़िन्दा ही मसल**" दिया जाता। अगर उसे ज़िन्दा रेहने का मौक़अ़ मिल भी जाता तो वोह ज़िन्दगी भी किसी अ़ज़ाब से कम न होती, जानवरों की त़रह़ मारना पीटना, बदन के आज़ा काट देना, मीरास से मेह़रूम कर देना, पानी के ह़ुसूल के लिए दरियाओं की भेंट चढ़ा देना आ़म सी बात थी। कहीं बाप के मरने के बाद बेटा अपनी ही मां को लोंडी बना लेता, कहीं माले विरासत की त़रह़ उसे भी बांट लिया जाता। ऐसे ज़ुल्मो सितम के बा वुजूद औ़रत एक "नौकरानी" और नफ़्सानी ख़्वाहिशात पूरा करने का "आला" ही समझी जाती। बे बसी के इस आ़लम में लाचार औ़रतों की मदद और उन के ग़मों का मदावा करने वाला कोई न था। बिल आख़िर सालों से जारी ज़ुल्मो सितम की अन्धेरी रात ख़त्म हुई। इस्लाम का सूरज त़ुलूअ़ हुवा, जिस ने इस जेहालत भरे माह़ोल को बदल कर रख दिया।

इस्लाम ने औ़रत को इ़ज़्ज़त व शरफ़ का वोह बुलन्द मक़ाम अ़त़ा किया, जो सिर्फ़ इस्लाम ही का ख़ास्सा है। अगर औ़रत मां है तो उस के क़दमों तले जन्नत रखी। (مسند الشہاب، 1/102، حدیث:119) बेटियों की परवरिश पर यूं फ़रमाया : जिस पर बेटियों की परवरिश का बार पड़ जाए और वोह उन के साथ हुस्ने सुलूक करे तो येह बेटियां उस के लिए जहन्नम से आड़ (यानी रुकावट) बन जाएंगी।

(مسلم، ص1084، حدیث:2629)

अगर औ़रत बेटी, बहन, फूफी, ख़ाला, नानी या दादी है तो इस की कफ़ालत पर फ़रमाया : जिस ने दो बेटियों या दो बहनों या दो ख़ालाओं या दो फूफियों या नानी और दादी की कफ़ालत की तो वोह और मैं जन्नत में यूं होंगे, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शहादत और इस के साथ वाली उंगली को मिलाया।

(معجم کبیر، 22/385، حدیث:959)

अगर औ़रत बीवी है तो उसे उन्स व मह़ब्बत की अ़लामत यूं बनाया कि "तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स से जोड़े बनाए कि उन से आराम पाओ और तुम्हारे आपस में मह़ब्बत और रेह़मत रखी।" (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान, पारह 21, अर्रूम : 21) उन्हें पानी पिलाने पर अज्र की बिशारत इरशाद फ़रमाई। (مجمع الزوائد، 3/300، حدیث:4659)

इन के ह़ुक़ूक़ यूं बताए : "और औ़रतों के लिए भी मर्दों पर शरीअ़त के मुत़ाबिक़ ऐसे ही ह़क़ है जैसा (उन का) औ़रतों पर है।" (तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान, पारह 2, अल बक़रह : 228) "और उन के साथ **अच्छे बरताव** का ह़ुक्म दिया।" (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान, पारह 4, अन्निसा : 19, मुलख़्ख़सन)

इस्लाम ने औ़रतों को जो मक़ामो मर्तबा अ़त़ा किया इस से साफ़ ज़ाहिर है कि इस्लाम औ़रतों का "सब से बड़ा मोह़सिन" है इस लिए औ़रतों को इस्लाम का एह़सान मन्द होने के साथ साथ इस के अह़कामात पर अ़मल करते हुवे ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए।



1

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

मुफ़्ती मुहम्मद क़ासिम अ़त्तारी

शौहर अपने घर में इद्दत न गुज़ारने दे तो ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि मेरे भाई ने अपनी बीवी को त़लाक़ दे कर उसे उस के मैके छोड़ आने का कहा, अपने घर रखने नहीं दिया, तो उस की बीवी दो दिन नीचे देवर के घर पर रही। इस के बाद बीवी के घर वाले उसे अपने साथ ले गए क्यूंकि शौहर उसे दौराने इद्दत अपने घर रेहने नहीं दे रहा। इस सूरत में इद्दत का ख़र्चा शौहर पर लाज़िम होगा या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में मज़कूरा (ज़िक्र की गई) औ़रत की इद्दत का ख़र्चा उस के शौहर पर लाज़िम है।

इस मस्अले की तफ़्सील येह है कि त़लाक़ वाली औ़रत के लिए इद्दत शौहर के घर पर गुज़ारना लाज़िम है और जब वोह शौहर के घर पर इद्दत गुज़ारे, तो उस का नफ़्क़ा यानी ख़र्चा शौहर पर लाज़िम होता है। लेकिन अगर इद्दत मैके में या कहीं और गुज़ारे, तो जब तक शौहर के घर लौट कर नहीं आती, उस वक़्त तक वोह नाशिज़ा यानी नाफ़रमान केहलाती है और शौहर से इद्दत का ख़र्च लेने की ह़क़दार नहीं होती। अलबत्ता अगर शौहर ही उसे घर से निकाल दे और अपने घर इद्दत गुज़ारने न दे, जिस की वज्ह से वोह मजबूर हो कर किसी और जगह इद्दत गुज़ारे, तो इस सूरत में वोह नाफ़रमान नहीं होती और शौहर पर उस की इद्दत का ख़र्चा ब दस्तूर लाज़िम रेहता है और उसे निकालने की वज्ह से शौहर गुनाहगार भी होता है क्यूंकि त़लाक़ वाली औ़रत जब तक इद्दत में हो, तो शौहर पर वाजिब है कि उसे उस मकान में रेहने दे, जिस में औ़रत त़लाक़ से पेहले शौहर के साथ रेहती थी।

याद रहे कि तीन त़लाक़ों के बाद औ़रत मर्द पर ह़राम हो जाती है और अब उस से पर्दे के वोही अह़काम हैं, जो एक अजनबी औ़रत से पर्दा करने के हैं।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बच्चे को दूध पिलाने से वुज़ू का हुक्म

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस बारे में कि अगर इस्लामी बहन दूध पीते बच्चे को अपना दूध पिलाए तो क्या फ़क़त़ दूध पिलाने से उस का वुज़ू टूट जाता है, अगर नहीं टूटता तो क्या वोह दूध पिलाने के बाद उसी वुज़ू से नमाज़ वग़ैरा पढ़ सकती है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

बच्चे को दूध पिलाने की वज्ह से औ़रत का वुज़ू नहीं टूटता, क्यूंकि फ़ुक़हा ए किराम رحمهم الله السلام ने क़ुरआनो ह़दीस की रौशनी में वुज़ू तोड़ने वाली जितनी चीज़ें बयान फ़रमाई हैं, उन में बच्चे को दूध पिलाना शामिल नहीं, लेहाज़ा अगर किसी औ़रत ने बा वुज़ू होने की ह़ालत में बच्चे को अपना दूध पिलाया तो वोह बाद में उसी वुज़ू से नमाज़ वग़ैरा अदा कर सकती है, इस में कोई ह़रज नहीं।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 2

मुफ़्ती अबू मुहम्मद अ़ली असग़र अ़त्तारी मदनी

क्या औ़रत घर की छत पर नमाज़ पढ़ सकती है ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि क्या औ़रत छत पर नमाज़ पढ़ सकती है जैसे नीचे गर्मी है या लाइट गई हुई हो तो छत पर नमाज़ पढ़ ली जाए। इस का क्या हुक्म है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

औ़रत का छत पर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है जबकि बे पर्दगी न हो। मसलन छत पर अगर इतनी ऊंची बाउन्ड्री वॉल है कि खड़े हो कर देखें तो दूसरों के घरों पर नज़र नहीं पड़ती और दूसरों की नज़र भी इस औ़रत पर नहीं पड़ेगी तब तो कोई गुनाह नहीं लेकिन औ़रत का बन्द कमरे में नमाज़ पढ़ना अफ़्ज़ल है।

अबू दावूद शरीफ़ की ह़दीस में है : "عن عبد اللہ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ واٰلہٖ وسلم قال: صلاۃ المراۃ فی بیتھا افضل من صلاتھا فی حجرتھا وصلاتھا فی مخدعھا افضل من صلاتھا فی بیتھا" यानी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : औ़रत का दालान में नमाज़ पढ़ना सेह़न में पढ़ने से बेहतर है और कोठरी में पढ़ना दालान से बेहतर है। (سنن ابی داؤد، 1/96، حدیث: 570)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

इस्लामी बहनों के लिए रोज़े का एक अहम मस्अला

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि एक इस्लामी बहन सेह़री के वक़्त आ़दत के मुत़ाबिक़ 7 दिन में पाक हुई, लेकिन इतना वक़्त नहीं है कि वोह ग़ुस्ल कर सके, तो क्या उस पर रोज़ा रखना लाज़िम होगा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जो इस्लामी बहन सुब्ह़े सादिक़ से पेहले दस दिन से कम में ह़ैज़ से पाक हुई और इतना वक़्त भी नहीं कि सुब्ह़े सादिक़ होने से पेहले ग़ुस्ल कर के, कपड़े पेहन कर अल्लाहु अक्बर केह सकती हो तो उस दिन का रोज़ा रखना उस इस्लामी बहन पर फ़र्ज़ न हुवा। अलबत्ता रोज़ादारों की त़रह़ रेहना उस पर वाजिब है। मसलन खाने पीने से बाज़ रहे।

(बहारे शरीअ़त, 1/382, फ़तावा ख़लीलिया, 1 / 505)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ह़ैज़ की ह़ालत में अज़ान का जवाब देना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि क्या ह़ैज़ की ह़ालत में औ़रत अज़ान का जवाब दे सकती है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जी हां ! जैसा कि सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़ैज़ो निफ़ास वाली औ़रत के मुतअ़ल्लिक़ा अह़काम बयान करते हुवे लिखते हैं : "ऐसी औ़रत को अज़ान का जवाब देना जाइज़ है।"

(बहारे शरीअ़त, 2 / 379)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

घर टूटने से बचाइए !

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

आज कल हमारे मुआ़शरे में घर टूटने यानी त़लाक़ के वाक़िआ़त बढ़ते जा रहे हैं, इस की कई वुजूहात हो सकती हैं और इस में मियां-बीवी की नादानियां भी शामिल हैं । इन नादानियों में तेज़ गुस्सा, कुव्वते बरदाश्त की कमी, बद अख़्लाक़ी, मामूली बातों पर बेह़सो तकरार, लड़ाई झगड़ा और मार पीट वग़ैरा शामिल हैं, इन अस्बाब की वज्ह से बिल आख़िर त़लाक़ तक नौबत पहुंच जाती है । नाचाक़ी की सूरत में बेटी के ग़लती पर होने के बा वुजूद बाज़ वालिदैन अपनी बेटी ही की त़रफ़दारी करते, इसे मज़ीद उकसाते और फिर त़लाक़ के बाद बेटी के घर बैठ जाने की सूरत में ख़ूब पछताते भी हैं । बिलफ़र्ज़ ! अगर मेरी (यानी सगे मदीना की) बेटी मुझ से कहे कि शौहर ने मुझे घर से निकल जाने का केह दिया है, अब मैं क्या करूं ? तो मैं उसे कहूंगा कि शौहर के क़दमों में गिर कर उस से मुआ़फ़ी मांग लो और अपना घर टूटने से बचाओ । इस बात को यूं समझिए कि अगर कोई बाप अपने बेटे को डांट डपट कर के घर से निकल जाने का कहे तो समझदार बेटा अपने बाप से रो रो कर मुआ़फ़ियां ही मांगेगा हरगिज़ घर छोड़ कर नहीं जाएगा । वोह वालिदैन ख़त़ा पर हैं जो शौहर से लड़ कर उस का घर छोड़ कर घर आने वाली बेटी की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करते, शौहर, सास और नन्दों से मज़ीद लड़ने पर उकसाते बल्कि कई अफ़राद को साथ ले कर बेटी के शौहर और सुसराल वालों से लड़ने भी पहुंच जाते हैं । **याद रखिए** ! औ़रत अगर अपने सुसराल में आ़जिज़ी के साथ झुक कर नहीं रहेगी तो उस के लिए अपना घर बसाना मुश्किल हो जाएगा । बसा अवक़ात शादी के बाद शुरूअ़ शुरूअ़ में मसाइल होते हैं लेकिन अगर औ़रत समझदार हो तो आहिस्ता आहिस्ता सुसराल में अपना मक़ाम बना लेती है और फिर एक वक़्त आता है कि पूरे घराने की आंखों की ठन्डक बन जाती है । बसा अवक़ात लड़ाके और बद मआ़श क़िस्म के नौजवान जिन्हें पोलीस की मार भी राहे रास्त पर नहीं ला पाती, समझदार और सलीक़ा शिआ़र बीवी उन्हें शरीफ़ इन्सान बना देती है । औ़रत अगर शुरूअ़ ही से सुसराल में नरमी, ह़िक्मते अ़मली, मुस्कुराहट और गुस्से का जवाब प्यार से देने की तरकीब रखेगी तो اِنْ شَآءَاللّٰه एक दिन आएगा कि येह उसी घर की रानी बनेगी । वैसे भी लड़कों के मुक़ाबले में लड़कियों की पैदाइश की शर्ह ज़्यादा है, लड़की के लिए अच्छा रिश्ता तलाश करना एक मुश्किल काम है और लड़की की शादी पर होने वाले लाखों लाख बल्कि बाज़ अवक़ात करोड़ों रुपिये के अख़राजात उ़मूमन वालिदैन की कमर तोड़ कर रख देते हैं, ऐसे में शादी के चन्द माह या साल बाद शौहर या सुसराल से नाराज़ हो कर लड़की का अपने मैके में यानी वालिदैन के घर बैठ जाना और मामूली बातों पर त़लाक़ का मुत़ालबा करना बरबादी नहीं तो क्या है ? शादी कोई गुडिया गुड्डे का खेल नहीं कि बार बार होता रहे । आज कल कंवारी लड़कियों की शादी बड़ी मुश्किल से होती है तो भला त़लाक़ याफ़्ता औ़रत को बिल ख़ुसूस जबकि उस की औलाद भी हो, मुनासिब रिश्ता कहां से मिलेगा ! जज़्बात में आ कर त़लाक़ लेने और बच्चों समेत मां बाप के घर बैठ जाने वाली लड़की के वालिदैन का रवय्या भी बसा अवक़ात बेटी के साथ कुछ का कुछ हो जाता है और ऐसी लड़की सख़्त टेन्शन का शिकार हो कर रेह जाती है, अब पछताने से क्या मिले क्यूंकि बहुत देर हो चुकी होती है, इस लिए औ़रत को चाहिए कि हर मुमकिन और जाइज़ रास्ता इख़्तियार कर के अपना घर टूटने से बचाए और लड़की के मां-बाप वग़ैरा भी ग़लतियों पर उस की ह़ौसला अफ़्ज़ाई करने के बजाए उसे अपना घर आबाद करने ही का ज़ेहन दें । अगर मेरी कोई मदनी बेटी इस त़रह़ शौहर, सास या नन्दों से लड़ झगड़ कर मैके में जा बैठी है तो उसे मेरी नसीह़त है कि फ़ौरन कोई ह़िक्मते अ़मली ब रूए कार लाए, अपने घर वापस जाए और शौहर, सास वग़ैरा से मुआ़फ़ी मांग कर अपना घर बसाए । शौहर वग़ैरा को भी चाहिए कि औ़रत को न सिर्फ़ मुआ़फ़ करें बल्कि अगर ख़ुद इन्हों ने भी उस पर ज़ुल्म किया हो तो उस से मुआ़फ़ी मांगे । याद रहे ! शौहर का बीवी पर और सास का बहू पर ज़ुल्म करना भी नाजाइज़ो ह़राम और दोज़ख़ में ले जाने वाला काम है । शौहर, बीवी, सुसराल और मैके वाले सब इस बात को याद रखें कि त़लाक़ शैत़ान का प्यारा अ़मल है और मियां बीवी में त़लाक़ के ज़रीए भी शैत़ान मुसलमानों में फूट डलवाता, आपस में लड़वाता और गुनाहों का बाज़ार गर्म करवाता है ।

अल्लाह करीम हर मुसलमान मियां-बीवी को आपस में प्यार मह़ब्बत और इत्तेफ़ाक़ व इत्तेह़ाद से रेहने की तौफ़ीक़ दे और अपनी रेह़मत से जन्नत में भी इन्हें साथ रेहना नसीब फ़रमाए । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

(**नोट :** येह मज़मून 5 अप्रेल 2021 ईसवी को इशा की नमाज़ के बाद होने वाले मदनी मुज़ाकरे की मदद से तैयार कर के और जरूरतन तरमीम कर के, अमीरे एहले सुन्नत को दिखा कर पेश किया जा रहा है ।)

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है